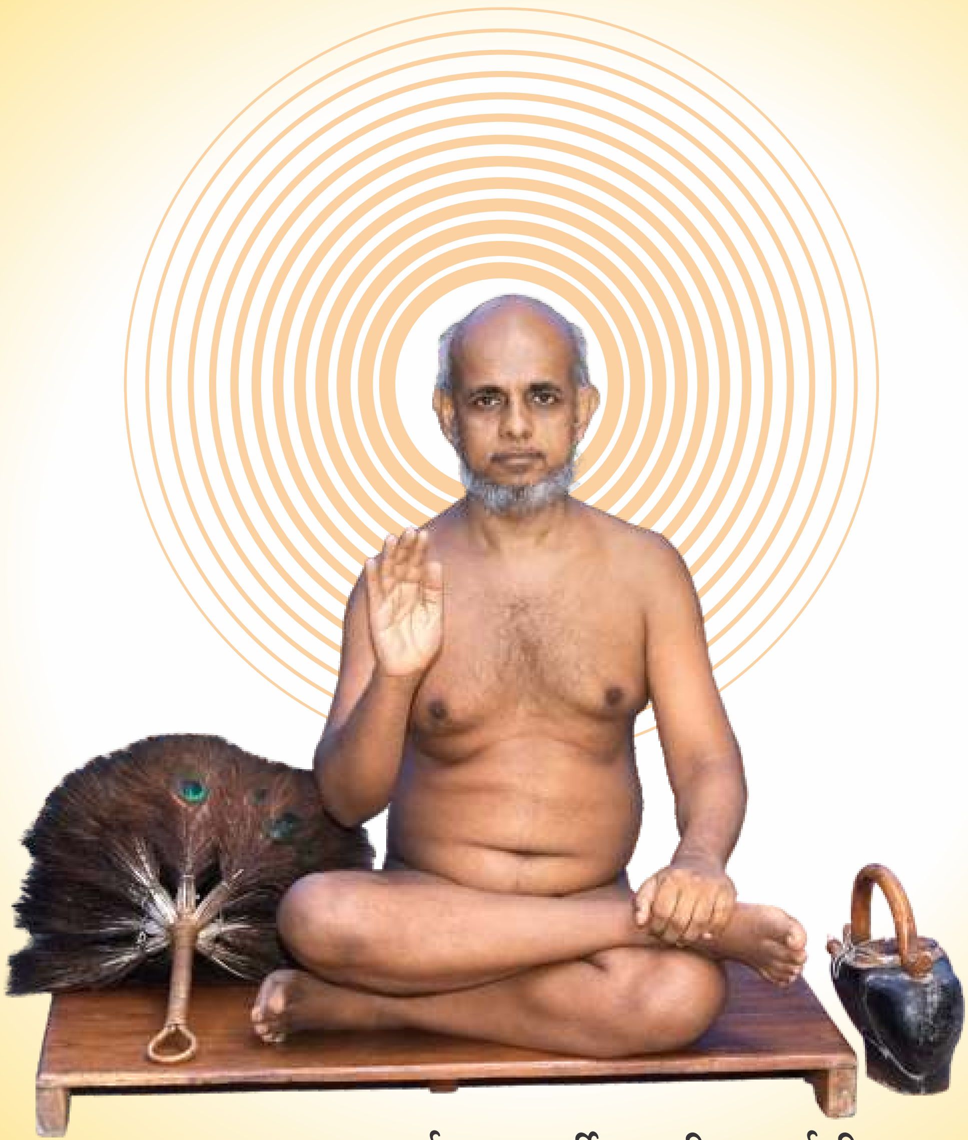

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

# सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

## जिनवाणी-महोत्सव

# सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

# श्री पार्श्वनाथ समवसरण विधान

रचयित्री

पूज्या गणिनी–आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
हस्तिनापुर–मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

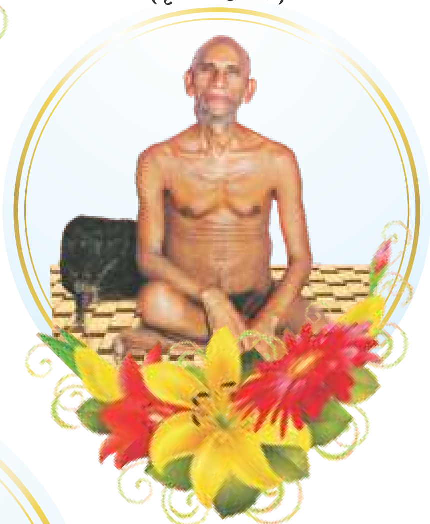

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 290

# श्री पार्श्वनाथ समवसरण विधान

– रचयित्री –

**परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि**

**श्री ज्ञानमती माताजी**

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के
56वें त्याग एवं 74वें जन्मजयंती समारोह
(शरदपूर्णिमा, 26 अक्टूबर 2007) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

**-प्रकाशक-**

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान**

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

**Website : www.jambudweep.org**

**E-mail : ravindrajain@jambudweep.org**

| प्रथम संस्करण | आश्विन शु. पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) | मूल्य |
|---|---|---|
| 2200 प्रति | 26 अक्टूबर 2007 | 20/-रु. |

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित**

**वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला**

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

*-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-*

**परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी**

*-: मार्गदर्शन :-*

**प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी**

*-: निर्देशन :-*

**धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज**

*-: सम्पादक :-*

**कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन**

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

**कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क**

**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

## सम्पादकीय

**–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन**

Our Sacred Books are our light houses erected in the great Sea of time.

"अर्थात् सद्पुस्तकें वह प्रकाशगृह हैं, जो समय के विशाल समुद्र में खड़ी की गई हैं।" आत्मोन्नति के मार्ग में सुसाहित्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में यदि शास्त्र नहीं होते, तो हम आत्मा का अस्तित्व नहीं जान पाते और बिना कर्मसिद्धान्त को समझे चतुर्गतिरूप संसार से अनभिज्ञ ही रहते। शास्त्र तो मानो साक्षात् केवली का स्वरूप हैं। इन्हें पढ़कर हम अपने वर्तमान, भूत, भविष्य को जान रहे हैं और मात्र जान ही नहीं रहे हैं अपितु हेयोपादेय का निर्णय भी कर रहे हैं।

सद्गुरु सर्वत्र उपलब्ध नहीं होते हैं परन्तु सत्साहित्य (शास्त्र) प्रत्येक मंदिर, साहित्य सदन एवं स्वाध्याय भवन में उपलब्ध हो जाता है। सत्साहित्य का उपयोग तभी होता है जब साधक उसका अध्ययन करके उनमें अपना प्रतिबिम्ब देखता है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं शताब्दी में साहित्यिक क्षेत्र में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है। पूज्य माताजी की कलम से एक-दो नहीं बल्कि पच्चीस-तीस वृहत् एवं अनेकों लघु विधानों की रचना हुई है जिनकी आज सम्पूर्ण भारत में धूम मची हुई है इसी शृँखला में भगवान पार्श्वनाथ के 1008 मंत्रों से संयुत यह विधान है। प्रस्तुत विधान को करके आप सभी श्रावकगण अपने मनोरथों की सिद्धि करें, यही मेरी मंगल कामना है।



## प्रस्तावना

**–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)**

आचार्यश्री कुन्दकुन्ददेव ने श्रावकों के षट् आवश्यक कर्तव्यों के बारे में बताते हुए 'दाणं पूजा मुक्खो' दान और पूजा को मुख्य कहा है।

वस्तुतः भक्तिमार्ग में प्रवृत्त प्रत्येक प्राणी निवृत्ति की साधना करता हुआ अपनी चैतन्य स्वरूपी आत्मा को उज्ज्वल कर परमात्म पद की प्राप्ति कर सकता है। श्रावक चूँकि सावद्य से पूर्णरूपेण निवृत्त नहीं हो सकता है अतः वह षट् आवश्यक कर्तव्यों का परिपालन करते हुए आंशिकरूप से अपने पाप कर्मों की निर्जरा करता है। इन षट्आवश्यक कर्तव्यों में देवपूजा के अन्तर्गत परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की साहित्यिक लेखनी द्वारा रचित अनेकों वृहद् एवं लघु विधानों का आयोजन कर भक्तगण मनोवांछित कार्य की सिद्धि के साथ आत्मा में विशेष विशुद्धि उत्पन्न कर पुण्यसंचय भी करते हैं। आज भौतिक चकाचौंध में फंसा हुआ प्राणी आत्मशांति एवं कार्यसिद्धि हेतु नाना प्रकार से मिथ्यात्व की शरण लेता है लेकिन जब सद्गुरुओं का समागम एवं सम्बोधन प्राप्त होता है तब सज्ज्ञान को प्राप्त कर इन महाविधानों का आयोजन कर अपूर्व आत्मिक शांति के अनुभव के साथ-साथ मनवांछित फल की भी प्राप्ति करता है। वास्तव में आगमविधि से किया गया लघु विधान भी विशेष चमत्कारिक फल को प्रदान कर देता है। अतिशायि फल को प्रदान करने वाले अनेकों लघु एवं वृहद् विधानों की शृँखला में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के श्रीचरणों में समर्पित है 1008 मंत्रों से समन्वित यह "श्री पार्श्वनाथ समवसरण विधान"।

क्षमा के अवतार भगवान पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी नगरी में हुआ। अयोध्या के राजा जयसेन द्वारा भेजे गए दूत से अयोध्या का वर्णन सुनते-सुनते उन्हें वैराग्य हो गया और बालब्रह्मचारी उन प्रभुवर ने पौष कृष्णा एकादशी तिथि में 'सिद्धं नमः' कहकर दीक्षा धारणकर ली। तब दशभव पूर्व के वैरी कमठ के जीव ने संवर देव की पर्याय में उनके ऊपर अकारणिक घोर उपसर्ग किया और सदैव क्षमा की मूर्ति रहे भगवान पार्श्वनाथ ने उन उपसर्गों को सहन कर अपनी आत्मा को ऊर्ध्वगामी बना लिया। धरणेन्द्र और पद्मावती ने भी अपने उपकार का बदला चुकाते हुए प्रभु को मस्तक पर धारण कर ऊपर से फण का छत्र लगा लिया और भगवान पार्श्वनाथ ने ध्यानमग्न हो चार घातिया कर्मों का नाश कर

दिव्य केवलज्ञान को प्राप्त किया। जिस स्थल पर भगवान को केवलज्ञान हुआ वह स्थल कहलाया 'अहिच्छत्र'। भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति होते ही इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने आकर समवसरण की रचना कर दी और भगवान उसमें चार हाथ अधर विराजमान हो गये और भव्यों को दिव्य उपदेश का पान कराया। उस समवसरण की ऐसी महिमा है, कहा है-

**योजन शत इक में सुभिख, गगन-गमन मुख चार।**
**नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार।।**
**सब विद्या ईश्वरपनो, नाहिं बढ़ें नख-केश।**
**अनिमिष दृग छाया रहित, दस केवल के वेष।।**

उस समवसरण में आकर संवर जैसे अभिमानी देव का भी मान गलित हो गया और उसने भी सम्यक्त्व को ग्रहण कर लिया। भगवान को निर्वाण पद की प्राप्ति सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र से हुई थी। क्षमासहिष्णु उन प्रभुवर को आज विघ्नहरण, संकटहर्ता आदि अनेक नामों से जाना जाता है। वस्तुतः ऐसे महामना प्रभुवर की पूजा, भक्ति से अनेक मनोरथों की सिद्धि हो जाए तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है, भक्ति में निकले हुए शब्द तो असाध्य रोगों व अकालमृत्यु को टालने में भी सक्षम होते हैं।

पूज्य माताजी द्वारा रचित इस विधान में सर्वप्रथम पार्श्वनाथ वंदना है जिसमें पार्श्वनाथ भगवान के पंचकल्याणक की तिथियाँ, माता-पिता, जन्मनगरी, शरीर की अवगाहना, वर्ण, आयु आदि का वर्णन है। समवसरण पूजन के पश्चात् मानस्तंभ के चार अर्घ्य, समवसरण की आठों भूमियों के अर्घ्य, तीनों कटनियों के अर्घ्य, तीर्थंकर भगवान के 46 गुणों (जन्म के 10 अतिशय, केवलज्ञान के 10 अतिशय और देवकृत 14 अतिशय) को अर्घ्य के माध्यम से बताया है। पुनः आठ प्रातिहार्य, चार अनंत चतुष्टय आदि के वर्णन के साथ समवसरण में विराजमान गणधर, मुनि, आर्यिका आदि के अर्घ्य व पंचकल्याणक के भी अर्घ्य हैं। इन सभी अर्घ्यों के पश्चात् भगवान के 1008 नामों के 1008 अर्घ्य हैं। इस प्रकार इसमें कुल 1096 अर्घ्य और 18 पूर्णार्घ्य हैं।

जयमाला में तो समवसरण का विस्तृत वर्णन समवसरण की जानकारी हमें सहज ही प्राप्त करा देता है। गागर में सागर के समान ऐसे अनुपमेय विधान को करके आप सब मनवांछित फल की प्राप्ति के साथ प्रभु भक्ति के द्वारा अपनी आत्मा को पवित्र बनावें, यही शुभेच्छा है।



## पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकशिरोमणि

# श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

**—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

**जन्मस्थान** : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
**जन्मतिथि** : आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा)
वि. सं. 1991 (22 अक्टूबर सन् 1934)
**गृहस्थ का नाम** : कु. मैना
**माता-पिता** : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
**आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग** : ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
**क्षुल्लिका दीक्षा** : चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
**आर्यिका दीक्षा** : वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

**साहित्यिक कृतित्व** : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

**तीर्थ निर्माण प्रेरणा** : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

**महोत्सव प्रेरणा** : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

**शैक्षणिक प्रेरणा** : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

**रथ प्रवर्तन प्रेरणा** : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

*इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।*

# प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जीवन दर्शन

**–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर**

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म भारतवर्ष के उत्तरप्रदेश की अयोध्यानगरी के महाराजा नाभिराय की महारानी मरुदेवी की पवित्र कुक्षि से चैत्र कृष्णा नवमी को हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, इक्ष्वाकुवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, बैल चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान के शरीर की अवगाहना दो हजार हाथ एवं आयु चौरासी लाख पूर्व वर्ष की थी। भगवान ऋषभदेव ने कर्मभूमि की आदि में प्रजा को असि, मसि आदि षट्क्रियाओं द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई थी सम्पूर्ण विद्याओं और कलाओं के जनक भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा नवमी की शुभ तिथि में प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर घोर तपश्चरण किया पुनः मुनिपरम्परा को जीवन्त करने हेतु आहारार्थ निकले। 1 वर्ष 39 दिन के पश्चात् उनका प्रथम आहार हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस के यहाँ इक्षुरस का हुआ। प्रयाग के पुरिमतालपुर उद्यान में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृष्णा ग्यारस को उन्हें दिव्यकेवलज्ञान की प्राप्ति हुई, उनके समवसरण में श्रीवृषभसेन आदि 84 गणधर, 84 हजार मुनि, गणिनी ब्राह्मी आर्यिका सहित 350000 आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक, 5 लाख श्राविकाएँ थे। उनके जिनशासन यक्ष गोमुख देव एवं यक्षी चक्रेश्वरी देवी हैं। आयु के अंत में उन्होंने माघ कृष्णा चौदस को कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

# चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जीवन दर्शन

वर्तमान से 2605 वर्ष पूर्व चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म भारतवर्ष के बिहार प्रांत में कुण्डलपुर (जि.-नालंदा) नगरी में महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की पवित्र कुक्षि से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की पवित्र तिथि में हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, नाथवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, सिंह चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान के शरीर की अवगाहना सात हाथ एवं आयु 72 वर्ष की थी। 30 वर्ष की उम्र में अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाले भगवान महावीर ने षण्डवन में सालवृक्ष के नीचे मगशिर कृष्णा दशमी तिथि में दीक्षा ग्रहण की। उनका प्रथम आहार कूल ग्राम के राजा वकुल (अपर नाम कूल) के द्वारा खीर का हुआ तथा विशेष आहार कौशाम्बी में महासती चंदना द्वारा खीर का हुआ। भगवान महावीर को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति ज्ञातृषण्डवन में वैशाख शुक्ल दशमी को ऋजुकूला नदी के तट पर हुई, उनके समवसरण में श्री इन्द्रभूति आदि 11 गणधर, 14 हजार मुनि, गणिनी आर्यिका चन्दना सहित छत्तीस हजार आर्यिकाएँ, 1 लाख श्रावक व 3 लाख श्राविकाएं थीं। उनकी दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा एकम को खिरी और कार्तिक कृष्णा अमावस्या को अज से 2532 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त स्थित पावापुरी से मोक्ष पद प्राप्त किया। भगवान महावीर के वीर, वर्द्धमान, महावीर, सन्मति, अतिवीर ये पाँच नाम प्रसिद्ध हैं।



**पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा उत्तरपुराण के आधार से प्रस्तुत भगवान पार्श्वनाथ के इस प्रामाणिक जीवन दर्शन को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करवाकर तीर्थों एवं मंदिरों में लगवायें।**

# तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जीवन दर्शन

**-गणिनी ज्ञानमती**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **जन्मभूमि** | **–वाराणसी (उत्तर प्रदेश)** | | |
| **पिता** | –महाराजा अश्वसेन | **माता** | –महारानी वामादेवी (ब्राह्मी) |
| **वर्ण** | –क्षत्रिय | **वंश** | –उग्रवंश |
| **देहवर्ण** | –मरकतमणि सदृश (हरा) | **चिन्ह** | –सर्प |
| **आयु** | –सौ वर्ष | **अवगाहना** | –नौ हाथ |
| **गर्भ** | –वैशाख कृ. 2 | **जन्म** | –पौष कृ. 11 |
| **तप** | –पौष कृ. 11 | | |
| **दीक्षा वन एवं वृक्ष** | –अश्ववन एवं देवदारूवृक्ष | | |
| **प्रथम आहार** | –गुल्मखेट नगर के राजा धन्य द्वारा (खीर) | | |
| **केवलज्ञान स्थल** | –अहिच्छत्र | **केवलज्ञान** | –चैत्र कृ. 4 (14) |
| **मोक्ष** | –श्रावण शु. 7 | **मोक्षस्थल** | –सम्मेद शिखर पर्वत |
| **समवसरण में गणधर** | –श्री स्वयंभू आदि 10 | **मुनि** | –सोलह हजार |
| **गणिनी** | –आर्यिका सुलोचना | **आर्यिका** | –छत्तीस हजार |
| **श्रावक** | –एक लाख | **श्राविका** | –तीन लाख |
| **जिनशासन यक्ष** | –धरणेन्द्र देव | **यक्षी** | –पद्मावती देवी |

भगवान पार्श्वनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2533 से 2783 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

***अर्घ्य-आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ.......***

**आओ हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।**
**जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।वंदे जिनवरम्-4।।**
**जलगंधादिक अर्घ्य सजाकर, जिनवर चरण चढ़ा करके।**
**रत्नत्रय युत 'ज्ञानमती' कर, बसूँ मोक्ष में जा करके।।**
**इसी हेतु त्रिभुवन जनता भी, भक्ति करे भगवान की।**
**जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।वंदे जिनवरम्-4।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

**—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर**

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे।हैं

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ एवं स्वर्णिम तेरहद्वीप जिनालय।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी, मिनी ट्रेन, झूलें आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिनभर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य तीर्थों के दर्शन हेतु कम से कम एक बार अवश्य पधारें।



# वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी 19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली

# वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली

# भगवान पार्श्वनाथ की जन्म, केवलज्ञान एवं निर्वाणभूमि का परिचय

**लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती**

काशी और वाराणसी नाम से प्रख्यात बनारस नगरी कर्मभूमि के प्रारंभ में ही इन्द्र के द्वारा बसाई गई थी। यहाँ सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ तथा तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के (जन्म तथा उन दोनों के क्रमशः) चार एवं तीन कल्याणक हुए हैं। जब वहाँ के महाराजा सुप्रतिष्ठ अपनी 'पृथ्वीषेणा' नामक महारानी के साथ राज्य कर रहे थे तब सुपार्श्वनाथ के गर्भ में आने के छह माह पूर्व से लेकर जन्म होने तक कुबेर ने लगातार पन्द्रह माह तक रानी "पृथ्वीषेणा" के महल में रत्नों की वर्षा की थी। वे भादों सुदी षष्ठी तिथि को माता के गर्भ में आए तथा ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी के दिन विशाखा नक्षत्र में उनका जन्म हुआ। पुनः जन्मतिथि में उन्होंने दीक्षा धारण की एवं फाल्गुन कृ. षष्ठी में उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था। सम्मेदशिखर पर्वत से भगवान सुपार्श्वनाथ ने फाल्गुन कृ. सप्तमी को निर्वाण प्राप्त किया था। इनके शरीर की ऊँचाई 9 हाथ थी, वर्ण हरा था।

इसके पश्चात् भगवान पार्श्वनाथ के संबंध में वर्णन है कि–

भगवान पार्श्वनाथ वाराणसी नगरी में पिता अश्वसेन और माता वम्मिला (वामा) से पौष कृष्णा एकादशी के दिन उत्पन्न हुए। उत्तर पुराण में इनकी माता का नाम ब्राह्मी भी आया है। तीर्थंकर पार्श्वकुमार ने विवाह नहीं किया था, तीस वर्ष की अवस्था में एक दिन राजसभा में अयोध्यानरेश जयसेन के दूत द्वारा भगवान ऋषभदेव का चरित्र सुनते-सुनते उन्हें वैराग्य हो गया था तब उन्होंने अश्ववन में जाकर जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। उन्होंने पौष कृ. 11 तिथि को दीक्षा ली एवं शंबर नामक ज्योतिषी देव (कमठ नामक पूर्व भव का वैरी) के दारुण उपसर्गों को सहनकर चैत्र कृ. चतुर्थी[1] तिथि को अहिच्छत्र में केवलज्ञान प्राप्त किया तथा श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन सम्मेदशिखर पर्वत से मोक्षधाम को पधारे हैं। उनके बाद सम्मेदशिखर पर्वत से किसी भी तीर्थंकर ने मोक्ष की प्राप्ति नहीं की है अतःवह पर्वत वर्तमान में "पारसनाथ हिल" के नाम से जाना जाता है।

वर्तमान में बनारस नगरी हिन्दुओं के तीर्थधाम से अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त है किन्तु प्राचीन इतिहास देखने पर ज्ञात होता है कि जिनधर्म की प्रभावना के अनेक कथानक यहाँ से जुड़े हुए हैं। सर्वप्रथम काशीनरेश अकम्पन ने अपनी पुत्री "सुलोचना" का स्वयंवर रचकर इस धरती पर स्वयंवर प्रथा प्रारंभ की थी। हस्तिनापुर के



राजकुमार तथा सम्राट् भरत के प्रमुख सेनापति जयकुमार के गले में वरमाला डालकर सुलोचना ने कन्याओं को कुल परंपरा का ध्यान रखते हुए स्वाधीनता-पूर्वक अपना पति चुनने का इतिहास बनाकर कन्याओं की महत्ता प्रदर्शित की थी।

एक अन्य पौराणिक उल्लेख के अनुसार भगवान मल्लिनाथ के तीर्थ में नौंवे चक्रवर्ती "पद्म" का जन्म बनारस में हुआ था। तब उन्होंने चक्ररत्न के द्वारा छह खंड को जीतकर बनारस को ही अपनी राजधानी बनाया था।

इसके पश्चात् यहाँ इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना घटी थी, वह थी समंतभद्र की। कथानक आता है कि समंतभद्र जी को मुनि अवस्था में भस्मक व्याधि हो गई थी जिसकी उपशांति के लिए उन्होंने गुरु आज्ञा से मुनिवेष का परित्याग कर दक्षिण भारत से उत्तर की बनारस नगरी में आकर एक शिवमंदिर में शिवजी की प्रतिमा को साक्षात् नैवेद्य खिलाने की बात कही थी। उस समय वाराणसी के राजा शिवकोटि थे। उन्हें एक बार मंदिर के पुजारियों से ज्ञात हुआ कि समंतभद्र महादेव जी के भोग का सारा नैवेद्य स्वयं खाते हैं। तब राजा को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने समन्तभद्र से शिवपिण्डी के समक्ष गलती स्वीकार करके नमस्कार करने को कहा। समन्तभद्र की भस्मक व्याधि तब तक शान्त हो चुकी थी, उन्होंने भावपूर्वक चौबीसों तीर्थंकर की स्तुति रचना करके उसे पढ़ना शुरू कर दिया। जब वे भगवान चन्द्रप्रभु की स्तुति पढ़ रहे थे तभी शिवपिण्डी फट गई और चन्द्रप्रभ की प्रतिमा उसमें से प्रगट हो गई। यह चमत्कार देखकर राजा शिवकोटि भी उनके अनुयायी बन गए। समन्तभद्र ने पुनः मुनिदीक्षा लेकर स्व-पर कल्याण किया।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि बनारसीदास भी यात्रा के निमित्त काशी में आए थे। उनके लिखे हुए अर्द्धकथानक नामक आत्मचरित ग्रंथ से पता चलता है कि वे व्यापार आदि के सिलसिले में वाराणसी कई बार आते थे।

बनारस के स्थानीय भारत-कला भवन में पुरातत्त्व संबंधी बहुमूल्य सामग्री संग्रहीत है। यहाँ राजघाट तथा अन्य स्थानों पर खुदाई में जो पुरातत्त्व सामग्री उपलब्ध हुई थी, वह इस कला भवन में सुरक्षित है। यह सामग्री विभिन्न युगों से संबंधित है। इसमें पाषाण और धातु की अनेक जैन प्रतिमाएं भी हैं ये कुषाण काल से लेकर मध्यकाल तक की हैं।

बनारस में 'भदैनी जैन घाट' नाम से एक स्थान है जो भगवान सुपार्श्वनाथ का जन्मस्थान माना जाता है। यहाँ आजकल स्याद्वाद महाविद्यालय नामक प्रसिद्ध शिक्षण संस्था है। इस भवन के ऊपर भगवान सुपार्श्वनाथ का मंदिर है। यह गंगा तट पर अवस्थित है, दृश्य अत्यंत सुन्दर है। मंदिर छोटा ही है किन्तु शिखरबद्ध है।

भगवान पार्श्वनाथ का जन्मस्थल वर्तमान के भेलूपुर मोहल्ले को माना जाता

है। उनके जन्मस्थान पर बहुत विशाल सुन्दर मंदिर बना हुआ है। उसी कम्पाउन्ड के भीतर धर्मशाला भी बनी हुई है। जिसमें सभी दिगम्बर जैन बंधुओं के ठहरने की समुचित व्यवस्था है। भेलूपुर में एक और दिगम्बर जैन मंदिर भी है उसमें मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है।

हिन्दुओं की मान्यतानुसार अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, अवन्ति, उज्जयिनी और द्वारका ये सात महापुरियाँ हैं इनमें काशी मुख्य मानी गई है। ''काश्यां हि मरणान्मुक्तिः'' यह हिन्दू शास्त्रों का वाक्य है।

बनारस सहस्रों वर्षों से विद्या का केन्द्र रहा है। यहाँ भारतीय वाङ्मय-दर्शन और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की प्राचीन परम्परा आज तक सुरक्षित है।

दिल्ली से कुण्डलपुर (नालंदा) की ओर संघ के मंगल विहार के मध्य पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 19 नवंबर 2002 को बनारस में पदार्पण हुआ। वहाँ लगभग 1 सप्ताह प्रवास के मध्य ''बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय'' में प्रथम बार जैन साधुओं के मंगल प्रवचन का कार्यक्रम भी हुआ। जिसमें बी.एच.यू. तथा डा. सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपतियों सहित अनेक वरिष्ठ प्रवक्ताओं ने पूज्य माताजी की संस्कृत भाषाजनित प्रतिभाशक्ति का कोटिशः अभिनंदन किया तथा अपने विश्वविद्यालयों में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा प्रदत्त साहित्य को ससम्मान विराजमान किया।

तीर्थंकरद्वय की उस पावन जन्मभूमि वाराणसी तीर्थ को शत-शत नमन।

***भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ –***

अहिच्छत्र उत्तरप्रदेश के बरेली जिले की आँवला तहसील में स्थित है जो आजकल रामनगर का एक भाग है, इसे प्राचीनकाल में संख्यावती नगरी कहा जाता था। तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान कल्याणक भूमि अहिच्छत्र के बारे में आचार्य जिनप्रभू सूरि विरचित 'विविध तीर्थकल्प' के अहिच्छत्र कल्प में लिखा है कि ''संख्यावती नगरी में भगवान पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानारूढ़ थे। पूर्व निबद्ध वैर के कारण असुर कमठ ने उन पर नाना प्रकार के उपसर्ग किये तब नागकुमार देवों के इन्द्र धरणेन्द्र और पद्मावती भगवान द्वारा विगत जन्म में किये गये उपकार का स्मरण कर वहाँ आये और भगवान के ऊपर सहस्र फण फैलाकर उपसर्ग निवारण किया।'' यह वही धरणेन्द्र और पद्मावती थे जिन्हें तापसी नाना महीपाल के द्वारा पंचाग्नि तप हेतु लकड़ी चीरते देखकर भगवान पार्श्वनाथ ने उसमें स्थित नाग-नागिन को जानकर उन्हें न मारने की बात कही थी किन्तु तापसी द्वारा क्रोधावेश में लकड़ी काटते ही भीतर रहने वाले सर्प-सर्पिणी के दो टुकड़े हो गए तब परम करुणाशील पार्श्वप्रभु ने असह्य वेदना में तड़पते हुए उन सर्प-सर्पिणी को णमोकार मंत्र सुनाया और मंत्र के फलस्वरूप शांत भाव से मरकर वे ही धरणेन्द्र-पद्मावती हुए।



जैनेश्वरी दीक्षा लेने के पश्चात् जब भगवान पार्श्वनाथ घोर उपसर्ग में लीन थे तब इन धरणेन्द्र-पद्मावती के द्वारा उपसर्ग दूर करते ही उनको केवलज्ञान उत्पन्न हो गया, वह तिथि चैत्र कृष्णा चतुर्थी थी (उत्तर पुराण के अनुसार यह तिथि चैत्र कृष्णा चतुर्दशी है), तब इन्द्रों और देवों ने आकर भगवान के केवलज्ञान कल्याणक की पूजा की। इधर वह संवर देव भी प्रभु के चरणों में गिर पड़ा और भगवान से बार-बार क्षमायाचना करने लगा, पश्चात् इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने समवसरण की रचना कर दी और प्रभु का प्रथम जगत कल्याणकारी उपदेश वहाँ पर हुआ। नागेन्द्र द्वारा भगवान के ऊपर छत्र लगाया गया था, इस कारण इस स्थान का नाम संख्यावती के स्थान पर अहिच्छत्र हो गया।

***ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व –***

क्षेत्र पर एक प्राचीन शिखरबंद मंदिर है उसमें पार्श्वनाथ भगवान की तिखाल वाले बाबा की मूर्ति है। वह प्रतिमा किसी अदृश्य शक्ति द्वारा बनाई गई तथा मनोकामनापूरक बताई जाती है। पार्श्वनाथ संबंधी घटना का एक सांस्कृतिक महत्त्व भी है जिसने जैन मूर्तिकला को प्रभावित किया है, वह है पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति पर सर्पफण का होना तथा धरणेन्द्र-पद्मावती का उनके भक्त यक्ष-यक्षिणी के रूप में विशेष उल्लिखित करना। क्षेत्र से 2 किमी. दूर एक प्राचीन किला है जो महाभारतकालीन कहा जाता है। किले के निकट ही कटारीखेड़ा नामक टीले से प्राचीन भग्न स्तंभ मिला है जिसे मानस्तंभ कहते हैं। प्राचीन शिखरबंद मंदिर में मूलनायक तिखाल वाले बाबा की प्रतिमा के साथ अनेक नूतन वेदी हैं जिसमें नूतन एवं कुछ वेदियों में प्राचीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। अंतिम पाँचवी वेदी में बूंदी (राज.) में भूगर्भ से प्राप्त चौथी से नवीं शताब्दी के मध्य की प्रतिमाएँ हैं, यहाँ एक समवसरण भी बना हुआ है। मंदिर के निकट ही रामनगर गाँव में एक शिखरबंद मंदिर है जिसमें फणामण्डित श्यामवर्ण पद्मासन पार्श्वनाथ (4 फुट अवगाहना) की मनोज्ञ प्रतिमा है जिस पर पात्रकेशरी की शंका को दूर करने वाला श्लोक भी अंकित है। मंदिर के बाहर उत्तर की ओर पात्रकेशरी के चरण बने हैं। सन् 1993 में अहिच्छत्र तीर्थ में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने मंगल पदार्पण पर क्षेत्र को ''तीस चौबीसी मंदिर'' नामक नूतन कृति निर्माण की प्रेरणा प्रदान की, इस 11 शिखरयुक्त मंदिर में 720 तीर्थंकर प्रतिमाएँ विराजमान हैं मूलनायक खड्गासन प्रतिमा पार्श्वनाथ भगवान की है। मंदिर बनकर पूर्ण हो चुका है जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 2002 में सम्पन्न हो चुकी है। 15 मई 2005 में कुण्डलपुर से हस्तिनापुर विहार के मध्य पूज्य माताजी के अहिच्छत्र मंगल पदार्पण पर उनकी प्रेरणा से आयोजित भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत तिखाल वाले बाबा एवं तीस चौबीसी के 72 भगवान तथा भगवान पार्श्वनाथ का 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक सानन्द सम्पन्न हुआ।

*भगवान पार्श्वनाथ की निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र –*

शाश्वत निर्वाणभूमि तीर्थराज सम्मेदशिखर (पारसनाथ हिल) वर्तमान में झारखण्ड प्रदेश के गिरडीह जिले में स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए रेलवे के कई मार्ग हैं, भारत सरकार द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के नाम से एक ट्रेन भी ''पारसनाथ एक्सप्रेस'' चलाई गई है। पारसनाथ स्टेशन के सामने ही एक फर्लांग की दूरी पर ईसरी में दो दिगम्बर जैन धर्मशालाएँ बनी हुई हैं, एक तेरहपंथी, दूसरी बीसपंथी, दोनों निकट-निकट हैं। दोनों में यात्रियों के निवास हेतु उचित सुविधाएँ हैं।

भगवान पार्श्वनाथ की निर्वाणभूमि शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर से अनंतों मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया है। उत्तरपुराण में वर्णन आया है कि सम्राट सगर चक्रवर्ती ने अपने साठ हजार पुत्रों के साथ सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त किया।

ईसरी से लगभग 22 किमी. पर मधुबन है। मधुबन पर्वत के उत्तरी भाग की ओर है। मधुवन में तेरहपंथी और बीसपंथी दो कोठियाँ अर्थात् धर्मशालाएँ हैं।

पहाड़ पर सर्वप्रथम गौतम स्वामी की टोंक है, टोंक के बाएं हाथ मुड़कर पूर्व दिशा की ओर 15 टोंक (कूट) हैं। इन टोकों में चन्द्रप्रभु टोंक सबसे ऊँची है। अभिनंदनाथ की टोंक से उतरकर जलमंदिर आते हैं, यहाँ एक विशाल मंदिर बना हुआ है, जिसके चारों ओर जल भरा है, पहले इसमें दिगम्बर प्रतिमाएँ थीं, धीरे-धीरे श्वेताम्बरों ने मंदिरपर अपना अधिकार कर लिया है। पुनः पश्चिम दिशा की ओर जाकर नौ टोकों कीवंदना करते हैं। इन टोकों में सबसे ऊँची टोंक पारसनाथ भगवान की है।

सम्मेदशिखर में 25-30 वर्षों में अनेकों नवनिर्माणों के द्वारा भारी विकास हुआ है। क्षेत्र पर समवसरण मंदिर, तीस चौबीसी मंदिर, मध्यलोक रचना, त्रियोग आश्रम, त्यागी-व्रती आश्रम आदि निर्माणों के साथ वहाँ अनेक संस्थाएँ अपने-अपने नवनिर्माण आदि कार्यकलापों के द्वारा सिद्ध-क्षेत्र की गरिमा वृद्धि में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर रही हैं। इस श्रृंखला में पर्वतराज के चौपड़ा कुण्ड पर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर एवं धर्मशाला यात्रियों के लिए विशेष सुविधा प्रदान करते हुए यात्रा के आनंद को द्विगुणित करते हैं।

सन् 2003 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने पावन तीर्थ सम्मेदशिखर पर पधारकर वहाँ के इतिहास में भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा एवं मंदिर निर्माण की प्रेरणा देकर एक नया अध्याय जोड़ दिया, इसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा दिसम्बर 2005 में सम्पन्न हो चुकी है। निश्चित ही यह मनोज्ञ प्रतिमा हर दर्शनार्थी को जैनधर्म की प्राचीनता एवं भगवान आदिनाथ के जीवन को याद कराएगी।

शास्त्रों में शिखर जी की वंदना का फल बताते हुए कहा है कि व्यक्ति इस पर्वत की वंदना करके अधिकतम 49 भव धारण करने के बाद मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। ऐसे पावन सिद्धधाम को शतशः नमन।



# तीर्थंकर पार्श्वनाथ

**लेखिका-गणिनी ज्ञानमती**

इसी जम्बूद्वीप के दक्षिण भरत क्षेत्र में एक सुरम्य नाम का बड़ा भारी देश है। उसके पोदनपुर नगर में अतिशय धर्मात्मा अरविन्द राजा राज्य करते थे। उसी नगर में विश्वभूति ब्राह्मण की अनुन्धरी ब्राह्मणी से उत्पन्न हुए कमठ और मरुभूति नाम के दो पुत्र थे जोकि क्रमशः विष और अमृत से बनाये हुए के समान मालूम पड़ते थे। कमठ की स्त्री का नाम वरुणा तथा मरुभूति की स्त्री का नाम वसुन्धरा था। ये दोनों ही राजा के मन्त्री थे।

एक समय किसी राज्यकार्य से मरुभूति बाहर गया था तब कमठ मरुभूति की स्त्री वसुन्धरा के साथ व्यभिचारी बन गया। राजा अरविंद को यह बात पता चलते ही उन्होंने उस कमठ को दण्डित करके देश से निकाल दिया। वह कमठ भी मानभंग से दुःखी होकर किसी तापस आश्रम में जाकर हाथ में पत्थर की शिला लेकर कुतप करने लगा। भाई के प्रेम के वशीभूत हो मरुभूति भी कमठ को ढूंढ़ता हुआ उधर चल पड़ा। उसे आते देख क्रोध के आवेश में आकर कमठ ने वह हाथ की शिला उसके सिर पर पटक दी जिससे मरुभूति मरकर सल्लकी वन में वज्रघोष नाम का हाथी हो गया।

किसी समय अरविन्द ने विरक्त होकर राज्य छोड़ दिया और संयम धारणकर सब संघ की वंदना के लिये प्रस्थान किया। चलते-चलते वे उसी वन में पहुँचकर सामायिक के समय प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। वह हाथी संघ में हाहाकार करता हुआ अरविन्द महाराज के सन्मुख आकर मारने के लिए दौड़ा, तत्क्षण ही उनके वक्षस्थल में श्री वत्स के चिन्ह को देखते ही उसे पूर्व भव संबंध का स्मरण हो आया तब वह पश्चाताप से शांत होता हुआ चुपचाप खड़ा रहा। अनंतर अरविन्द मुनिराज ने उसे धर्मोपदेश देकर श्रावक के व्रत ग्रहण करा दिये।

उस समय से वह हाथी पाप से डर कर दूसरे हाथियों द्वारा तोड़ी हुई वृक्ष की शाखाओं और सूखे पत्तों को खाने लगा। पत्थरों के गिरने से अथवा हाथियों के समूह के संघटन से जो पानी प्रासुक हो जाता था उसे ही वह पीता था तथा प्रोषधोपवास के बाद पारणा करता था। इस प्रकार चिरकाल तक महान तपश्चरण करता हुआ वह हाथी अत्यन्त दुर्बल हो गया। किसी दिन वह हाथी पानी पीने के लिए वेगवती नदी के किनारे गया और कीचड़ में गिरकर फँस गया, निकल नहीं सका। वहाँ पर दुराचारी कमठ का जीव मरकर कुक्कुट सर्प हुआ था उसने पूर्व वैर के संस्कार से उसे काट खाया जिससे वह हाथी महामंत्र का स्मरण करते हुए मरकर बारहवें स्वर्ग में देव हो गया। इधर वह सर्प पाप से मरकर तीसरे नरक चला गया।

जंबूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में पुष्कलावती देश है उसके विजयार्ध पर्वत पर त्रिलोकोत्तम नगर में राजा विद्युत्गति राज्य करते थे। वह देव का जीव वहाँ से च्युत होकर राजा की विद्युन्माला रानी से रश्मिवेग नाम का पुत्र हो गया। रश्मिवेग ने युवावस्था में समाधिगुप्त मुनिराज के पास दीक्षा लेकर महासर्वतोभद्र आदि श्रेष्ठ उपवास किये। किसी समय हिमगिरि पर्वत की गुफा में योग धारण कर विराजमान थे कि कुक्कुट सर्प का जीव जो नरक से निकल कर अजगर हुआ था उसने निगल लिया। मुनि का जीव मरकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ और कालांतर में अजगर मरकर छठे नरक चला गया।

जंबूद्वीप के पूर्व विदेह सम्बन्धी पद्मादेश में अश्वपुर नगर है। वहाँ के राजा वज्रवीर्य और

रानी विजया के वह स्वर्ग का देव मरकर वज्रनाभि नाम का पुत्र हुआ। वह पुण्यशाली वज्रनाभि चक्रवर्ती के पद का भोक्ता हो गया, अनंतर किसी समय विरक्त होकर साम्राज्य वैभव का त्यागकर क्षेमंकर गुरु के समीप जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। कमठ का जीव, जो कि अजगर की पर्याय में मरकर छठे नरक गया था वह कुरंग नाम का भील हो गया था। किसी दिन तपस्वी चक्रवर्ती वन में आतापन योग में विराजमान थे, उन्हें देखकर उस भील का वैर भड़क उठा, उसने मुनिराज पर भयंकर उपसर्ग किए। मुनिराज आराधनाओं की आराधना से मरण कर मध्यम ग्रैवेयक में श्रेष्ठ अहमिन्द्र हो गए तथा वह पापी भील आयु पूरी करके पाप के भार से पुनः नरक चला गया।

जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में कौशलदेश सम्बन्धी अयोध्या नगरी में काश्यपगोत्री इक्ष्वाकुवंशी राजा वज्रबाहु राज्य करते थे। उनकी रानी प्रभंकरी थी वह अहमिन्द्र च्युत होकर रानी के गर्भ से आनंद नाम का आनंददायी पुत्र हो गया। वह बड़ा होकर मंडलेश्वर राजा हुआ। किसी दिन आनंद राजा ने महामंत्री के कहने से आष्टान्हिक महापूजा कराई जिसे देखने के लिए विपुलमति नाम के मुनिराज पधारे। आनंदराजा ने उनकी वंदना पूजा आदि करके उनसे पूछा कि हे भगवन्! जिनेन्द्र प्रतिमा अचेतन है तो उसकी पूजा से पुण्यबंध कैसे होता है? मुनिराज ने कहा यद्यपि प्रतिमा अचेतन है तो भी महान पुण्य का कारण है जैसे चिंतामणि रत्न, कल्पवृक्ष आदि अचेतन होकर मनचिंतित और मनचाहे फल देते हैं वैसे ही प्रतिमाओं की वंदना पूजा आदि से जो शुभ परिणाम होते हैं उनसे सातिशय पुण्य बंध हो जाता है इत्यादि प्रकार से वीतराग प्रतिमा का वर्णन करते हुए मुनिराज ने राजा के सामने तीन लोक सम्बन्धी अकृत्रिम चैत्यालयों का वर्णन करना शुरू किया। उसमें प्रारम्भ में ही सूर्य के विमान में स्थित जिनमंदिर की विभूति का अच्छी तरह वर्णन किया। उस असाधारण विभूति को सुनकर राजा आनन्द को बहुत ही श्रद्धा हो गई। उस दिन से वह प्रतिदिन हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर सूर्य विमान में स्थित जिनप्रतिमाओं की स्तुति करने लगा। उसने कारीगरों द्वारा मणि और सुवर्ण का एक सूर्य विमान बनवाकर उसके भीतर जिनमन्दिर बनवाया। अनन्तर शास्त्रोक्त विधि से आष्टान्हिक, चतुर्मुख, रथावर्त, सर्वतोभद्र और कल्पवृक्ष इन नाम वाली पूजाओं का 'अनुष्ठान' किया।

"उस राजा को इस तरह सूर्य की पूजा करते देखकर उसकी प्रामाणिकता से अन्य लोग भी स्वयं भक्तिपूर्वक सूर्यमंडल की स्तुति करने लगे। आचार्य कहते हैं कि इस लोक में उसी समय से सूर्य की उपासना चल पड़ी है।"

किसी दिन आनन्द राजा ने अपने सिर पर एक सफेद बाल देखा तत्क्षण विरक्त होकर पुत्र को राज्य वैभव देकर समुद्रगुप्त मुनिराज के पास अनेक राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। उन्होंने ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और सोलहकारण भावनाओं के चिंतवन से तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया। आयु के अंत समय वे धीर-वीर शांतमना मुनिराज प्रायोपगमन संन्यास लेकर ध्यान में लीन थे। पूर्व जन्म के कमठ का जीव नरक से निकलकर वहीं सिंह हुआ था। सो उसने आकर उन मुनि का कण्ठ पकड़ लिया। सिंहकृत उपसर्ग से विचलित नहीं होने वाले वे मुनिराज मरणकर अच्युत (सोलहवें) स्वर्ग के प्राणत नामक विमान में इन्द्र हो गए। वहाँ पर उनकी आयु बीस सागर की थी, साढ़े तीन हाथ ऊँचा शरीर था। वे वहाँ दिव्य सुखों का अनुभव कर रहे थे। उधर सिंह का जीव भी आयु पूरी करके मरकर नरक चला गया और वहाँ के भयंकर दुःखों का चिरकाल तक अनुभव करता रहा।



*गर्भावतार—*

इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी काशी देश में बनारस नाम का एक नगर है। उसमें काश्यप गोत्री राजा अश्वसेन अपरनाम विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम वामा देवी अपरनाम ब्राह्मी था। जब उन सोलहवें स्वर्ग के इन्द्र की आयु छह मास की अवशेष रह गई थी तब इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता के आँगन में रत्नों की धारा बरसाना शुरू कर दी थी। रानी वामा देवी ने सोलहस्वप्नपूर्वक वैशाख कृष्णा द्वितीया के दिन इन्द्र के जीव को गर्भ में धारण किया था।

नवमास पूर्ण होने पर पौष कृष्णा एकादशी के दिन पुत्र का जन्म हुआ था। इन्द्रादि देवों ने सुमेरु पर्वत पर ले जाकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्श्वनाथ' यह नामकरण किया था। श्री नेमिनाथ के बाद तिरासी हजार सात सौ पचास वर्ष बीत जाने पर इनका जन्म हुआ था। इनकी आयु सौ वर्ष की थी जोकि इसी अंतराल में सम्मिलित है। प्रभु की कांति हरितवर्ण की एवं शरीर की ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी। ये उग्रवंशी थे।

सोलह वर्ष बाद नवयौवन से युक्त भगवान किसी समय क्रीडा के लिये अपनी सेना के साथ नगर के बाहर गये। कमठ का जीव जो कि सिंह पर्याय से नरक गया था वह वहाँ से आकर महीपाल नगर का महीपाल नाम का राजा हुआ था। उसी की पुत्री वामा देवी भगवान पार्श्वनाथ की माता थीं। यह राजा (भगवान के नाना) किसी समय अपनी पत्नी के वियोग में तपस्वी होकर वहीं आश्रम के पास वन में पंचाग्नियों के बीच में बैठा तपश्चरण कर रहा था। देवों द्वारा पूज्य भगवान उसके पास जाकर उसे नमस्कार किये बिना ही खड़े हो गये। यह देखकर वह खोटा साधु क्रोध से युक्त हो गया और सोचने लगा "मैं कुलीन हूँ, तपोवृद्ध हूँ और इसका नाना हूँ" फिर भी इस अज्ञानी कुमार ने अहंकारवश मुझे नमस्कार नहीं किया है, क्षुभित हो उसने अग्नि में लकड़ियों को डालने के लिए पड़ी हुई लकड़ी को काटने हेतु अपना फरसा उठाया, इतने में ही अवधिज्ञानी भगवान पार्श्वनाथ ने कहा, "इसे मत काटो" इसमें जीव हैं किन्तु मना करने पर भी उसने लकड़ी काट ही डाली, तत्क्षण ही उसके भीतर रहने वाले सर्प और सर्पिणी निकल पड़े और घायल हो जाने से छटपटाने लगे।

यह देखकर प्रभु के साथ स्थित सुभौमकुमार ने कहा कि तू अहंकारवश यह कुतप करके ताप का ही आस्रव कर रहा है। सुभौम के वचन सुन तपस्वी क्रुधित होकर अपने तपश्चरण की महत्ता प्रकट करने लगा। तब सुभौमकुमार ने अनेक युक्तियों से उसे समझाया कि सच्चे देव, शास्त्र और गुरु के सिवाय कोई हितकारी नहीं है। जिनधर्म में प्रणीत सच्चे तपश्चरण से ही कर्म निर्जरा होती है। यह मिथ्यातप, जीव हिंसा सहित होने से कुतप ही है। यद्यपि वह तापसी समझ तो गया किन्तु पूर्व बैर का संस्कार होने से अपने पक्ष के अनुराग से अथवा दुःखमय संसार के कारण से अथवा स्वभाव से ही दुष्ट होने से उसने स्वीकार नहीं किया प्रत्युत् यह सुभौमकुमार अहंकारी होकर मेरा तिरस्कार कर रहा है ऐसा समझ वह भगवान पार्श्वनाथ पर अधिक क्रोध करने लगा। इसी शल्य से मरकर 'शम्बर' नाम का ज्योतिषी देव हो गया।

इधर सर्प और सर्पिणी पार्श्व कुमार के उपदेश से शांतभाव को प्राप्त हुए तथा मरकर बड़े ही वैभवशाली धरणेन्द्र और पद्मावती हो गये।

अनंतर भगवान जब तीस वर्ष के हो गये तब एक दिन अयोध्या के राजा जयसेन ने उत्तम घोड़ा आदि की भेंट के साथ अपना दूत भगवान पार्श्वनाथ के समीप भेजा। भगवान ने भेंट लेकर

उस दूत से अयोध्या की विभूति पूछी। उत्तर में दूत ने सबसे पहले भगवान ऋषभदेव का वर्णन किया पश्चात् अयोध्या का हाल कहा। उसी समय ऋषभदेव के सदृश अपने को तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध हुआ है, ऐसा सोचते हुए भगवान गृहवास से पूर्ण विरक्त हो गये और लौकांतिक देवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए। प्रभु देवों द्वारा लाई गई विमला नाम की पालकी पर बैठकर अश्ववन में पहुँच गये। वहाँ तेला का नियम लेकर पौष कृष्णा एकादशी के दिन प्रातः काल के समय सिद्ध भगवान को नमस्कार करके प्रभु तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षित हो गये।

पारणा के दिन गुल्मखेट नगर के धन्य नामक राजा ने अष्ट मंगलद्रव्यों से प्रभु का पड़गाहन कर आहारदान देकर पंचाश्चर्य प्राप्त कर लिये। छद्मस्थ अवस्था के चार मास व्यतीत हो जाने पर भगवान अश्ववन में पहुँचकर देवदारु वृक्ष के नीचे विराजमान होकर ध्यान में लीन हो गये। इसी समय कमठ का जीव शम्बर ज्योतिषी आकाशमार्ग से जा रहा था, अकस्मात् उसका विमान रुक गया, उसे विभंगावधि से पूर्वभव का बैर बंध स्पष्ट दिखने लगा। फिर क्या था, क्रोधवश उसने महागर्जना, महावृष्टि, भयंकर वायु आदि से महा उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया, बड़े बड़े पहाड़ तक लाकर समीप में गिराये, इस प्रकार उसने सात दिन तक लगातार भयंकर उपसर्ग किया।

अवधिज्ञान से यह उपसर्ग जानकर धरणेन्द्र अपनी भार्या पद्मावती के साथ पृथ्वी तल से बाहर निकला। धरणेन्द्र और पद्मावती दोनों ने भगवान को सब ओर से घेर कर अपने फणाओं के ऊपर उठा लिया और वज्रमय छत्र तान कर प्रभु का उपसर्ग दूर किया। आचार्य कहते हैं देखो! स्वभाव से ही क्रूर प्राणी इन सर्प सर्पिणी ने अपने ऊपर किये गये उपकार को याद रखा सो ठीक ही है क्योंकि सज्जन पुरुष अपने ऊपर किये हुए उपकार को कभी नहीं भूलते हैं। तभी से वह स्थल ''अहिच्छत्र'' नाम से प्रसिद्ध हो गया।

तदनंतर ध्यान के प्रभाव से प्रभु का मोहनीय कर्म क्षीण हो गया इसलिए बैरी कमठ कृत सब उपसर्ग दूर हो गया। मुनिराज पार्श्वनाथ ने चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। उसी समय इन्द्रों ने आकर समवसरण की रचना करके केवलज्ञान की पूजा की। शंबर नाम का देव भी काललब्धि पाकर उसी समय शांत हो गया और उसने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। यह देख, उस वन में रहने वाले सात सौ तपस्वियों ने मिथ्यादर्शन छोड़कर संयम धारण कर लिया, सभी शुद्ध सम्यग्दृष्टि हो गये और बड़े आदर से प्रदक्षिणा देकर भगवान की स्तुति भक्ति की। आचार्य कहते हैं कि पापी कमठ के जीव का कहां तो निष्कारण वैर और कहां ऐसी पार्श्वनाथ की शांति! इसलिए संसार के दुःखों से भयभीत प्राणियों को वैर विरोध का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

भगवान पार्श्वनाथ के समवसरण में स्वयंभू को आदि लेकर दस गणधर थे, सोलह हजार मुनिराज, सुलोचना को आदि लेकर छत्तीस हजार आर्यिकायें, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकायें थीं। इस प्रकार बारह सभाओं को धर्मोपदेश देते हुए भगवान ने पाँच मास कम सत्तर वर्ष तक विहार किया। अंत में आयु का एक माह शेष रहने पर विहार बंद हो गया। प्रभु पार्श्वनाथ सम्मेदाचल के स्वर्णभद्र कूट पर छत्तीस मुनियों के साथ प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में सिद्धपद को प्राप्त हो गये। इन्द्रों ने आकर मोक्ष कल्याणक उत्सव मनाया। ऐसे पार्श्वनाथ भगवान हमें भी सम्पूर्ण प्रकार के उपसर्गों को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।



# मण्डल का नक्शा

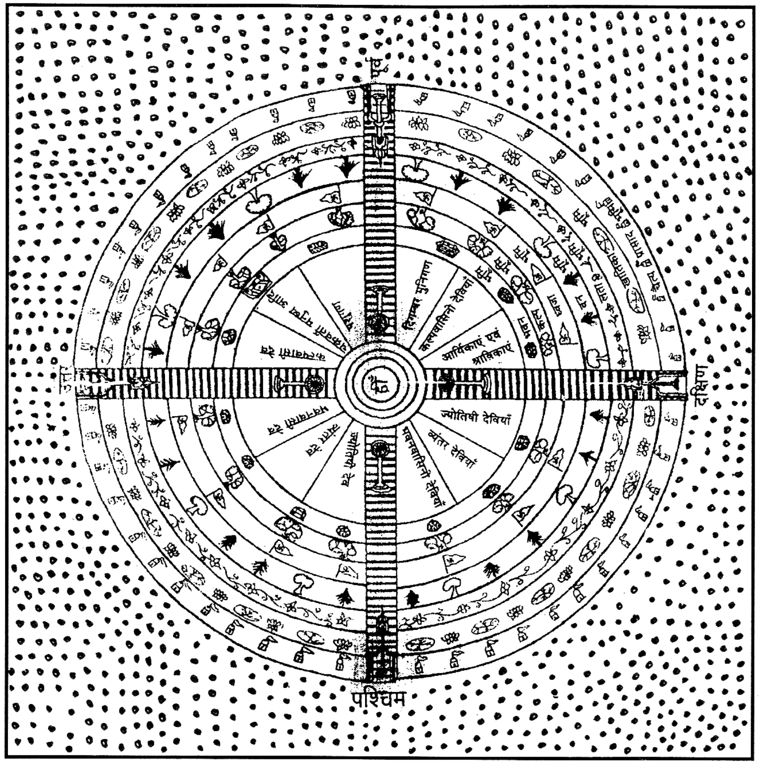


इस विधान में 1098 अर्घ्य और 18 पूर्णार्घ्य हैं।

मानस्तंभ के – **4 अर्घ्य**
आठ भूमि में प्रथम भूमि का – **1 अर्घ्य**
द्वितीय भूमि का – **1 अर्घ्य**
तृतीय भूमि का – **1 अर्घ्य**
चतुर्थ भूमि के चैत्यवृक्ष के – **4 अर्घ्य**
पाँचवीं भूमि का – **1 अर्घ्य**
कल्पवृक्ष भूमि के सिद्धार्थ वृक्ष के – **4 अर्घ्य**
भवनभूमि के – **4 अर्घ्य**
आठवीं भूमि का – **1 अर्घ्य**
प्रथम कटनी पर धर्मचक्र के – **4 अर्घ्य**
द्वितीय कटनी का – **1 अर्घ्य**
तृतीय कटनी में गंधकुटी का – **1 अर्घ्य**
तीर्थंकर के गुणों के – **46 अर्घ्य**
तीर्थंकर के 18 दोष वर्जित का – **1 अर्घ्य**
समवसरण में गणधरों का – **1 अर्घ्य**
समवसरण में 7 प्रकार के मुनियों के – **7 अर्घ्य**
समवसरण में आर्यिकाओं का – **1 अर्घ्य**
पंचकल्याणक के – **5 अर्घ्य**
शासन देव-देवी के – **1+1=2 अर्घ्य**
भगवान के 1008 गुणों के – **1008 अर्घ्य**
**कुल मिलाकर 1098 अर्घ्य हैं।**

# नवदेवता पूजन

*–गीता छन्द –*

**अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।**
**जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।**
**नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।**
**आह्वान कर थापें यहां मन में अतुल श्रद्धा धरें।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

*–अथाष्टक –*

**गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।**
**अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूँ मुदा।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।1।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।**
**तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।2।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षीरोदधी के फेन सम सित तंदुलों को लायके।**
**उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।**



**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।3।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।**
**भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।4।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।**
**निज आत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहूँ नत भाल मैं।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।5।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में।**
**तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।6।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।**
**निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।7।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।**
**उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।8।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।**
**वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ्य से पूजत मिले।।**
**नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।**
**सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।9।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*दोहा –* **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
**नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।**
**मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

*जाप्य-* **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।** (9, 27 या 108 बार)

## जयमाला

*सोरठा-* **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
**गाऊँ गुणमणिमाल जयवंते वर्तो सदा।।1।।**

*(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)*

**जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।**
**जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।**
**जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।**
**जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।**



**आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।**
**दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।**
**जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।**
**सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।**
**जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।**
**निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।**
**ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।**
**संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।**
**जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।**
**जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।**
**जिन की ध्वनी पियूष का जो पान करेंगे।**
**भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।**
**जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।**
**वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।**
**कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।**
**वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।**
**नव देवताओं की जो नित आराधना करें।**
**वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।**
**मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।**
**सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।**

*दोहा –* **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
**भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।**

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं........।

**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलि।**

*गीता छंद –* **जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।**
**वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।**
**नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते।**
**सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहां पर कभी न आवते।।9।।**

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

# श्री पार्श्वनाथ समवसरण विधान

## मंगलाचरण

## श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र (संस्कृत)

*स्रग्धरा छन्द (21 अक्षरी) –*

**श्रीमान् पार्श्वो जिनेन्द्रः, परमसुखरसानन्दकंदैकपिंडः।**
**चिच्चैतन्यस्वभावी, भुवि सकलकलेः, कुण्डदण्डप्रचण्डः।।**
**भ्राजिष्णुस्त्वं सहिष्णुः, कमठशठकृतेनोपसर्गस्य जिष्णुः।**
**त्वां भक्त्या नौमि नित्यं, समरसिकमना, मे क्षमारत्नसिद्ध्यै।।1।।**

*मत्तविलासिनी छंद (21 अक्षरी) –*

**[1]माधवमास्यसिते द्वितये दिवसे किल गर्भमितः प्रभुः।**
**पौषसुमास्यसितैकयुता दशमीदिवसे जनिमाप सः।।**
**जन्मतिथौ च दिशावसनो नवहस्ततनुः खलु तीर्थकृत्।**
**शालिनवांकुरसद्द्युतिमान् शतवर्षमितायुरवेत् स मां।।2।।**

1. वैशाखे।



*प्रभद्रक छंद (22 अक्षरी) –*

**ध्याननिमग्नपार्श्वमुनिपं, विलोक्य कमठासुरः कुपितवान्।**
**मूसलधारयोग्रपवनैर्भयंकरमहोपसर्गमिति सः ।।**
**वन्हिकणान् ववर्ष दृषदः, पिशाचपरिवेष्टितश्च कृतवान्।**
**मंदरशैलवद्दृढमनाः, चचाल नहि योगतो जिनवरः।।3।।**

*अश्वललित छन्द (23 अक्षरी) –*

**फणपतिरासनस्य चलनात् त्वरं, सह समाययौ वनितया।**
**असितमधौ[1] चतुर्दश [2]दिने, सुबोधरविरुद्ययौ च जिन! ते।।**
**गलितमदस्तदा स कमठासुरो जिनविभुं श्रितः सदसि वै।**
**जिनवचनौषधं किल पपौ, समस्तभवरोगशांतकरणं।।4।।**

*मत्ताक्रीड़ा छन्द (23 अक्षरी) –*

**संप्राप्नोत् शुक्लासप्तम्यां, नभसि[3] वसुगुणमणिखचितवसुधां।**
**सम्मेदः शैलेन्द्रो वंद्यः, सततमपि गणिमुनिसुरखगनरैः।।**
**वाराणस्यां ब्राह्मी सूते, स्म विकसितकृतमुनिहृदयकमलं।**
**सर्पश्चिन्हो भाति त्रेधा, जिनचरणकमलमहमपि च नुवे।।5।।**

*अनुष्टुप् छन्द –*

**विश्वसेनसुतः पार्श्वः, त्वत्प्रसादात् क्षमाखने!।**
**सर्वंसहा मतिर्मे स्यात्, तावद्यावत् शिवो न हि।।6।।**

*अथ मण्डलस्योपरि स्वर्ण-रजतपुष्पमिश्रित पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

1. चैत्रे। 2. चालू पूजाओं में चतुर्थी है। उत्तर पुराण में चौदश है। 3. श्रावण।

# श्री पार्श्वजिन स्तोत्र (हिन्दी)

भवसंकट हर्ता पार्श्वनाथ! विघ्नों के संहारक तुम हो।
हे महामना हे क्षमाशील! मुझमें भी पूर्ण क्षमा भर दो।।
यद्यपि मैंने शिव पथ पाया, पर यह विघ्नों से भरा हुआ।
इन विघ्नों को अब दूर करो, सब सिद्धि लहूँ निर्विघ्नतया।।1।।

वाराणसि नगरी धन्य हुई, धन धन्य हुए सब नर नारी।
हे अश्वसेननंदन ! तुम से, वामा माँ भी मंगलकारी।।
वैशाख वदी वह दूज भली, माता उर आप पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता से प्रश्न विचारे थे।।2।।

शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि थी, जब आए प्रभु साक्षात् यहां।
शैशव में सुर संग खेल रहे, अहियुग को दीना मंत्र महा।।
तब नागयुगल धरणेन्द्र तथा, पद्मावती होकर भक्त बने।
शुभ पौष वदी ग्यारस के दिन, प्रभु दीक्षा ले मुनि श्रेष्ठ बने।।3।।

तत्क्षण मनपर्ययज्ञानी हो, सब ऋद्धी से परिपूर्ण हुए।
इक समय सघन वन के भीतर, प्रभु निश्चल ध्यानारूढ़ हुए।।
कमठासुर ने उपसर्ग किया, अग्नी ज्वाला को उगल-उगल।
पत्थर फेंके मूसलधारा, बर्षायी आंधी उछल-उछल।।4।।

निष्कारण ही कमठासुर ने, दश भव तक वैर निकाला था।
प्रभु को दुख दे देकर उसने, खुद को दुर्गति में डाला था।।
प्रभु महासहिष्णू क्षमा सिन्धु, भव-भव से सहते आये हैं।
तन से ममता को छोड़ दिया, नहिं किंचित् भी घबराए हैं।।5।।

उस ही क्षण धरणीपति पद्मावती, आ करके बहुभक्ति किया।
प्रभु को मस्तक पर धारण कर, ऊपर से फण का छत्र किया।।
प्रभु क्षपक श्रेणि में चढ़ करके, मोहनी कर्म का नाश किया।
प्रभुवर ने ही उस ही क्षण में, कैवल्य श्री को वरण किया।।6।।



पृथ्वी से बीस हजार हाथ, ऊपर पहुँचे अर्हन्त बने।
इन्द्रों के आसन कांप उठे, प्रभु समवसरण गगनांगण में।।
वदि चैत्र चतुर्थी तिथि उत्तम, जब प्रभु में ज्ञान प्रकाश हुआ।
उस स्थल का उस ही क्षण से, 'अहिच्छत्र' तीर्थ यह नाम हुआ।।7।।

नव हाथ देह सौ वर्ष आयु, मरकतमणि सम आभाधारी।
अहि चिह्न सहित वे पार्श्वप्रभो! मुझको हों नित मंगलकारी।।
श्रावण सुदि सप्तमि तिथि के दिन, सिद्धीकांता से प्रीति लगी।
मैं नमूं 'ज्ञानमती' तुम्हें सदा, मेरी हो सर्वसहा मती।।8।।

*–दोहा–*

'अहिच्छत्र' वर तीर्थ पर, मंडल रचो महान् ।
समवसरण पूजा करो, पावो सौख्य निधान।।9।।

केवलज्ञान कल्याण का, तीर्थ जगत् में मान्य।
पार्श्वनाथ की भक्ति कर, पावो यश धन धान्य।।10।।

चिन्तामणि श्री पार्श्वप्रभु, चिंतित फल दातार।
ज्ञानमती केवल करें, भरें सुगुण भण्डार।।11।।

*अथ मण्डलस्योपरि स्वर्ण-रजतपुष्पमिश्रित पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

# समवसरण पूजा

*स्थापना (शंभु छंद)*

**श्री पार्श्वनाथ का समवसरण, धनपति ने सुंदर दिव्य रचा।**
**त्रिभुवन का वैभव दिखे वहाँ, नहिं किंचित् भी वहं शेष बचा।।**
**अंतर लक्ष्मी आनन्त्य ज्ञान, दर्शन सुख वीर्य धरें स्वामी।**
**बाहिर लक्ष्मी प्रभु समवसरण, विस्मय धारें सुर नर प्राणी।।1।।**

*–दोहा–*

**अनंत गुणमणि के धनी, श्री पारस भगवान्।**
**आह्वानन कर मैं जजूँ, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।2।।**

ॐ ह्रीं अन्तरंगबहिरंगलक्ष्मीसमन्वितश्रीपार्श्वनाथस्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अन्तरंगबहिरंगलक्ष्मीसमन्वितश्रीपार्श्वनाथस्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अन्तरंगबहिरंगलक्ष्मीसमन्वितश्रीपार्श्वनाथस्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

*–अथाष्टक-गीता छंद –*

**अति स्वच्छ शीतल नीर ले, प्रभु पाद त्रयधारा करूँ।**
**निज मानसिक संताप, शांती हेतु मैं आशा धरूँ।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।1।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**मलयागिरी का गंध सुरभित, घिस कटोरी भर लिया।**
**निज ताप त्रय संहार हेतू, नाथ पद चर्चन किया।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।2।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।



**शुचि धौत तंदुल चंद्र किरणों, सम धवल वर पुंज से।**
**तुम पूजते निज आत्म अक्षय सौख्य होवे भक्ति से।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।3।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**दशदिश सुगंधित कर रहे ये पुष्प बेला मल्लिका।**
**तुम पद कमल अर्पण किये हो स्वात्म सुरभित संपदा।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।4।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**पूआ अंदरसा पूरियां हलुआ भराया थाल में।**
**निज भूख व्याधी दूर होने हेतु अर्पूं आज मैं।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।5।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्पूर ज्योती जगमगे तुम आरती रुचि से करूँ।**
**अज्ञान तम विध्वंस हो निज ज्ञान की ज्योती भरूँ।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।6।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**दश गंध मिश्रित धूप सुरभित अग्नि में खेऊँ अबे।**
**सब कर्म भस्मीभूत होकर धूम्र के छल से भगें।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।7।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंगूर केला आम्र अमरख, बहु मधुर फल ले लिये।**
**तुम पाद अग्र चढ़ावते, निज आत्म सुख अनुभव किये।।**

**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।8।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर, स्वर्ण पुष्प मिलाइया।**
**वर अर्घ्य आप चढ़ाय के, निज आत्म निधि को पा लिया।।**
**श्री पार्श्वप्रभु के समवसृति की, भक्ति से पूजा करूँ।**
**भव पंच परिवर्तन मिटाकर, स्वात्मगुण संपति भरूँ।।9।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग-बहिरंगलक्ष्मी-समन्वित-श्रीपार्श्वनाथस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–दोहा–*

**सुवरण झारी में भरूँ, गंगा नदि को नीर।**
**शांतीधारा त्रय करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**चंप चमेली केवड़ा, बेला वकुल गुलाब।**
**पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्मसुख लाभ।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

*मानस्तंभ के 4 अर्घ्य*

*सोरठा* – **जिनवर चरण सरोज, पुष्पांजलि से पूजते।**
**मिटे सर्वदुख शोक, सुखसंपति होवे सदा।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

**(मंडल पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)**

*–नरेन्द्र छंद–*

**पार्श्वनाथ ने कमठ उपद्रव, जीत घाति अरि नाशा।**
**पद्मावति धरणेन्द्र देव ने, सब उपसर्ग विनाशा।।**
**केवलज्ञान सूर्य के उगते, समवसरण क्षण भर में।**
**मानस्तंभ पूर्वदिश का मैं, पूजूँ रुचि धर मन में।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**क्षमाशील प्रभु महामना हो, बहु उपसर्ग सहा है।**
**संकटमोचन अतः भव्य के ऋषि ने यही कहा है।।**
**पद्मावति शासन देवी का, मान बढ़ा इस युग में।**
**मानस्तंभ दक्षिणी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समवसरण की शोभा न्यारी, जगह-जगह बावड़ियाँ।**
**लाल सफेद कमल खिलते लख, खिल जाती मन कलियाँ।।**
**केवलज्ञान सूर्य किरणों से, है प्रकाश त्रिभुवन में।**
**मानस्तंभ पश्चिमी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समवसरण में लताभूमि, उपवन में फूल खिले हैं।**
**जात विरोधी क्रूर पशू आपस में गले मिले हैं।।**
**नाम मंत्र प्रभु का जपते अरि बने मित्र क्षण भर में।**
**मानस्तंभ उत्तरी दिश का पूजूँ रुचि धर मन में।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–पूर्णार्घ्य–*

**पार्श्वनाथ तीर्थंकर जिनके, समवसरण में होते।**
**मानस्तंभ चार उत्तम जो, मान पंक को धोते।।**
**गणधर मुनिगण सुरपति नरपति, खगपति वंदन करते।**
**मैं पूजूँ पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, पुण्य पूर्ण ये करते।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितचतुःमानस्तंभसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*समवसरण की प्रथम भूमि का अर्घ्य*

*–दोहा–*

**पार्श्वनाथ संकटहरण, क्षमानिधान महान।**
**समवसरण के जिनभवन, जजतें स्वात्म निधान।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*समवसरण में द्वितीय भूमि का अर्घ्य*

*–मोतीदाम छंद–*

**कमठ उपसर्ग विजेतानाथ, मुझे करिये हे पार्श्व सनाथ।**
**जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।1।।**

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितश्रीपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*समवसरण में तृतीय भूमि का अर्घ्य*

*चाल –नंदीश्वर पूजा–*

**श्री पार्श्वनाथ तीर्थेश कलि मल दलन करें।**
**जो भविजन जजें हमेश, निज दुख शमन करें।।**
**वल्लीवन सुरभित पुष्प, वापी पर्वतयुत।**
**इस विभव सहित जिन ईश, पूजूँ त्रिकरण युत।।1।।**

ॐ ह्रीं लताभूमिमंडितश्रीपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*समवसरण में चतुर्थ भूमि के चैत्यवृक्ष के 4 अर्घ्य*

*–दोहा–*

**समवसरण प्रभु पार्श्व का, सब मंगल करतार।**
**तरु अशोकवन पूर्वदिश, जजूँ चैत्यतरु सार।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तंभसहित चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सर्व अमंगल दोषहर, धर्मतीर्थ करतार।**
**दक्षिण दिश वन सप्तछद, जजूँ चैत्यतरु सार।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तंभसहित चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**नाम मंत्र जिन पार्श्व का, सर्व सौख्य दातार।**
**चंपकवन पश्चिमदिशी, जजूँ चैत्यतरु सार।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तंभसहित चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संकट मोचन पार्श्वप्रभु, कलियुग दुख हरतार।**
**उत्तर दिश में आम्रवन, जजूँ चैत्यतरु सार।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तंभसहित चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–*

**श्री पार्श्वनाथ के समवसरण में चौथी उपवन भू मानी है।**
**चारों दिश इक-इक चैत्यवृक्ष, चहुँदिश जिनप्रतिमा मानी हैं।।**
**चारों दिश की जिनप्रतिमा के, सन्मुख में मानस्तंभ खड़े।**
**मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर के, दिन पर दिन सुख सौभाग्य बढ़े।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिसंबंधिचतुश्चैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनप्रतिमातावत्प्रमाणमानस्तंभसंबंधिसर्वप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*समवसरण में पाँचवी भूमि का अर्घ्य*

*–स्रग्विणी छंद–*

**पार्श्वप्रभु भक्त के विघ्न निरवारते।**
**जो जजें क्रोध अरि वे हि संहारते।।**
**पांचवीं ध्वज धरा शोभती हैं वहाँ।**
**मैं जजूँ जिन समोशर्ण को नित यहाँ।।1।।**

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितश्रीपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*समवसरण में कल्पवृक्ष भूमि के सिद्धार्थवृक्ष के 4 अर्घ्य*

*–चौपाई छंद–*

**समवसरण जिन पारसनाथा, पद्मावति फणपति नत माथा।**
**तरु नमेरू के चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तंभसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समवसरण सुरवंद्य जिनंदा, वंदत सुरनर खग रविचंदा।**
**तरु मंदार चतुर्दिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तंभसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कमठमान भंजन जिनराजा, भविजन पूजें निज हित काजा।**
**संतानक तरु चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तंभसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कलियुग पाप दलन जगख्याता, तुम यश गातीं शारद माता।**
**पारिजात तरु चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तंभसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–पूर्णार्घ्य-गीता छंद –*

**इस कल्पतरु की भूमि में, सिद्धार्थ तरु चारों दिशी।**
**श्री सिद्धबिंब विराजते, प्रत्येक तरु के चहुँदिशी।।**
**एकेक मानस्तंभ हैं, प्रत्येक प्रतिमा के निकट।**
**उनमें चतुर्दिश बिंब जिनवर, पूजते ही शिव निकट।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पतरुभूमिसंबंधिचतुःसिद्धार्थवृक्षमूल-भागविराजमानषोडशसिद्धप्रतिमातत्संबंधितावत्प्रमाण मानस्तंभस्थितसर्वसिद्ध-प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*समवसरण में भवनभूमि के 4 अर्घ्य*

*–सोरठा –*

**पार्श्वनाथ भगवंत, समवसरण त्रिभुवन शरण।**
**नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूं सदा।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-विराजमानअर्हत्सिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**रोग शोक दुख द्वंद, तुम भक्ती से दूर हों।**
**नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूं सदा।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-विराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वैर कलह जगनिंद्य, दूर भगे तुम भक्ति से।**
**नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूं सदा।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-विराजमानजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कलियुग कष्ट अनंत, नश जाते तुम नाम से।**
**नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूं सदा।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-विराजमानजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद –*

**प्रत्येक गली के नव नव ये, चारों के सब छत्तीस हुए।**
**श्री पार्श्व समवसृति के स्तूप अर्हंत सिद्ध जिनबिंब लिये।।**
**शिर छत्र फिरें अरु चंवर ढुरें, वंदनवारों से शोभ रहें।**
**हम इनकी जिनप्रतिमाओं को, नित अर्घ्य चढ़ाकर कर्म दहें।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिमध्यवीथीसंबंधिषट्त्रिंशत्स्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*समवसरण में आठवीं भूमि का अर्घ्य*

*–शंभु छंद –*

**श्री पार्श्वनाथ का समवसरण, है पांच कोश का अति सुंदर।**
**वहाँ बीस हजार सीढ़ियों से, जाकर दर्शन करते ऊपर।।**
**कमठासुर भी वहां आ करके, सब वैर छोड़ सम्यक्त्व लिया।**
**मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, हो जावें सुगम मोक्ष गलियाँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीमडपभूमिमंडितश्रीपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*प्रथम कटनी पर धर्मचक्र के 4 अर्घ्य*

*अडिल्ल छंद –* **पार्श्वनाथ जिनराज, सर्व सर ताज हैं।**
**समवसरण में आप, सर्व जन तात हैं।।**
**सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।**
**धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संकट मोचन शोकहरन, भविशर्ण हैं।**
**आप एक भववारिधि तारण तर्ण हैं।।**
**सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।**
**धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षमा मार्दव आर्जव शौच सुधर्म हैं।**
**तुम भक्ती से धर्म करें शिव शर्म हैं।।**
**सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।**
**धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सच संयम तप त्याग, अकिंचन ब्रह्मव्रत।**
**जिन भक्ती से पूरण हों, ये धर्म सब।।**
**सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।**
**धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*पूर्णार्घ्य-दोहा –* **पार्श्वनाथ जिनराज के, चार कहे वृषचक्र।**
**धर्मचक्र को नित नमूँ, पूजत हो मम भद्र।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिविराजमानचतुर्धर्मचक्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**



*द्वितीय कटनी का अर्घ्य*

*–स्रग्विणी छंद –*

**पार्श्वजिन भक्त के सर्व संकट हरें।**
**क्रोध ईर्ष्यादि हरके क्षमा गुण भरें।।**
**पूजहूँ मैं ध्वजा आठ भक्ती भरे।**
**सिद्ध के आठ गुण सम धवल फरहरें।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणद्वितीयपीठोपरिस्थितअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*तृतीय कटनी में गंधकुटी का अर्घ्य*

*–गीता छंद –*

**प्रभु पार्श्वनाथ त्रिलोक शेखर शिखामणि विख्यात हैं।**
**पद्मावती धरणेन्द्र भी नित प्रति नमाते माथ हैं।।**
**वर ज्ञान आदिक क्षायिकी मिल जांय केवल लब्धियाँ।**
**जिन गंधकुटि को पूजहूँ मिल जांय आतम सिद्धियाँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*तीर्थंकर के गुणों के 46 अर्घ्य*

*–सोरठा –*

**परमानन्द समेत, पार्श्वनाथ तीर्थेश हैं।**
**जिनगुण संपत्ति हेतु, तिनके गुणमणि को जजूँ।।1।।**

*इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

*जन्म के दश अतिशय*

*–नरेंद्र छंद –*

**जन्म समय से ही दश अतिशय, प्रभु के तन में सोहे।**
**सौधर्मेन्द्र बना नित किंकर, प्रभु के मन को मोहे।।**
**देह पसेव रहित है प्रभु का, यह अतिशय मन भावे।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।1।।**

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मात गर्भ से जन्में फिर भी, मलमूत्रादि रहित हैं।**
**मुनि मन को निर्मल करने में, सचमुच आप निमित्त हैं।।**
**सुर नर असुर इंद्र विद्याधर, बहु रुचि से गुण गावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।2।।**

ॐ ह्रीं निर्मलत्व सहजातिशयधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु शरीर में श्वेत दुग्ध सम, रुधिर रहे अतिशायी।**
**रुधिर लाल नहिं यह शुभ अतिशय, सब जन मन सुखदायी।।**
**गणधरगण नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।3।।**

ॐ ह्रीं क्षीरगौर रुधिरत्व सहजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन सुडौल आकार मनोहर, समचतुरस्र कहावे।**
**जिस जिस अवयव का जितना है, माप वही मन भावे।।**
**इस अतिशययुत पार्श्वप्रभू को, हम भी पूजें ध्यावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।4।।**

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थान सहजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वज्रवृषभनाराच संहनन, उत्तम प्रभु का जानों।**
**अद्भुत महिमाशाली जिनवर, का शुभ देह बखानों।**
**इस अतिशय को हम नित पूजें, अतिशय भक्ति बढ़ावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।5।।**

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोटिक कामदेव छवि लाजें, अतिशय रूप मनोहर।**
**इंद्र हजार नेत्र कर निरखें, तृप्त न होवे तो पर।।**
**सुन्दर सुन्दर सब परमाणू, प्रभु के तन बस जावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।6।।**

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**महा सुगंधित प्रभु का तन है, देव सुमन से बढ़कर।**
**अन्य सुरभि नहिं है इस जग में, उस सदृश अति सुखकर।।**
**जन्म समय से ही यह अतिशय, सब जन मन को भावे।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।7।।**

ॐ ह्रीं सौगन्ध्य शरीर सहजातिशयसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**एक हजार आठ शुभ लक्षण, प्रभु के तन में सोहें।**
**सब सर्वोत्तम गुण के सूचक, त्रिभुवन जन मन मोहें।।**
**जन्मकाल से ये शुभ लक्षण, सब इनको ललचावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानन्द सुख पावें।।8।।**

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहितशरीरसहजातिशयधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुलना रहित अतुल बल प्रभु तन, जग में है न किसी के।**
**इंद्र चक्रवर्ती से अद्भुत, शक्ती है जिन जी के।।**
**निज शक्ती के प्रगटन हेतू, हम भी प्रभु गुण गावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से परमानंद सुख पावें।।9।।**

ॐ ह्रीं अप्रमितवीर्यसहजातिशयसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रिय हित मधुर वचन अमृतसम, सबको तृप्त करे हैं।**
**बाल्यकाल में आप संग में, सुर शिशु आन रमे हैं।।**
**ऐसे अतिशय युत जिनवर की, हम नित पूज रचावें।**
**जो जन पूजें भक्ति भाव से, परमानंद सुख पावें।।10।।**

ॐ ह्रीं प्रियहितवादित्वसहजातिशयसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*केवलज्ञान के दश अतिशय*

*–रोला छन्द–*

**चार चार सौ कोश, चारों दिश में जानो।**
**रहे सुभिक्ष सुकाल, यह जिन अतिशय मानो।।**

**केवलज्ञान दिनेश, प्रगट हुआ सुखदायी।**
**मैं पूजूँ शिरनाय, पाऊँ सुख अतिशायी।।1।।**

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षत्वघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान उदय तत्काल, नभ में गमन करे हैं।**
**पांच सहस धनु जाय, ऊपर अधर चले हैं।।**
**असंख्यात सुर आय, जय जय ध्वनि उचरें हैं।**
**मैं पूजूँ शिरनाय, कर्म कलंक टरे हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं आकाशगमनघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जहाँ गमन प्रभु होय, प्राणी बध न वहाँ पे।**
**दयासिंधु जिनदेव, सबकी दया तहाँ पे।।**
**मुझ पर भी अब नाथ! दृष्टि दया की कीजे।**
**मैं पूजूं शिरनाय, रत्नत्रय निधि दीजे।।3।।**

ॐ ह्रीं अदयाऽभावघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**केवलज्ञानी देह परमौदारिक जानों।**
**कवलाहार विहीन, तन की स्थिति सरधनों।।**
**यह अतिशय जिनराज, भविजन श्रद्धा ठानें।**
**जो पूजें मन लाय, कर्म कुलाचल हानें।।4।।**

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घाति चतुष्टय घात, यह अतिशय सुखकारी।**
**सुर नर पशू अजीव, कृत उपसर्ग निवारी।।**
**गणधर मुनिगण नित्य, तुम चरणाम्बुज ध्यावें।**
**जो पूजें शिरनाय, अक्षय पद को पावें।।5।।**

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**समवसरण में आप, चारों दिश मुख दीखे।**
**पूरब मुख ही आप, या उत्तरमुख तिष्ठे।।**
**यह अतिशय तुम नाथ! सब जन को सुखदायी।**
**मैं पूजूँ शिरनाय, पाऊँ सुख अतिशायी।।6।।**

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब विद्या के आप, ईश्वर एक कहे हैं।**
**तुमको पूजत भव्य, सम्यग्ज्ञान लहे हैं।।**
**यह अतिशय तुम नाथ, सब जन मन को भावे।**
**मैं पूजूँ शिरनाय, मेरे कर्म नशावें।।7।।**

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरत्वघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परमौदारिक देह, पुद्गलमय कहलावे।**
**फिर भी छाया हीन, यह अतिशय मन भावे।।**
**कल्पवृक्ष तुम देव, तुम छाया मैं चाहूँ।**
**पूजूँ अर्घ चढ़ाय, भव भव ताप नशाऊँ।।8।।**

ॐ ह्रीं छायारहितघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नेत्र पलक नहिं होत, नहिं टिमकार प्रभू के।**
**सौम्यदृष्टि नासाग्र, अतिशयवान प्रभू के।।**
**अंतर्दृष्टी हेतु, मैं भी जिनपद ध्याऊँ।**
**पूजूं अर्घ चढ़ाय, फेर न भव में आऊँ।।9।।**

ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितघातिक्षयजातिशयसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहीं बढ़े नख केश, केवलज्ञानी प्रभु के।**
**दिव्य शरीर विशेष, यह अतिशय हैं प्रभु के।।**
**सम्यक्दर्शन हेतु, मैं त्रयकाल जजूँ हूँ।**
**जन्म मरण भय दुःख, नाशन हेतु भजूँ हूँ।।10।।**

ॐ ह्रीं समाननखकेशत्वघातिक्षयजातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## *देवकृत चौदह अतिशय*

*–शंभु छंद –*

**सर्वार्धमागधी भाषा है, तीर्थंकर की भवि सुखकारी।**
**सुरकृत यह अतिशय सब जन के, मन चमत्कार करता भारी।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीयभाषादेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु का विहार हो जहां-जहां, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।**
**सब जाति विरोधी जीव वहां, आपस में वैर हरें विचरें।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब श्रीविहार होता प्रभु का, औ समवसरण जहां राजे हैं।**
**षट्ऋतु के सब फल फलते हैं, सब फूल खिलें अति भासे हैं।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।3।।**

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दर्पण तलसम भू रत्नमयी, जहँ जहँ प्रभु विहरण करते हैं।**
**यह अतिशय सुरकृत मनहारी, भवि पूजत ही दुख हरते हैं।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।4।।**

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**अनुकूल पवन है मन्द मन्द, सुरभित सुखकर जन मनहारी।**
**सब आधी व्याधी शोक टलें, स्पर्श पवन का हितकारी।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।5।।**

ॐ ह्रीं सुगंधितविहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जहँ जहँ प्रभु का हो श्रीविहार, सब जन परमानन्दित होते।**
**परमानन्दामृत पी करके, मुनिगण भी कर्म पंक धोते।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।6।।**

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूलि कंटक आदिक विरहित, भूमी अति स्वच्छ सदा दिखती।**
**प्रभु के विहार के अतिशय से, दुर्भिक्ष मारि व्याधी टरती।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।7।।**

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित गन्धोदक की वर्षा, भक्ती से मेघकुमार करें।**
**प्रभु का ही अतिशय पुण्य महा, जो पूजें भवदधि पार करें।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।8।।**

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जहँ जहँ प्रभु चरणकमल धरते, तहँ तहँ शुभ स्वर्ण कमल खिलते।**
**सुरकृत अतिशय को देख देख, जन-जन के हृदय कमल खिलते।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।9।।**

ॐ ह्रीं चरणकमलतलरचितस्वर्णकमलदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शाली आदिक सब धान्य भरित, खेती फल से झुक जाती है।**
**सुरकृत अतिशय से चहुँदिश में, सुन्दर पृथ्वी लहराती है।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।10।।**

ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आकाश शरद् ऋतु के सदृश, सब दशों दिशा धूमादि रहित।**
**भक्ती से जन-जन का मन भी, सब पाप पंक से हो विरहित।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।11।।**

ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलगगनदिग्भागत्वदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आवो आवो सब सुरगण मिल, आवो आवो जयकार करो।**
**जिनवर की अतिशय भक्ती कर, अब मोहराज पर वार करो।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।12।।**

ॐ ह्रीं एतैतेति चतुर्णिकायामरपरापराह्वानदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वर धर्मचक्र सर्वाण्हयक्ष, मस्तक पर धारण करते हैं।**
**प्रभु के आगे चलते जग में, ये धर्मचक्र शुभ करते हैं।।**



**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।13।।**

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कलश ध्वज छत्र चमर दर्पण, भृंगार ताल औ सुप्रतीक।**
**ये मंगलद्रव्य आठ इनको, देवी कर धारें मंगलीक।।**
**जो आतम निधि के इच्छुक हैं, वे इन अतिशय को ध्याते हैं।**
**इस हेतू पार्श्वनाथ की हम, पूजा करके सुख पाते हैं।।14।।**

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्यदेवोपनीतातिशयसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*आठ प्रातिहार्य*

*–गीता छन्द –*

**वर प्रातिहार्य अशोक तरुवर, शोक जन मन का हरे।**
**गारुत्मणी के पत्र सुन्दर, पवन प्रेरित थरहरें।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।1।।**

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरगण करें सुरकल्पतरु के, पुष्प की वर्षा घनी।**
**अतिशय सुगंधित पुष्प पंक्ती, सर्व मन हरसावनी।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।2।।**

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु दिव्यध्वनि चउकोश तक, गम्भीर ध्वनि करती खिरे।**
**निर अक्षरी फिर भी असंख्यों, भव्य को तर्पित करे।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।3।।**

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चौंसठ चमर ढोरें अमर बहु, पुण्य संचय कर रहे।**
**ये चमर मानों कह रहे प्रभु, भक्त ऊरध गति लहें।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।4।।**

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बहुरत्न संयुत सिंहपीठ, जिनेश जिस पर राजते।**
**जो भव्य पूजें नाथ को वे, आत्म ज्योति प्रकाशते।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।5।।**

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु देह कांती प्रभामंडल, कोटि सूर्य तिरस्करे।**
**भवि सात भव उसमें निरख जिन, विभव लख शिरनत करें।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।6।।**

ॐ ह्रीं भामंडलमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरदुंदुभी बजती विविध, भविलोक को हर्षित करे।**
**धुनि श्रवणकर जिन दर्शकर,जन पुण्य बहु अर्जित करें।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।7।।**

ॐ ह्रीं सुरदुंदुभिमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिननाथ के मस्तक उपरि त्रय, छत्र सुन्दर फिर रहें।**
**त्रैलोक्य की प्रभुता प्रभू की, है यही सब कह रहें।।**
**इस प्रातिहार्य समेत जिनवर, की करें हम अर्चना।**
**सब रोग शोक समूल हर हम, करें यम की तर्जना।।8।।**

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



*चार अनंत चतुष्टय*

*–नाराच छंद–*

**तीन लोक तीन काल की समस्त वस्तु को।**
**एक साथ जानता अनंत ज्ञान विश्व को।।**
**जो अनंत ज्ञान युक्त इन्द्र अर्चते जिन्हें।**
**पूजहूँ सदा उन्हें अनंत ज्ञान हेतु मैं।।1।।**

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लोक औ अलोक के समस्त ही पदार्थ को।**
**एक साथ देखता अनन्त दर्श सर्व को।।**
**जो अनन्त दर्शयुक्त इन्द्र अर्चते जिन्हें।**
**पूजहूँ सदा उन्हें अनन्त दर्श हेतु मैं।।2।।**

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाधहीन जो अनन्त सौख्य भोगते सदा।**
**हो भले अनन्तकाल आवते न ह्यां कदा।।**
**वे अनन्त सौख्य युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।**
**पूजहूँ सदा तिन्हें अनन्त सौख्य हेतु मैं।।3।।**

ॐ ह्रीं अनंतसौख्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो अनन्तवीर्यवान अंतराय को हने।**
**तिष्ठते अनन्तकाल श्रम नहीं कभी उन्हें।।**
**वे अनन्त शक्तियुक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।**
**पूजहूँ सदा तिन्हें अनन्त वीर्य हेतु मैं।।4।।**

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–*

**दश अतिशय जन्म समय से हों, दश केवलज्ञान उदय से हों।**
**देवोंकृत चौदह अतिशय हों, चौंतिस अतिशय सब मिलके हों।।**

**वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे, सु अनन्त चतुष्टय चार कहें।**
**इन छ्यालिस गुणयुत जिनवर को, हम पूजें वांछित सर्व लहें।।**

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणसंयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*तीर्थंकर के 18 दोष वर्जित का अर्घ्य*

*–पूर्णार्घ्य –*

**सब दोष अठारह ने जग में, सबको दुख दे दे वश्य किया।**
**इनसे बच सका नहीं कोई इन त्रिभुवन में अधिपत्य किया।।**
**जो इनको जीते वे जिनेन्द्र, सौ इंद्रों से वंदित जग में।**
**मैं पूजूँ उनको अर्घ चढ़ा, हर दोष भरें गुण वे मुझमें।।1।।**

ॐ ह्रीं अष्टादशमहादोषरहितश्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*भगवान पार्श्वनाथ के गणधरों का अर्घ्य*

**पार्श्वनाथ के दश गणधर गुरु चौंसठ ऋद्धि धरें हैं।**
**'प्रमुख स्वयंभू' गणधर उनमें स्वात्मपियूष भरे हैं।।**
**ये भव्यों के रोग शोक दुख दारिद कष्ट निवारें।**
**नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती देकर भव से तारें।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथतीर्थंकरस्यस्वयंभूप्रमुखदशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*श्री पार्श्वनाथ के समवसरण में 7 प्रकार के मुनियों के अर्घ्य*

*–शेर छंद –*

**श्री पार्श्वनाथ का समोशरण विशेष है।**
**मुनि तीन सौ पचास पूर्व धारि वेष हैं।।**
**मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आपको नमूँ।**
**संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य त्रयशतपंचाशत्पूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शिक्षक मुनीश दश हजार नौ शतक कहे।**
**उन पूजते भवीक जगत् अंत को लहें।।**



**मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आपको नमूँ।**
**संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य दशसहस्रनवशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चौदह शतक मुनीश अवधि ज्ञान को धरें।**
**उन पूजते भवीक भेद ज्ञान को धरें।।**
**मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आपको नमूँ।**
**संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य चतुर्दशशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुनि केवली हजार वहाँ शोभ रहे हैं।**
**उन दर्श मात्र से असंख्य पाप बहे हैं।।**
**मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आपको नमूँ।**
**संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य एकसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विक्रिय धरें मुनीश एक दो हजार हैं।**
**वे सर्व रिद्धि सिद्धि भरें बार-बार हैं।।**
**मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आपको नमूँ।**
**संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य एकसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुनिराज विपुलमती ज्ञानि सात सौ पचास।**
**जो पूजतें वे शीघ्र लहें ज्ञान का विकास।।**
**मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आपको नमूँ।**
**संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूँ।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य सप्तशतपंचाशत्विपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**छह सौ कहे वादी मुनीश वाद में कुशल।**
**उन पूजते संपूर्ण पाप का उदय विफल।।**

**मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आपको नमूँ।**
**संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूँ।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य षट्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–पूर्णार्घ्य-दोहा –*

**पार्श्वनाथ के पास में, सोलह सहस मुनीन्द्र।**
**मैं पूजूँ नित भाव से, मिले शीघ्र पद इंद्र।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य षोडशसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*श्री पार्श्वनाथ के समवसरण में आर्यिकाओं का अर्घ्य*

**श्री पार्श्वनाथ के निकट आर्यिका, अड़तिस सहस मान लीजे।**
**उनमें 'सुलोचना' गणिनी हैं, स्तुति से मन पवित्र कीजे।।**
**इनके गुण अमल वस्त्र उज्ज्वल, मन धवल शुक्ल लेश्या शोभें।**
**इनकी पूजा भक्ती करके, हम शिवपुर के सब सुख भोगें।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य सुलोचनाप्रमुखअष्टत्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*अथ पंचकल्याणक अर्घ्य*

**वंदन शत शत बार है,**
**पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।**
**जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।टेक.।।**

**अश्वसेन पितु वामा माता, तुमको पाकर धन्य हुए।**
**तिथि वैशाख वदी द्वितीया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।**
**प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।1।।**

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**वंदन शत शत बार है,**
**पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।**
**जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।**

**पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।**
**श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।**
**जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।**
**पार्श्वनाथ.।।2।।**

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वंदन शत शत बार है,**
**पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।**
**जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।**

**पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।**
**विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।**
**स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।3।।**

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वंदन शत शत बार है,**
**पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।**
**जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।**

**चैत्रवदी सुचतुर्थी प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।**
**कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।**

**जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।4।।**

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

**वंदन शत शत बार है,**
**पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।**
**जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।**

**श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।**
**मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।**
**सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।**
**पार्श्वनाथ.।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*भगवान पार्श्वनाथ के शासन देव का अर्घ्य*

*–दोहा–*

**समवसरण में पार्श्व के यक्ष रहें मातंग।**
**द्वितिय नाम धरणेन्द्र है, रहें भक्त के संग।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेव धरणेन्द्रयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

*भगवान पार्श्वनाथ की शासन देवी का अर्घ्य*

**माता 'पद्मावति' करें, पार्श्वनाथ गुणगान।**
**अर्घ समर्पण कर जजूँ, भरो सौख्य धनधान।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि! पद्मावतियक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।



# 1008 मंत्रों के 1008 अर्घ्य

*–शंभु छंद–*

**श्री पार्श्वनाथ के गुण अनंत, इस विध से मंत्र अनंते हैं।**
**शारद माँ कहने में अक्षम, गणधर भी नहिं कह सकते हैं।।**
**उनमें से अष्टोत्तर सहस्र, मंत्रों से अर्चन करते हैं।**
**उनमें से एक हि गुण मुझको, मिल जाय याचना करते हैं।।1।।**

*–दोहा–*

**गुणीजनों में गुण रहें, बिन आश्रय न वसंत।**
**गुणयुत नामों को यजत, गुणी स्वयं पूजंत।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं जिनगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं जिनराड्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं जिनपृष्ठगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तमगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
ॐ ह्रीं जिनाधिपगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
ॐ ह्रीं जिनाधीशगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
ॐ ह्रीं जिनस्वामिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।
ॐ ह्रीं जिनेश्वरगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।
ॐ ह्रीं जिननाथगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।
ॐ ह्रीं जिनपतिगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।
ॐ ह्रीं जिनराजगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।
ॐ ह्रीं जिनाधिराट्-गुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।
ॐ ह्रीं जिनप्रभुगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।
ॐ ह्रीं जिनविभुगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जिनभर्तृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।
ॐ ह्रीं जिनाधिभूगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।
ॐ ह्रीं जिननेतृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।
ॐ ह्रीं जिनेशानगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।
ॐ ह्रीं जिनेनगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।
ॐ ह्रीं जिननायकगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।
ॐ ह्रीं जिनेट्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।
ॐ ह्रीं जिनपरिवृढगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।
ॐ ह्रीं जिनदेवगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।
ॐ ह्रीं जिनेशितृगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।
ॐ ह्रीं जिनाधिराजगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।
ॐ ह्रीं जिनपगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।
ॐ ह्रीं जिनेशिगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।
ॐ ह्रीं जिनशासितृगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।
ॐ ह्रीं जिनाधिनाथगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।
ॐ ह्रीं जिनाधिपतिगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।
ॐ ह्रीं जिनपालकगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।
ॐ ह्रीं जिनचन्द्रगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।
ॐ ह्रीं जिनादित्यगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।
ॐ ह्रीं जिनार्कगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।
ॐ ह्रीं जिनकुंजरगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।
ॐ ह्रीं जिनेन्दुगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।
ॐ ह्रीं जिनधौरेयगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।
ॐ ह्रीं जिनधुर्यगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तरगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।
ॐ ह्रीं जिनवर्यगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।



ॐ ह्रीं जिनवरगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।
ॐ ह्रीं जिनसिंहगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।
ॐ ह्रीं जिनोद्वहगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।
ॐ ह्रीं जिनर्षभगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।
ॐ ह्रीं जिनवृषगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।
ॐ ह्रीं जिनरत्नगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।
ॐ ह्रीं जिनोरसगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।
ॐ ह्रीं जिनेशगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।
ॐ ह्रीं जिनशार्दूलगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।
ॐ ह्रीं जिनाग्र्यगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।
ॐ ह्रीं जिनपुंगवगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।
ॐ ह्रीं जिनहंसगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तंसगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।
ॐ ह्रीं जिननागगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रणीगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।
ॐ ह्रीं जिनप्रवेकगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।
ॐ ह्रीं जिनग्रामणीगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।
ॐ ह्रीं जिनसत्तमगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।
ॐ ह्रीं जिनप्रवर्हगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।
ॐ ह्रीं परमजिनगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।
ॐ ह्रीं जिनपुरोगमगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।
ॐ ह्रीं जिनश्रेष्ठगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।
ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।
ॐ ह्रीं जिनमुख्यगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रिमपदप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।
ॐ ह्रीं श्रीजिनगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं उत्तमजिनगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।
ॐ ह्रीं जिनवृंदारकगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।
ॐ ह्रीं अरिजिनगुणभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।
ॐ ह्रीं निर्विघ्नगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।
ॐ ह्रीं विरजोगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।
ॐ ह्रीं शुद्धगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।
ॐ ह्रीं निस्तमस्कगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।
ॐ ह्रीं निरंजनगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।
ॐ ह्रीं घातिकर्मान्तकगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।
ॐ ह्रीं कर्ममर्मावित्गुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।
ॐ ह्रीं कर्महन्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।
ॐ ह्रीं अनघगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।
ॐ ह्रीं वीतरागगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।
ॐ ह्रीं अक्षुध्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।
ॐ ह्रीं अद्वेषगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।
ॐ ह्रीं निर्मोहनगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।
ॐ ह्रीं निर्मदगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।
ॐ ह्रीं अगदगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।
ॐ ह्रीं वितृष्णगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।
ॐ ह्रीं निर्ममगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।
ॐ ह्रीं असंगगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।
ॐ ह्रीं निर्भयगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।
ॐ ह्रीं विस्मयगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।
ॐ ह्रीं अस्वप्नगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।
ॐ ह्रीं निःश्रमगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।
ॐ ह्रीं अजन्मागुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।



ॐ ह्रीं निःस्वेदगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।
ॐ ह्रीं निर्जरगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।
ॐ ह्रीं अमरगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।
ॐ ह्रीं अरत्यतीतगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।
ॐ ह्रीं निश्चिंतगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।
ॐ ह्रीं निर्विषादगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।
ॐ ह्रीं त्रिषष्टिकर्मप्रकृतिविनाशकाय त्रिषष्टिजिन्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

*–पूर्णार्घ्य–*

*तर्ज–मेरा नम्र प्रणाम है............*

**वंदन शत शत बार है........**
**तेइसवें श्री पार्श्व प्रभू को वंदन शत शत बार है।**
**जिनका नाम मंत्र जपने से होते भवदधि पार हैं।।**
**वंदन शत शत बार है।।1।।**

**द्विविधरत्नत्रय धारण करके धरा दिगम्बर वेष है।**
**आत्मध्यान पीयूष पान कर हरा मृत्यु का क्लेश है।।**
**विविध तपश्चर्या कर करके भरा सुगुण भंडार है।**
**तेइसवें...................।।2।।**

**कर्म शत्रुजित् 'जिन' कहलाये, जैनधर्म के प्राण हैं।**
**त्रेसठ प्रकृती नाश 'त्रिषष्टीजित्' मुनिगण से मान्य हैं।।**
**अतिशय श्रेष्ठ गुणों के स्वामी, बने मुक्ति भरतार हैं।**
**तेइसवें...................।।3।।**

ॐ ह्रीं जिनादित्रिषष्टिजित्गुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–सोरठा –*

**गुण अनंत भंडार, नाम असंख्यों धारते।**
**स्वात्म सौख्य कर्तार, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं सर्वज्ञगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।
ॐ ह्रीं सर्वविन्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।
ॐ ह्रीं सर्वदर्शिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।
ॐ ह्रीं सर्वावलोकनगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।
ॐ ह्रीं अनन्तविक्रमगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।
ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।
ॐ ह्रीं अनन्तसुखात्मकगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।
ॐ ह्रीं अनन्तसौख्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।
ॐ ह्रीं विश्वज्ञगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।
ॐ ह्रीं विश्वदृश्वागुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।
ॐ ह्रीं अखिलार्थदृग्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।
ॐ ह्रीं न्यक्षदृङ्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।
ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।
ॐ ह्रीं विश्वचक्षुर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।
ॐ ह्रीं अशेषविन्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।
ॐ ह्रीं आनंदगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।
ॐ ह्रीं परमानन्दगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।
ॐ ह्रीं सदानन्दगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।
ॐ ह्रीं सदोदयगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।
ॐ ह्रीं नित्यानन्दगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।
ॐ ह्रीं महानन्दगुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।
ॐ ह्रीं परानन्दगुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।



ॐ ह्रीं परोदयगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।
ॐ ह्रीं परमोजगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।
ॐ ह्रीं परंतेजोगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।
ॐ ह्रीं परंधामगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।
ॐ ह्रीं परंमहोगुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।
ॐ ह्रीं प्रत्यग्ज्योतिर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।
ॐ ह्रीं परंज्योतिर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।
ॐ ह्रीं परंब्रह्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।
ॐ ह्रीं परंरहोगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।
ॐ ह्रीं प्रत्यगात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।
ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।
ॐ ह्रीं महात्मगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।
ॐ ह्रीं आत्ममहोदयगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।
ॐ ह्रीं परमात्मगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।
ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।
ॐ ह्रीं परमात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।
ॐ ह्रीं आत्मनिकेतनगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।
ॐ ह्रीं परमेष्ठिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।
ॐ ह्रीं महिष्ठात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।
ॐ ह्रीं श्रेष्ठात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।
ॐ ह्रीं स्वात्मनिष्ठितगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।
ॐ ह्रीं महानिष्ठगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।
ॐ ह्रीं निरूढात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।
ॐ ह्रीं दृढात्मदृङ्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।
ॐ ह्रीं एकविद्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

ॐ ह्रीं महाविद्यगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वरगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं सार्वगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं स्वभूगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

ॐ ह्रीं अनन्तधीगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं अनन्तात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं अनन्तशक्तिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं अनन्तदृङ्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं अनन्तानंतधीशक्तिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं अनन्तचिद्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं अनन्तमुद्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं सदाप्रकाशगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसाक्षात्कारिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं समग्रधीगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं कर्मसाक्षिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं जगत्चक्षुर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं अलक्ष्यात्मगुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं अचलस्थितिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं निराबाधगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।171।।

ॐ ह्रीं विदांवरगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।172।।

ॐ ह्रीं भूतात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।173।।

ॐ ह्रीं सहजज्योतिर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।174।।



ॐ ह्रीं विश्वज्योतिर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।175।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।176।।

ॐ ह्रीं केवलिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।177।।

ॐ ह्रीं केवलालोकगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।178।।

ॐ ह्रीं लोकालोकविलोकनगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।179।।

ॐ ह्रीं विविक्तगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।180।।

ॐ ह्रीं केवलगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।181।।

ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।182।।

ॐ ह्रीं शरण्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।183।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।184।।

ॐ ह्रीं विश्वभृद्गुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।185।।

ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।186।।

ॐ ह्रीं विश्वात्मगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।187।।

ॐ ह्रीं विश्वतोमुखगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।188।।

ॐ ह्रीं विश्वव्यापिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।189।।

ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिर्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।190।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।191।।

ॐ ह्रीं अमितप्रभागुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।192।।

ॐ ह्रीं महौदार्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।193।।

ॐ ह्रीं महाबोधिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।194।।

ॐ ह्रीं महालाभगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।195।।

ॐ ह्रीं महोदयगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।196।।

ॐ ह्रीं महोपभोगगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।197।।

ॐ ह्रीं सुगतिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।198।।

ॐ ह्रीं महाभोगगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।199।।

ॐ ह्रीं महाबलगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।200।।

*–पूर्णार्घ्य –*

**नाथ! आपको अर्घ्य चढ़ाकर, शीश झुकाकर नमन करें।**
**मन मंदिर का मोह अंधेरा, दूर भगाकर ज्ञान भरें।।**
**जय जय पार्श्व जिनम्, बोलो जय जय पार्श्व जिनम्।।टेक.।।**
**हृदय कमल में आप विराजो, सब दुख संकट दूर करो।**
**परमानंद सुखामृत देकर, प्रभु मुझको संतुष्ट करो।।**
**इसीलिए प्रभु पार्श्व तुम्हारे चरणों में हम नमन करें।**
**मन मंदिर का मोह अंधेरा दूर भगाकर ज्ञान भरें।।**
**जय जय पार्श्व जिनम्-2। वंदे पार्श्व जिनम्-3।।201।।**

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञादिमहाबलगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा–*

**गुण अनंत के तुम धनी, मुक्तिपुरी के नाथ!।**
**पुष्पांजलि से पूजहूँ, नमूँ नमाकर माथ।।1।।**

***अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।***

ॐ ह्रीं यज्ञार्हगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।201।।
ॐ ह्रीं भगवद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।202।।
ॐ ह्रीं अर्हद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।203।।
ॐ ह्रीं महार्हगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।204।।
ॐ ह्रीं मघवार्चितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।205।।
ॐ ह्रीं भूतार्थयज्ञपुरुषगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।206।।
ॐ ह्रीं भूतार्थक्रतुपुरुषगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।207।।
ॐ ह्रीं पूज्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।208।।
ॐ ह्रीं भट्टारकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।209।।
ॐ ह्रीं तत्रभवान्नामसार्थकगुणयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।210।।



ॐ ह्रीं अत्रभवान्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।211।।
ॐ ह्रीं महान्नामसार्थकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।212।।
ॐ ह्रीं महामहार्हगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।213।।
ॐ ह्रीं तत्रायुर्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।214।।
ॐ ह्रीं दीर्घायुर्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।215।।
ॐ ह्रीं अर्घ्यवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।216।।
ॐ ह्रीं आराध्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।217।।
ॐ ह्रीं परमाराध्य-गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।218।।
ॐ ह्रीं पंचकल्याणपूजितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।219।।
ॐ ह्रीं दृग्विशुद्धिगणोदग्रगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।220।।
ॐ ह्रीं वसुधारार्चितास्पदगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।221।।
ॐ ह्रीं सुस्वप्नदर्शिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।222।।
ॐ ह्रीं दिव्यौजस्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।223।।
ॐ ह्रीं शचीसेवितमातृकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।224।।
ॐ ह्रीं रत्नगर्भगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।225।।
ॐ ह्रीं श्रीपूतगर्भगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।226।।
ॐ ह्रीं गर्भोत्सवोच्छ्रितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।227।।
ॐ ह्रीं दिव्योपचारोपचितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।228।।
ॐ ह्रीं पद्मभूसार्थकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।229।।
ॐ ह्रीं निष्कलगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।230।।
ॐ ह्रीं स्वजगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।231।।
ॐ ह्रीं सर्वीयजन्मगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।232।।
ॐ ह्रीं पुण्यांगगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।233।।
ॐ ह्रीं भास्वद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।234।।
ॐ ह्रीं उद्भूतदैवतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।235।।
ॐ ह्रीं विश्वविज्ञातसंभूतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।236।।

ॐ ह्रीं विश्वदेवागमाद्भुतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।237।।
ॐ ह्रीं शचीसृष्टप्रतिच्छन्दगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।238।।
ॐ ह्रीं सहस्राक्षदृगुत्सवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।239।।
ॐ ह्रीं नृत्यदैरावतासीनगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।240।।
ॐ ह्रीं सर्वशक्रनमस्कृतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।241।।
ॐ ह्रीं हर्षाकुलामरखगगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।242।।
ॐ ह्रीं चारणर्षिमतोत्सवगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।243।।
ॐ ह्रीं व्योमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।244।।
ॐ ह्रीं विष्णुपदारक्षगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।245।।
ॐ ह्रीं स्नानपीठायिताद्रिराट्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।246।।
ॐ ह्रीं तीर्थेशंमन्यदुग्धाब्धिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।247।।
ॐ ह्रीं स्नानाम्बुस्नातवासवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।248।।
ॐ ह्रीं गन्धाम्बुपूतत्रैलोक्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।249।।
ॐ ह्रीं वज्रसूचीशुचिश्रवस्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।250।।
ॐ ह्रींकृतार्थितशचीहस्तगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।251।।
ॐ ह्रीं शक्रोद्घुष्टेष्टनामकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।252।।
ॐ ह्रीं शक्रारब्धानन्दनृत्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।253।।
ॐ ह्रीं शचीविस्मापिताम्बिकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।254।।
ॐ ह्रीं इन्द्रनृत्यन्तपितृकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।255।।
ॐ ह्रीं रैदपूर्णमनोरथगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।256।।
ॐ ह्रीं आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।257।।
ॐ ह्रीं देवर्षीष्टशिवोद्यमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।258।।
ॐ ह्रीं दीक्षाक्षणक्षुब्धजगन्नामगुणालंकृताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।259।।
ॐ ह्रीं भूर्भुवःस्वःपतीडितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।260।।
ॐ ह्रीं कुबेरनिर्मितास्थानगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।261।।
ॐ ह्रीं श्रीयुक्-गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।262।।



ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।263।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मेड्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।264।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मविद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।265।।
ॐ ह्रीं वेद्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।266।।
ॐ ह्रीं याज्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।267।।
ॐ ह्रीं यज्ञपतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।268।।
ॐ ह्रीं क्रतुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।269।।
ॐ ह्रीं यज्ञांगगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।270।।
ॐ ह्रीं अमृतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।271।।
ॐ ह्रीं यज्ञगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।272।।
ॐ ह्रीं हविगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।273।।
ॐ ह्रीं स्तुत्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।274।।
ॐ ह्रीं स्तुतीश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।275।।
ॐ ह्रीं भावनागुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।276।।
ॐ ह्रीं महामहपतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।277।।
ॐ ह्रीं महायज्ञगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।278।।
ॐ ह्रीं अग्रयाजकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।279।।
ॐ ह्रीं दयायागगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।280।।
ॐ ह्रीं जगत्पूज्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।281।।
ॐ ह्रीं पूजार्हगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।282।।
ॐ ह्रीं जगदर्चितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।283।।
ॐ ह्रीं देवाधिदेवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।284।।
ॐ ह्रीं शक्रार्च्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।285।।
ॐ ह्रीं देवदेवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।286।।
ॐ ह्रीं जगद्गुरुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।287।।
ॐ ह्रीं संहूतदेवसंघार्च्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।288।।

ॐ ह्रीं पद्मयानगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।289।।
ॐ ह्रीं जयध्वजिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।290।।
ॐ ह्रीं भामंडलीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।291।।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।292।।
ॐ ह्रीं देवदुंदुभिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।293।।
ॐ ह्रीं वागस्पृष्टासनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।294।।
ॐ ह्रीं छत्रत्रयराट्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।295।।
ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिभाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।296।।
ॐ ह्रीं दिव्याशोकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।297।।
ॐ ह्रीं मानमर्दिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।298।।
ॐ ह्रीं संगीतार्हगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।299।।
ॐ ह्रीं अष्टमंगलगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।300।।

*–पूर्णार्घ्य –*

*तर्ज –सद्राह पे जीवन नैया लगा...........*

**पारस के गुणों को गाते चलो, मनवांछित फल पा जावोगे।**
**भक्ती से अर्घ्य चढ़ाते चलो, धन सुख संपति पा जावोगे।।**
**इंद्रों से पूजा योग्य आप, यज्ञार्ह नाम को प्राप्त हुए।**
**इन प्रभु को अपना मान चलो, जिनगुणसंपद् पा जावोगे।।1।।**
**पारस.........**
**मंगलद्रव्यों से पूज्य 'अष्ट मंगल' गुण आदिक प्राप्त किए।**
**इन पार्श्वनाथ प्रभु को भज लो, निजआतम सुख पा जावोगे।।**
**पारस............।।2।।**

ॐ ह्रीं यज्ञार्हादि-अष्टमंगल गुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**



*–दोहा –*

**जन्म मरण व्याधी महा, उसके नाशन हेतु।**
**आप भिषग्वर विश्व में, नमूँ नमूँ शिव हेतु।।1।।**

*अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं तीर्थकृद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।301।।
ॐ ह्रीं तीर्थसृट्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।302।।
ॐ ह्रीं तीर्थकरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।303।।
ॐ ह्रीं तीर्थंकरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।304।।
ॐ ह्रीं सुदृक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।305।।
ॐ ह्रीं तीर्थकर्तृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।306।।
ॐ ह्रीं तीर्थभर्तृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।307।।
ॐ ह्रीं तीर्थेशगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।308।।
ॐ ह्रीं तीर्थनायकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।309।।
ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकरविभवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।310।।
ॐ ह्रीं तीर्थप्रणेतृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।311।।
ॐ ह्रीं तीर्थकारकगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।312।।
ॐ ह्रीं तीर्थप्रवर्तकगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।313।।
ॐ ह्रीं तीर्थवेधस्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।314।।
ॐ ह्रीं तीर्थविधायकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।315।।
ॐ ह्रीं सत्यतीर्थकरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।316।।
ॐ ह्रीं तीर्थसेव्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।317।।
ॐ ह्रीं तैर्थिकतारकपदसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।318।।
ॐ ह्रीं सत्यवाक्याधिपगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।319।।
ॐ ह्रीं सत्यशासनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।320।।
ॐ ह्रीं अप्रतिशासनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।321।।
ॐ ह्रीं स्याद्वादिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।322।।

ॐ ह्रीं दिव्यगीर्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।323।।
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।324।।
ॐ ह्रीं अव्याहतार्थवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।325।।
ॐ ह्रीं पुण्यवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।326।।
ॐ ह्रीं अर्थ्यवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।327।।
ॐ ह्रीं अर्धमागधीयोक्तिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।328।।
ॐ ह्रीं इद्धवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।329।।
ॐ ह्रीं अनेकान्तदिक्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।330।।
ॐ ह्रीं एकांतध्वांतभिद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।331।।
ॐ ह्रीं दुर्णयान्तकृद्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।332।।
ॐ ह्रीं सार्थवाक्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।333।।
ॐ ह्रीं अप्रत्यनोक्तिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।334।।
ॐ ह्रीं प्रतितीर्थमदघ्नवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।335।।
ॐ ह्रीं स्यात्कारध्वजवाग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।336।।
ॐ ह्रीं ईहापेतवाग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।337।।
ॐ ह्रीं अचलौष्ठवाग्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।338।।
ॐ ह्रीं अपौरुषेयवाक्शास्तृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।339।।
ॐ ह्रीं रुद्धवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।340।।
ॐ ह्रीं सप्तभंगिवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।341।।
ॐ ह्रीं अवर्णगीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।342।।
ॐ ह्रीं सर्वभाषामयगीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।343।।
ॐ ह्रीं व्यक्तवर्णगीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।344।।
ॐ ह्रीं अमोघवाग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।345।।
ॐ ह्रीं अक्रमवाग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।346।।
ॐ ह्रीं अवाच्यानन्तवाग्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।347।।
ॐ ह्रीं अवाग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।348।।



ॐ ह्रीं अद्वैतगीगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।349।।
ॐ ह्रीं सूनृतगीर्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।350।।
ॐ ह्रीं सत्यानुभयगीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।351।।
ॐ ह्रीं सुगीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।352।।
ॐ ह्रीं योजनव्यापिगीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।353।।
ॐ ह्रीं क्षीरगौरगीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।354।।
ॐ ह्रीं तीर्थकृत्वगीगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।355।।
ॐ ह्रीं भव्यैकश्रव्यगुनामगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।356।।
ॐ ह्रीं सद्गुनामगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।357।।
ॐ ह्रीं चित्रगु[1]नामगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।358।।
ॐ ह्रीं परमार्थगु[2]नामगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।359।।
ॐ ह्रीं प्रशान्तगु[3]नामगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।360।।
ॐ ह्रीं प्राश्निकगुनामवचनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।361।।
ॐ ह्रीं सुगुनमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।362।।
ॐ ह्रीं नियतकालगुनामगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।363।।
ॐ ह्रीं सुश्रुतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।364।।
ॐ ह्रीं सुश्रुतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।365।।
ॐ ह्रीं याज्यश्रुतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।366।।
ॐ ह्रीं सुश्रुन्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।367।।
ॐ ह्रीं महाश्रुतिगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।368।।
ॐ ह्रीं धर्मश्रुतिगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।369।।
ॐ ह्रीं श्रुतिपतिगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।370।।
ॐ ह्रीं श्रुत्युद्धर्तुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।371।।
ॐ ह्रीं ध्रुवश्रुतिगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।372।।
ॐ ह्रीं निर्वाणमार्गदिग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।373।।
ॐ ह्रीं मार्गदेशकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।374।।

1-2-3. गु – वाणी-किरण आदि।

ॐ ह्रीं सर्वमार्गदिग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।375।।
ॐ ह्रीं सारस्वतपथगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।376।।
ॐ ह्रीं तीर्थपरमोत्तमतीर्थकृत्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।377।।
ॐ ह्रीं देष्टृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।378।।
ॐ ह्रीं वाग्मीश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।379।।
ॐ ह्रीं धर्मशासकगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।380।।
ॐ ह्रीं धर्मदेशकगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।381।।
ॐ ह्रीं वागीश्वरगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।382।।
ॐ ह्रीं त्रयीनाथगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।383।।
ॐ ह्रीं त्रिभंगीशगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।384।।
ॐ ह्रीं गिरांपतिगुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।385।।
ॐ ह्रीं सिद्धज्ञगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।386।।
ॐ ह्रीं सिद्धवाग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।387।।
ॐ ह्रीं आज्ञासिद्धगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।388।।
ॐ ह्रीं सिद्धैकशासनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।389।।
ॐ ह्रीं जगत्प्रसिद्धसिद्धान्तगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।390।।
ॐ ह्रीं सिद्धमंत्रगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।391।।
ॐ ह्रीं सुसिद्धवाक्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।392।।
ॐ ह्रीं शुचिश्रवस्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।393।।
ॐ ह्रीं निरूक्तोक्तिगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।394।।
ॐ ह्रीं तंत्रकृन्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।395।।
ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृन्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।396
ॐ ह्रीं महिष्ठवाग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।397।।
ॐ ह्रीं महानादगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।398।।
ॐ ह्रीं कवीन्द्रगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।399।।
ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।400।।



*–पूर्णार्घ्य –*

*तर्ज –गोमटेश, जय गोमटेश.....*

**पार्श्वनाथ, जय पार्श्वनाथ, मम हृदय विराजो....2।।**
**हम यही भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।**
**हो नगर नगर में प्रभु भक्ती, सारे जग में शुभ मंगल हो।।**
**हम..........।।1।।**

**जो धर्म तीर्थ को करते हैं, वे प्रभो! ''तीर्थकृत्'' कहलाते।**
**देवों द्वारा दुंदुभि बजते, 'दुंदुभिस्वन' नाम अतः पाते।।**
**इन पारस को वंदन करते, मेरा जीवन भी उज्ज्वल हो।।**
**हम...........।।2।।**

**जो प्रभु की पूजा करते हैं, वे नर भव पावन करते हैं।**
**लौकिक संपति सुख पाकर के, निज आत्म निधी को वरते हैं।।**
**इन पार्श्व प्रभू की भक्ती से, मेरा मन अतिशय उज्ज्वल हो।।**
**हम...........।।3।।**

ॐ ह्रीं तीर्थकृदादिदुंदुभिस्वनगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–सोरठा –*

**जिनवर गुणमणि तेज, सर्व लोक में व्यापता।**
**हो मुझ ज्ञान विशेष, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं नाथगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।401।।
ॐ ह्रीं पतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।402।।
ॐ ह्रीं परिवृढगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।403।।
ॐ ह्रीं स्वामिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।404।।
ॐ ह्रीं भर्तृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।405।।
ॐ ह्रीं विभुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।406।।

ॐ ह्रीं प्रभुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।407।।
ॐ ह्रीं ईश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।408।।
ॐ ह्रीं अधीश्वरगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।409।।
ॐ ह्रीं अधीशगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।410।।
ॐ ह्रीं अधीशानगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।411।।
ॐ ह्रीं अधीशितृगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।412।।
ॐ ह्रीं ईशितृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।413।।
ॐ ह्रीं ईशगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।414।।
ॐ ह्रीं अधिपतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।415।।
ॐ ह्रीं ईशानगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।416।।
ॐ ह्रीं इनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।417।।
ॐ ह्रीं इन्द्रगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।418।।
ॐ ह्रीं अधिपगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।419।।
ॐ ह्रीं अधिभूगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।420।।
ॐ ह्रीं महेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।421।।
ॐ ह्रीं महेशानगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।422।।
ॐ ह्रीं महेशगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।423।।
ॐ ह्रीं महेशितृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।424।।
ॐ ह्रीं अधिदेवगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।425।।
ॐ ह्रीं महादेवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।426।।
ॐ ह्रीं देवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।427।।
ॐ ह्रीं त्रिभुवनेश्वरगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।428।।
ॐ ह्रीं विश्वेशगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।429।।
ॐ ह्रीं विश्वभूतेशगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।430।।
ॐ ह्रीं विश्वेट्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।431।।
ॐ ह्रीं विश्वेश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।432।।



ॐ ह्रीं अधिराट्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।433।।
ॐ ह्रीं लोकेश्वरगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।434।।
ॐ ह्रीं लोकपतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।435।।
ॐ ह्रीं लोकनाथगुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।436।।
ॐ ह्रीं जगत्पतिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।437।।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।438।।
ॐ ह्रीं लोकेशगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।439।।
ॐ ह्रीं जगन्नाथगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।440।।
ॐ ह्रीं जगत्प्रभुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।441।।
ॐ ह्रीं पितृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।442।।
ॐ ह्रीं परापरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।443।।
ॐ ह्रीं परतरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।444।।
ॐ ह्रीं जेतृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।445।।
ॐ ह्रीं जिष्णुगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।446।।
ॐ ह्रीं कश्चिदीश्वरगुणविरहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।447।।
ॐ ह्रीं कर्तृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।448।।
ॐ ह्रीं प्रभूष्णुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।449।।
ॐ ह्रीं भ्राजिष्णुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।450।।
ॐ ह्रीं प्रभविष्णुगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।452।।
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।452।।
ॐ ह्रीं लोकजिद्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।453।।
ॐ ह्रीं विश्वजिद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।454।।
ॐ ह्रीं विश्वविजेतृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।455।।
ॐ ह्रीं विश्वजित्वरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।456।।
ॐ ह्रीं जगज्जेतृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।457।।
ॐ ह्रीं जगज्जैत्रगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।458।।

ॐ ह्रीं जगज्जिष्णुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।459।।
ॐ ह्रीं जगज्जयिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।460।।
ॐ ह्रीं अग्रणीगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।461।।
ॐ ह्रीं ग्रामणीगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।462।।
ॐ ह्रीं नेतृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।463।।
ॐ ह्रीं भूर्भुवः-स्वरधीश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।464।।
ॐ ह्रीं धर्मनायकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।465।।
ॐ ह्रीं ऋद्धीशगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।466।।
ॐ ह्रीं भूतनाथगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।467।।
ॐ ह्रीं भूतभृद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।468।।
ॐ ह्रीं गतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।469।।
ॐ ह्रीं पातृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।470।।
ॐ ह्रीं वृषगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।471।।
ॐ ह्रीं वर्यगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।472।।
ॐ ह्रीं मंत्रकृद्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।473।।
ॐ ह्रीं शुभलक्षणगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।474।।
ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।475।।
ॐ ह्रीं दुराधर्षगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।476।।
ॐ ह्रीं भव्यबन्धुगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।477।।
ॐ ह्रीं निरुत्सुकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।478।।
ॐ ह्रीं धीरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।479।।
ॐ ह्रीं जगद्धितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।480।।
ॐ ह्रीं अजय्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।481।।
ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।482।।
ॐ ह्रीं विश्वासिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।483।।



ॐ ह्रीं सर्वलोकेशगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।484।।
ॐ ह्रीं विभवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।485।।
ॐ ह्रीं भुवनेश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।486।।
ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।487।।
ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।488।।
ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।489।।
ॐ ह्रीं सद्योजातगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।490।।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यमंगलगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।491।।
ॐ ह्रीं वरदगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।492।।
ॐ ह्रीं अप्रतिघगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।493।।
ॐ ह्रीं अछेद्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।494।।
ॐ ह्रीं दृढीयस्-गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।495।।
ॐ ह्रीं अभयंकरगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।496।।
ॐ ह्रीं महाभागगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।497।।
ॐ ह्रीं निरौपम्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।498।।
ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।499।।
ॐ ह्रीं धर्मतीर्थनायकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।500

*–पूर्णार्घ्य–*

*तर्ज –भक्तामरगीता........*

**पार्श्वनाथ तीर्थंकर प्रभु को, झुक झुक शीश नमाते हैं।**
**गुण अनंत के धारी प्रभु की, पूजा कर हर्षाते हैं।।1।।**

**जल गंधादिक अर्घ्य लिये, स्वर्णपुष्प बहु मिला लिये।**
**प्रभु को अर्घ्य चढ़ायेंगे, रत्नत्रयनिधि पायेंगे।।2।।**

**रत्न अनर्घ्य बहुत जग में, उनसे तृप्ति न हो मन में।**
**प्रभु पूजा अतिशयकारी, इस सम पुण्य न हो भारी।।3।।**

**गणधर वंदित पार्श्व प्रभू के, पावन गुण को गाते हैं।**
**ये ही गुण मुझमें प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।4।।**

ॐ ह्रीं नाथगुणादिधर्मतीर्थनायकगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–सोरठा –*

**महापुण्य फल राशि, तीर्थंकर प्रकृति यहाँ।**
**मिले सर्वसुख राशि, पुष्पांजलि से पूजते।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं योगिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।501।।
ॐ ह्रीं प्रव्यक्तनिर्वेदगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।502।।
ॐ ह्रीं साम्यारोहणतत्परगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।503।।
ॐ ह्रीं सामयिकिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।504।।
ॐ ह्रीं सामायिकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।505।।
ॐ ह्रीं निःप्रमादगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।506।।
ॐ ह्रीं अप्रतिक्रमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।507।।
ॐ ह्रीं यमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।508।।
ॐ ह्रीं प्रधाननियमगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।509।।
ॐ ह्रीं स्वभ्यस्तपरमासनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।510।।
ॐ ह्रीं प्राणायामचणगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।511।।
ॐ ह्रीं सिद्धप्रत्याहारगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।512।।
ॐ ह्रीं जितेन्द्रियगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।513।।
ॐ ह्रीं धारणाधीश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।514।।
ॐ ह्रीं धर्मध्याननिष्ठगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।515।।
ॐ ह्रीं समाधिराट्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।516।।
ॐ ह्रीं स्फुरत्समरसीभावगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।517।।



ॐ ह्रीं एकाकिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।518।।
ॐ ह्रीं करणनायकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।519।।
ॐ ह्रीं निर्ग्रंथनाथगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।520।।
ॐ ह्रीं योगीन्द्रगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।521।।
ॐ ह्रीं ऋषिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।522।।
ॐ ह्रीं साधुगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।523।।
ॐ ह्रीं यतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।524।।
ॐ ह्रीं मुनिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।525।।
ॐ ह्रीं महर्षिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।526।।
ॐ ह्रीं साधुधौरेयगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।527।।
ॐ ह्रीं यतिनाथगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।528।।
ॐ ह्रीं महामुनिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।529।।
ॐ ह्रीं महामुनीश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।530।।
ॐ ह्रीं महामौनिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।531।।
ॐ ह्रीं महाध्यानिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।532।।
ॐ ह्रीं महाव्रतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।533।।
ॐ ह्रीं महाक्षमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।534।।
ॐ ह्रीं महाशीलगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।535।।
ॐ ह्रीं महाशान्तगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।536।।
ॐ ह्रीं महादमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।537।।
ॐ ह्रीं निर्लेपगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।538।।
ॐ ह्रीं निर्भ्रमस्वान्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।539।।
ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।540।।
ॐ ह्रीं दयाध्वजगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।541।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।542।।
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।543।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मज्ञगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।544।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वविद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।545।।
ॐ ह्रीं पूतात्मगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।546।।
ॐ ह्रीं स्नातकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।547।।
ॐ ह्रीं दान्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।548।।
ॐ ह्रीं भदन्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।549।।
ॐ ह्रीं वीतमत्सरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।550।।
ॐ ह्रीं धर्मवृक्षायुधगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।551।।
ॐ ह्रीं अक्षोभ्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।552।।
ॐ ह्रीं प्रपूतात्मगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।553।।
ॐ ह्रीं अमृतोद्भवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।554।।
ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।555।।
ॐ ह्रीं स्वसौम्यात्मगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।556।।
ॐ ह्रीं स्वतंत्रगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।557।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।558।।
ॐ ह्रीं सुप्रसन्नगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।559।।
ॐ ह्रीं गुणाम्भोधिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।560।।
ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।561।।
ॐ ह्रीं सुसंवृतगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।562।।
ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।563।।
ॐ ह्रीं सिद्धात्मपदप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।564।।
ॐ ह्रीं निरूपप्लवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।565।।
ॐ ह्रीं महोदर्कगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।566।।
ॐ ह्रीं महोपायगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।567।।
ॐ ह्रीं जगदेकपितामहगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।568।।
ॐ ह्रीं परमकारुणिकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।569।।



ॐ ह्रीं गुण्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।570।।
ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।571।।
ॐ ह्रीं शुचिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।572।।
ॐ ह्रीं अरिंजयगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।573।।
ॐ ह्रीं सदायोगगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।574।।
ॐ ह्रीं सदाभोगगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।575।।
ॐ ह्रीं सदाधृतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।576।।
ॐ ह्रीं परमौदासितृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।577।।
ॐ ह्रीं अनाश्वान्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।578।।
ॐ ह्रीं सत्याशीःगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।579।।
ॐ ह्रीं शान्तनायकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।580।।
ॐ ह्रीं अपूर्ववैद्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।581।।
ॐ ह्रीं योगज्ञगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।582।।
ॐ ह्रीं धर्ममूर्तिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।583।।
ॐ ह्रीं अधर्मधग्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।584।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मेड्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।585।।
ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।586।।
ॐ ह्रीं कृतकृत्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।587।।
ॐ ह्रीं कृतक्रतुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।588।।
ॐ ह्रीं गुणाकरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।589।।
ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।590।।
ॐ ह्रीं निर्निमेषगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।591।।
ॐ ह्रीं निराश्रयगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।592।।
ॐ ह्रीं सूरिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।593।।
ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वज्ञगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।594।।
ॐ ह्रीं महामैत्रीमयगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।595।।

ॐ ह्रीं शमिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।596।।
ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।597।।
ॐ ह्रीं निर्द्वन्द्वगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।598।।
ॐ ह्रीं महर्षिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।599।।
ॐ ह्रीं अनन्तगगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।600।।

*–पूर्णार्घ्य-गीताछंद –*

**हे पार्श्वनाथ जिनेन्द्र!, वृद्धिंगत गुणों के नाथ हो।**
**सौ इन्द्र नितप्रति भक्ति श्रद्धा, से नमाते माथ को।।**
**निज आत्म का दर्शन कराया, पथ दिखाया विश्व को।**
**पूर्णार्घ्य से हम पूजते, निज आत्म संपति प्राप्त हो।।**

ॐ ह्रीं योगिगुणादिअनंतगगुणपर्यंतशतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**तीर्थंकर गुण अर्चना, भरे स्वात्म विज्ञान।**
**रोग शोक दुःख वंचना, करके करे महान्।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं निर्वाणगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।601।।
ॐ ह्रीं सागरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।602।।
ॐ ह्रीं महासाधुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।603।।
ॐ ह्रीं विमलाभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।604।।
ॐ ह्रीं शुद्धाभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।605।।
ॐ ह्रीं श्रीधरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।606।।
ॐ ह्रीं दत्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।607।।
ॐ ह्रीं अमलाभगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।608।।
ॐ ह्रीं उद्धरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।609।।



ॐ ह्रीं अग्निगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।610।।
ॐ ह्रीं संयमगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।611।।
ॐ ह्रीं शिवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।612।।
ॐ ह्रीं पुष्पांजलिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।613।।
ॐ ह्रीं शिवगणगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।614।।
ॐ ह्रीं उत्साहगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।615।।
ॐ ह्रीं ज्ञानगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।616।।
ॐ ह्रीं परमेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।617।।
ॐ ह्रीं विमलेशगुणसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।618।।
ॐ ह्रीं यशोधरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।619।।
ॐ ह्रीं कृष्णगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।620।।
ॐ ह्रीं ज्ञानमतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।621।।
ॐ ह्रीं शुद्धमतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।622।।
ॐ ह्रीं श्रीभद्रगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।623।।
ॐ ह्रीं शान्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।624।।
ॐ ह्रीं वृषभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।625।।
ॐ ह्रीं अजितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।626।।
ॐ ह्रीं संभवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।627।।
ॐ ह्रीं अभिनंदनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।628।।
ॐ ह्रीं सुमतिगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।629।।
ॐ ह्रीं पद्मप्रभगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।630।।
ॐ ह्रीं सुपार्श्वगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।631।।
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।632।।
ॐ ह्रीं पुष्पदंतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।633।।
ॐ ह्रीं शीतलगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।634।।
ॐ ह्रीं श्रेयान्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।635।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।636।।
ॐ ह्रीं विमलगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।637।।
ॐ ह्रीं अनन्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।638।।
ॐ ह्रीं धर्मगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।639।।
ॐ ह्रीं शान्तिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।640।।
ॐ ह्रीं कुंथुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।641।।
ॐ ह्रीं अरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।642।।
ॐ ह्रीं मल्लिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।643।।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।644।।
ॐ ह्रीं नमिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।645।।
ॐ ह्रीं नेमिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।646।।
ॐ ह्रीं पार्श्वगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।647।।
ॐ ह्रीं वर्धमानगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।648।।
ॐ ह्रीं महावीरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।649।।
ॐ ह्रीं सुवीरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।650।।
ॐ ह्रीं सन्मतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।651।।
ॐ ह्रीं महतिमहावीरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।652।।
ॐ ह्रीं महापद्मगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।653।।
ॐ ह्रीं सूरदेवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।654।।
ॐ ह्रीं सुप्रभगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।655।।
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।656।।
ॐ ह्रीं सर्वायुधगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।657।।
ॐ ह्रीं जयदेवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।658।।
ॐ ह्रीं उदयदेवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।659।।
ॐ ह्रीं प्रभादेवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।660।।
ॐ ह्रीं उदंकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।661।।



ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।662।।
ॐ ह्रीं जयगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।663।।
ॐ ह्रीं पूर्वबुद्धिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।664।।
ॐ ह्रीं निष्कषायगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।665।।
ॐ ह्रीं विमलप्रभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।666।।
ॐ ह्रीं बहलगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।667।।
ॐ ह्रीं निर्मलगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।668।।
ॐ ह्रीं चित्रगुप्तगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।669।।
ॐ ह्रीं समाधिगुप्तगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।670।।
ॐ ह्रीं स्वयंभूगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।671।।
ॐ ह्रीं कंदर्पगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।672।।
ॐ ह्रीं जयनाथगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।673।।
ॐ ह्रीं श्रीविमलगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।674।।
ॐ ह्रीं दिव्यवादगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।675।।
ॐ ह्रीं अनंतवीरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।676।।
ॐ ह्रीं पुरुदेवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।677।।
ॐ ह्रीं सुविधिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।678।।
ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।679।।
ॐ ह्रीं अव्ययगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।680।।
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।681।।
ॐ ह्रीं धर्मसारथिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।682।।
ॐ ह्रीं शिवकीर्तनगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68ß
ॐ ह्रीं विश्वकर्मगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।684।।
ॐ ह्रीं अक्षरगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।685।।
ॐ ह्रीं अच्छद्मगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।686।।
ॐ ह्रीं विश्वभूगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।687।।

ॐ ह्रीं विश्वनायकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।688।।
ॐ ह्रीं दिगम्बरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।689।।
ॐ ह्रीं निरातंकगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।690।।
ॐ ह्रीं निरारेकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।691।।
ॐ ह्रीं भवान्तकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।692।।
ॐ ह्रीं दृढव्रतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।693।।
ॐ ह्रीं नयोत्तुंगगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।694।।
ॐ ह्रीं निःकलंकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।695।।
ॐ ह्रीं अकलाधरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।696।।
ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।697।।
ॐ ह्रीं अक्षय्यगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।698।।
ॐ ह्रीं क्षान्तगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।699।।
ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।700।।

*–पूर्णार्घ्य –*

*तर्ज –यह नंदन वन......*

**यह मानव तन, अनमोल रतन, पा विषयों में मत फंस जाना।**
**भवसिंधु अगर तरना चाहो, जिनचरण शरण में आ जाना।।**
**तीर्थंकर आत्म साधना कर, समता पियूष का पान करें।**
**निजशुक्ल ध्यान के द्वारा ही, सब कर्मनाश शिवनारि वरें।।**
**इन भगवन्तों की पूजा कर, परमानंदामृत पा जाना।।यह मानव.।।1।।**
**नाना विध व्याधी से पीड़ित, या दरिद्रता से दुखी हुए।**
**पारस प्रभु पूजा करते ही, सब दुख से जन-जन मुक्त हुए।।**
**फिर भी ये परम वीतरागी, इनसे मन पावन कर जाना।।**
**यह मानव तन.......2।।**

ॐ ह्रीं निर्वाणानामादि-श्रीवृक्षलक्षणगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**



*–दोहा –*

**कोटि सूर्यप्रभ से अधिक, अनुपम आतम तेज।**
**पुष्पांजलि कर पूजहूँ, कर्मांजन हर हेतु।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं ब्रह्मेतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।701।।
ॐ ह्रीं चतुर्मुखगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।702।।
ॐ ह्रीं धातृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।703।।
ॐ ह्रीं विधातृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।704।।
ॐ ह्रीं कमलासनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।705।।
ॐ ह्रीं अब्जभूगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।706।।
ॐ ह्रीं आत्मभूगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।707।।
ॐ ह्रीं सृष्टेतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।708।।
ॐ ह्रीं सुरज्येष्ठगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।709।।
ॐ ह्रीं प्रजापतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।710।।
ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।711।।
ॐ ह्रीं वेदज्ञगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।712।।
ॐ ह्रीं वेदांगगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।713।।
ॐ ह्रीं वेदपारगगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।714।।
ॐ ह्रीं अजगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।715।।
ॐ ह्रीं मनुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।716।।
ॐ ह्रीं शतानन्दगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।717।।
ॐ ह्रीं हंसयानगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।718।।
ॐ ह्रीं त्रयीमयगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।719।।
ॐ ह्रीं विष्णुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।720।।
ॐ ह्रीं त्रिविक्रमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।721।।
ॐ ह्रीं शौरिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।722।।

ॐ ह्रीं श्रीपतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।723।।
ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।724।।
ॐ ह्रीं वैकुण्ठगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।725।।
ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।726।।
ॐ ह्रीं हृषीकेशगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।727।।
ॐ ह्रीं हरिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।728।।
ॐ ह्रीं स्वभूगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।729।।
ॐ ह्रीं विश्वंभरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।730।।
ॐ ह्रीं असुरध्वंसिगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।731।।
ॐ ह्रीं माधवगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।732।।
ॐ ह्रीं बलिबंधनगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।733।।
ॐ ह्रीं अधोक्षजगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।734।।
ॐ ह्रीं मधुद्वेषिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।735।।
ॐ ह्रीं केशवगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।736।।
ॐ ह्रीं विष्टरश्रवस्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।737।।
ॐ ह्रीं श्रीवत्सलांछनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।738।।
ॐ ह्रीं श्रीमद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।739।।
ॐ ह्रीं अच्युतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।740।।
ॐ ह्रीं नरकान्तकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।741।।
ॐ ह्रीं विष्वक्सेनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।742।।
ॐ ह्रीं चक्रपाणिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।743।।
ॐ ह्रीं पद्मनाभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।744।।
ॐ ह्रीं जनार्दनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।745।।
ॐ ह्रीं श्रीकण्ठगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।746।।
ॐ ह्रीं शंकरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।747।।
ॐ ह्रीं शंभुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।748।।



ॐ ह्रीं कपालिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।749।।
ॐ ह्रीं वृषकेतनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।750।।
ॐ ह्रीं मृत्युंजयगुणसार्थककराय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।751।।
ॐ ह्रीं विरूपाक्षगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।752।।
ॐ ह्रीं वामदेवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।753।।
ॐ ह्रीं त्रिलोचनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।754।।
ॐ ह्रीं उमापतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।755।।
ॐ ह्रीं पशुपतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।756।।
ॐ ह्रीं स्मरारिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।757।।
ॐ ह्रीं त्रिपुरान्तकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।758।।
ॐ ह्रीं अर्धनारीश्वरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।759।।
ॐ ह्रीं रूद्रगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।760।।
ॐ ह्रीं विश्वोत्पादनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।761।।
ॐ ह्रीं भर्गगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।762।।
ॐ ह्रीं सदाशिवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।763।।
ॐ ह्रीं जगत्कर्तृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।764।।
ॐ ह्रीं अन्धकारातिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।765।।
ॐ ह्रीं अनादिनिधनगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।766।।
ॐ ह्रीं हरगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।767।।
ॐ ह्रीं महासेनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।768।।
ॐ ह्रीं तारकजिद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।769।।
ॐ ह्रीं गणनाथगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।770।।
ॐ ह्रीं विनायकगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।771।।
ॐ ह्रीं विरोचनगुणमंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।772।।
ॐ ह्रीं वियद्रत्नगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।773।।
ॐ ह्रीं द्वादशात्मगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।774।।

ॐ ह्रीं विभावसुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।775।।
ॐ ह्रीं द्विजाराध्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।776।।
ॐ ह्रीं वृहद्भानुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।777।।
ॐ ह्रीं चित्रभानुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।778।।
ॐ ह्रीं तनूनपात्गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।779।।
ॐ ह्रीं द्विजराजगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।780।।
ॐ ह्रीं सुधाशोचिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।781।।
ॐ ह्रीं औषधीगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।782।।
ॐ ह्रीं कलानिधिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।783।।
ॐ ह्रीं नक्षत्रनाथगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।784।।
ॐ ह्रीं श्रीशुभ्रांशुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।785।।
ॐ ह्रीं सोमगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।786।।
ॐ ह्रीं कुमुदबांधवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।787।।
ॐ ह्रीं लेखर्षभगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।788।।
ॐ ह्रीं अनिलगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।789।।
ॐ ह्रीं पुण्यजनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।790।।
ॐ ह्रीं पुण्यजनेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।791।।
ॐ ह्रीं धर्मराजगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।792।।
ॐ ह्रीं भोगिराजगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।793।।
ॐ ह्रीं प्रचेतोगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।794।।
ॐ ह्रीं भूमिनन्दनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।795।।
ॐ ह्रीं सिंहिकातनयगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।796।।
ॐ ह्रीं छायानंदनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।797।।
ॐ ह्रीं वृहतांपतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।798।।
ॐ ह्रीं पूर्वदेवोपदेष्टृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।799।।
ॐ ह्रीं द्विजराजसमुद्भवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।800।।



*–पूर्णार्घ्य –*

*तर्ज –हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.................*

**हे नाथ! तुम्हारे चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।**
**हे पार्श्व! आप गुण गा गाकर, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।**
**अर्हंत अवस्था में प्रभु के, पुष्पों की वर्षा आदि दिखें।**
**देवों द्वारा बहुविभव हुए, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।1।।**
**मानव जीवन में कष्ट घने, नाना विध रोग व शोक घने।**
**सब दुख से आप बचा सकते, इसलिए शरण में आये हैं।।**
**हे नाथ! तुम्हारे चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।**
**हे पार्श्व! आप गुण गा गाकर, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं ब्रह्मादि-द्विजराज समुद्भवगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–दोहा –*

**सब कर्मों में एक है, मोह कर्म बलवान।**
**उसके नाशन हेतु मैं, पूजूँ भक्ति प्रधान।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं बुद्धगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।801।।
ॐ ह्रीं दशबलगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।802।।
ॐ ह्रीं शाक्यगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।803।।
ॐ ह्रीं षडभिज्ञगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।804।।
ॐ ह्रीं तथागतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।805।।
ॐ ह्रीं समन्तभद्रगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।806।।
ॐ ह्रीं सुगतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।807।।
ॐ ह्रीं श्रीघनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।808।।
ॐ ह्रीं भूतकोटिदिग्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।809।।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।810।।
ॐ ह्रीं मारजिद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।811।।
ॐ ह्रीं शास्तृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।812।।
ॐ ह्रीं क्षणिकैकसुलक्षणगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।813।।
ॐ ह्रीं बोधिसत्त्वगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।814।।
ॐ ह्रीं निर्विकल्पदर्शनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।815।।
ॐ ह्रीं अद्वयवादिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।816।।
ॐ ह्रीं महाकृपालुगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।817।।
ॐ ह्रीं नैरात्म्यवादिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।818।।
ॐ ह्रीं संतानशासकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।819।।
ॐ ह्रीं सामान्यलक्षणचणगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।820।।
ॐ ह्रीं पञ्चस्कंधमयात्मदृग्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।821।।
ॐ ह्रीं भूतार्थसाधनासिद्धगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।822।।
ॐ ह्रीं चतुर्भूमिकशासनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।823।।
ॐ ह्रीं चतुरार्यसत्यवक्तृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।824।।
ॐ ह्रीं निराश्रयचिद्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।825।।
ॐ ह्रीं अन्वयगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।826।।
ॐ ह्रीं योगगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।827।।
ॐ ह्रीं वैशेषिकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।828।।
ॐ ह्रीं तुच्छाभावभिद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।829।।
ॐ ह्रीं षट्पदार्थदृग्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।830।।
ॐ ह्रीं नैयायिकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।831।।
ॐ ह्रीं षोडशार्थवादिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।832।।
ॐ ह्रीं पंचार्थवर्णकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।833।।
ॐ ह्रीं ज्ञानान्तराध्यक्षबोधगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।834।।
ॐ ह्रीं समवायवशार्थभिद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।835।।



ॐ ह्रीं भुक्तैकसाध्यकर्मान्तगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।836।।
ॐ ह्रीं निर्विशेषगुणामृतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।837।।
ॐ ह्रीं सांख्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।838।।
ॐ ह्रीं समीक्ष्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।839।।
ॐ ह्रीं कपिलगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।840।।
ॐ ह्रीं पंचविंशतितत्त्वविद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।841।।
ॐ ह्रीं व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।842।।
ॐ ह्रीं ज्ञानचैतन्यभेददृग्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।843।।
ॐ ह्रीं अस्वसंविदितज्ञानवादिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।844।।
ॐ ह्रीं सत्कार्यवादसात्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।845।।
ॐ ह्रीं त्रिःप्रमाणगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।846।।
ॐ ह्रीं अक्षप्रमाणगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।847।।
ॐ ह्रीं स्याद्वादहंकारिकाक्षदिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।848।।
ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।849।।
ॐ ह्रीं आत्मगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।850।।
ॐ ह्रीं पुरुषगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।851।।
ॐ ह्रीं नरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।852।।
ॐ ह्रीं नृगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।853।।
ॐ ह्रीं चेतनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।854।।
ॐ ह्रीं पुमानितिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।855।।
ॐ ह्रीं अकर्तृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।856।।
ॐ ह्रीं निर्गुणनामधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।857।।
ॐ ह्रीं अमूर्त्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।858।।
ॐ ह्रीं भोक्तृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।859।।
ॐ ह्रीं सर्वगतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।860।।
ॐ ह्रीं अक्रियगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।861।।

ॐ ह्रीं दृष्टगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।862।।

ॐ ह्रीं तटस्थगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।863।।

ॐ ह्रीं कूटस्थगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।864।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।865।।

ॐ ह्रीं निर्बंधनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।866।।

ॐ ह्रीं अभवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।867।।

ॐ ह्रीं बहिर्विकारगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।868।।

ॐ ह्रीं निर्मोक्षगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।869।।

ॐ ह्रीं प्रधानगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।870।।

ॐ ह्रीं बहुधानगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।871।।

ॐ ह्रीं प्रकृतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।872।।

ॐ ह्रीं ख्यातिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।873।।

ॐ ह्रीं आरूढप्रकृतिगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।874।।

ॐ ह्रीं प्रकृतिप्रियगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।875।।

ॐ ह्रीं प्रधानभोज्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।876।।

ॐ ह्रीं अप्रकृतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।877।।

ॐ ह्रीं विरम्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।878।।

ॐ ह्रीं विकृतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।879।।

ॐ ह्रीं कृतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।880।।

ॐ ह्रीं मीमांसकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।881।।

ॐ ह्रीं अस्तसर्वज्ञगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।882।।

ॐ ह्रीं श्रुतिपूतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।883।।

ॐ ह्रीं सदोत्सवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।884।।

ॐ ह्रीं परोक्षज्ञानवादिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।885।।

ॐ ह्रीं इष्टपावकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।886।।

ॐ ह्रीं सिद्धकर्मकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।887।।

ॐ ह्रीं चार्वाकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।888।।



ॐ ह्रीं भौतिकज्ञानगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।889।।

ॐ ह्रीं भूताभिव्यक्तचेतनगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।890।।

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षैकप्रमाणगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।891।।

ॐ ह्रीं अस्तपरलोकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।892।।

ॐ ह्रीं गुरुश्रुतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।893।।

ॐ ह्रीं पुरन्दरविद्धकर्णगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।894।।

ॐ ह्रीं वेदान्तिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।895।।

ॐ ह्रीं संविदद्वयिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।896।।

ॐ ह्रीं शब्दाद्वैतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।897।।

ॐ ह्रीं स्फोटवादिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।898।।

ॐ ह्रीं पाखण्डघ्नगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।899।।

ॐ ह्रीं नयौघयुग्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।900।।

*—पूर्णार्घ्य—*

*तर्ज—करो कल्याण आतम का....*

**नमन श्री पार्श्व जिनवर को, जिन्होंने कर्म नाशे हैं।**
**नमन उस सिद्धभूमी को, जहाँ जिनवर विराजे हैं।।**
**करें जो नाथ की अर्चा, सदा प्रभु कीर्ति को गावें।**
**नहीं अपमृत्यु हो उनकी, वे ही सुख शांति पाते हैं।।नमन...।।1।।**
**प्रभो! मैं भी करूँ पूजा, यही शक्ती मिले मुझको।**
**पार्श्व की भक्ति से निश्चित, सभी जन इष्ट पाते हैं।।नमन....।।2।।**

ॐ ह्रीं बुद्धगुणादिनयौघयुग्गुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

*—दोहा—*

**परमानंद पियूष घन, वर्षा करें जिनंद।**
**पुष्पांजलि से पूजते, मिले सर्व सुख कंद।।1।।**

*अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।*

ॐ ह्रीं अन्तकृद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।901।।
ॐ ह्रीं पारकृद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।902।।
ॐ ह्रीं तीरप्राप्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।903।।
ॐ ह्रीं पारेतमोगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।904।।
ॐ ह्रीं त्रिदण्डिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।905।।
ॐ ह्रीं दण्डितारातिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।906।।
ॐ ह्रीं ज्ञानकर्मसमुच्चयिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।907।।
ॐ ह्रीं संहृतध्वनिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।908।।
ॐ ह्रीं उत्सन्नयोगगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।909।।
ॐ ह्रीं सुप्तार्णवोपमगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।910।।
ॐ ह्रीं योगस्नेहापहागुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।911।।
ॐ ह्रीं योगकिट्टिनिर्लेपनोद्यतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।912।।
ॐ ह्रीं स्थितसूक्ष्मवपुर्योगगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।913।।
ॐ ह्रीं गीर्मनोयोगकार्श्यकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।914।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मवाक्चित्तयोगस्थगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।915।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मीकृतवपुःक्रियगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।916।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मकायक्रियास्थायिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।917।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मवाक्चित्तयोगहागुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।918।।
ॐ ह्रीं एकदण्डिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।919।।
ॐ ह्रीं परमहंसगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।920।।
ॐ ह्रीं परमसंवरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।921।।
ॐ ह्रीं नैःकर्म्यसिद्धगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।922।।
ॐ ह्रीं परमनिर्जरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।923।।
ॐ ह्रीं प्रज्वलत्प्रभगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।924।।
ॐ ह्रीं मोघकर्मगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।925।।
ॐ ह्रीं त्रुट्यत्कर्मपाशगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।926।।



ॐ ह्रीं शैलेश्यलंकृतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।927।।
ॐ ह्रीं एकाकाररसास्वादिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।928।।
ॐ ह्रीं विश्वाकाररसाकुलगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।929।।
ॐ ह्रीं अजीवन्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।930।।
ॐ ह्रीं अमृतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।931।।
ॐ ह्रीं अजाग्रद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।932।।
ॐ ह्रीं असुप्तगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।933।।
ॐ ह्रीं शून्यतामयगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।934।।
ॐ ह्रीं प्रेयान्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।935।।
ॐ ह्रीं अयोगिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।936।।
ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणनामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।937।।
ॐ ह्रीं अगुणनाममंडिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।938।।
ॐ ह्रीं निःपीतानन्तपर्यायगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।939।।
ॐ ह्रीं अविद्यासंस्कारनाशकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।940।।
ॐ ह्रीं वृद्धगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।941।।
ॐ ह्रीं निर्वचनीयगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।942।।
ॐ ह्रीं अणुनामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।943।।
ॐ ह्रीं अणीयान्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।944।।
ॐ ह्रीं अनणुप्रियगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।945।।
ॐ ह्रीं प्रेष्ठगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।946।।
ॐ ह्रीं स्थेयान्गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।947।।
ॐ ह्रीं स्थिरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।948।।
ॐ ह्रीं निष्ठगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।949।।
ॐ ह्रीं श्रेष्ठगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।950।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।951।।
ॐ ह्रीं सुनिष्ठितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।952।।

ॐ ह्रीं भूतार्थशूरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।953।।
ॐ ह्रीं भूतार्थदूरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।954।।
ॐ ह्रीं परमनिर्गुणगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।955।।
ॐ ह्रीं व्यवहारसुषुप्तगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।956।।
ॐ ह्रीं अतिजागरूकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।957।।
ॐ ह्रीं अतिसुस्थितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।958।।
ॐ ह्रीं उदितोदितमाहात्म्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।959।।
ॐ ह्रीं निरुपाधिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।960।।
ॐ ह्रीं अकृत्रिमगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।961।।
ॐ ह्रीं अमेयमहिमागुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।962।।
ॐ ह्रीं अत्यन्तशुद्धगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।963।।
ॐ ह्रीं सिद्धिस्वयंवरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।964।।
ॐ ह्रीं सिद्धानुजगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।965।।
ॐ ह्रीं सिद्धपुरीपान्थगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।966।।
ॐ ह्रीं सिद्धगणातिथिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।967।।
ॐ ह्रीं सिद्धसंगोन्मुखगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।968।।
ॐ ह्रीं सिद्धालिंग्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।969।।
ॐ ह्रीं सिद्धोपगूहकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।970।।
ॐ ह्रीं पुष्टगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।971।।
ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रशीलेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।972।।
ॐ ह्रीं पुण्यशंबलगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।973।।
ॐ ह्रीं वृत्ताग्रयुग्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।974।।
ॐ ह्रीं परमशुक्ललेश्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।975।।
ॐ ह्रीं अपचारकृत्-गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।976।।
ॐ ह्रीं क्षेपिष्ठगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।977।।
ॐ ह्रीं अन्त्यक्षणसखागुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।978।।



ॐ ह्रीं पंचलघ्वक्षरस्थितिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।979।।
ॐ ह्रीं द्वासप्ततिप्रकृत्यासिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।980।।
ॐ ह्रीं त्रयोदशकलिप्रणुद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।981।।
ॐ ह्रीं अवेद-गुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।982।।
ॐ ह्रीं अयाजकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।983।।
ॐ ह्रीं अयज्यगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।984।।
ॐ ह्रीं अयाज्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।985।।
ॐ ह्रीं अनग्निपरिग्रहगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।986।।
ॐ ह्रीं अनग्निहोत्रीगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।987।।
ॐ ह्रीं परमनिःस्पृहगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।988।।
ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दयगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।989।।
ॐ ह्रीं स्वयंप्रबोधगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।990।।
ॐ ह्रीं अशासकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।991।।
ॐ ह्रीं अदीक्ष्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।992।।
ॐ ह्रीं अदीक्षकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।993।।
ॐ ह्रीं अदीक्षितगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।994।।
ॐ ह्रीं अक्षपदगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।995।।
ॐ ह्रीं अगम्यगुणसमन्वताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।996।।
ॐ ह्रीं अगमकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।997।।
ॐ ह्रीं अरम्यगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।998।।
ॐ ह्रीं अरमकगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।999।।
ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भरगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1000।।
ॐ ह्रीं महायोगीश्वरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1001।।
ॐ ह्रीं द्रव्यसिद्धगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1002।।
ॐ ह्रीं अदेहगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1003।।
ॐ ह्रीं अपुनर्भवगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1004।।

ॐ ह्रीं ज्ञानैकचिद्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1005।।

ॐ ह्रीं जीवघनगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1006।।

ॐ ह्रीं सिद्धनामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1007।।

ॐ ह्रीं लोकाग्रगामुकगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1008

*–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद –*

**श्री पार्श्वनाथ के मुख से खिरी, अनअक्षर दिव्यध्वनी भाषा।**
**बारहगण भव्यों को हितकर, परिणामी सर्वजगत् भाषा।।**
**गणधर गुरु ने जिनध्वनि सुनकर, बारह अंगों में रचना की।**
**उन पार्श्वनाथ के चरणों में, पूर्णार्घ्य समर्पण करूँ अभी।।1।।**

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणमंत्रसमन्विताय श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

**जाप्य - ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकराय श्रीपार्श्वनाथाय नमः।**

(पुष्प, लवंग या पीले पुष्पों से 108 बार)

## जयमाला

*चाल –हे दीन बंधु.........*

**जै जै श्री पारस प्रभो! तुम सिद्धिकांत हो।**
**जै जै प्रभो! आर्हन्त्य रमा के भी कांत हो।।**
**हे नाथ! आपकी सभा अनुपम विशाल है।**
**उसके लिए इस जग में न कोई मिशाल है।।1।।**

**पृथ्वी से पाँच सहस धनुष उपरि गगन में।**
**प्रभु आपका समवसरण है मात्र अधर में।।**
**सोपान पंक्ति बीस सहस श्रेष्ठ मणिमयी।**
**बस एक मुहूरत में सभी चढ़ते हैं सही।।2।।**

**बहुरत्नमयी धूलिसाल कोट प्रथम है।**
**उसमें हैं चार द्वार नाम विजय आदि हैं।।**
**चारों दिशा में चार मानस्तंभ बताये।**
**जो बहुत दूर-दूर तक भी दर्श करायें।।3।।**



**है चैत्यभवन भूमि रम्य द्रह वनादि से।**
**जिन बिम्बनिलय हैं पवित्र तुम प्रसाद से।।**
**आगे है रम्य खातिका जो स्वच्छ जल भरी।**
**फूले कमल से हंस आदि रव से चित्त हरी।।4।।**

**है तीसरी लतावनी वकुलादि कुसुम से।**
**बल्ली के मंडपों से रम्य व्याप्त सुरभि से।।**
**उद्यानभूमि चौथि चार दिश में चार वन।**
**अशोक सप्तछद तथा चंपक व आम्रवन।।5।।**

**इनमें हैं चैत्यवृक्ष जैन बिंब को धरें।**
**मुनिगण भी जिनकी वंदना बहुभक्ति से करें।।**
**आगे है ध्वजा भूमि जो अगणित ध्वजा धरें।**
**हंसादि चिन्ह दश तरह से युत ध्वजा धरें।।6।।**

**दशविध सुकल्पतरु से कल्पवृक्ष भू कही।**
**सिद्धार्थ वृक्ष सिद्ध बिम्ब युक्त धर रही।।**
**इनकी जो वंदना करें त्रिकाल भक्ति से।**
**वे सर्वसिद्धि प्राप्त करें स्वात्म शक्ति से।।7।।**

**आगे की भूमि में कहीं महलों की पंक्तियाँ।**
**जिन भक्ति नृत्य आदि करें देव देवियाँ।।**
**भू आठवीं जो बारहों कोठों को है धरे।**
**मणि स्फटिक की भित्ति से विभक्त गण धरे।।8।।**

**कोठे प्रथम में गणधर गुरु साधुगण रहें।**
**क्रम से है कल्पवासिनी देवी वहाँ रहे।।**
**है तीसरे में आर्यिका औ श्राविका घनी।**
**फिर ज्योतिषी औ व्यंतरी व भवनवासिनी।।9।।**

**फिर व्यंतरों ज्योतिष्क भवनवासि के कोठे।**
**आगे हैं कल्पवासि मनुष औ पशू कोठे।।**
**द्वादश गणों के जीव ये चारों तरफ घिरे।**
**जिनदेव की वाणी सुनें सम्यक्त्व गुण धरें।।10।।**

आगे की प्रथम कटनी पे यक्षेन्द्र खड़े हैं।
चउ दिश में यक्ष धर्मचक्र शिर पे धरे हैं।।
हैं कटनी दूसरी पे चिन्ह युक्त ध्वजाएं।
तृतीय कटनी को भी रत्नखचित बतायें।।11।।

इसके उपरि है गंधकुटी नाथ की बनी।
जिस पर हैं चमर आदि व बजती हैं किंकणी।।
मणिस्फटिक से बना रत्नजटित सिंहासन।
जो गंध कुटी मध्य में है कमल सम आसन।।12।।

इस पे जिनेन्द्र चार अंगुल अधर राजते।
त्रैलोक्यनाथ अतुल विभवयुत विराजते।।
चौंतीस अतिशयों व आठ प्रातिहार्य से।
आनन्त्य चतुष्टय सहित अनुपम विभासते।।13।।

ये ग्यारहों हि भूमियां अद्भुत निकेत हैं।
इन मध्य चार कोट और पाँच वेदि हैं।।
सब रत्न की रचना वहाँ नवनिधि भरी पड़ीं।
गोपुर व द्वार नाट्यशालाएं बड़ी-बड़ी।।14।।

प्रेक्षा सदन अभिषेक सदन आदि वहाँ पे।
मंडप सभागृहादि भी श्रुत केवली ताके।।
वापी सरोवरों में वहाँ फूल खिले हैं।
वापी में कर स्नान सात भव भी दिखे हैं।।15।।

कोठों का लघू क्षेत्र तो भी जिन प्रभाव से।
प्राणी असंख्य बैठते निर्वैर भाव से।।
आतंक रोग भूख प्यास आदि ना वहाँ।
मिथ्यात्वि असंज्ञी अभव्य शूद्र ना वहाँ।।16।।

अंधे भी वहाँ देखते गूँगे भी बोलते।
लंगड़े चढ़े सब सीढ़ियाँ बहिरे भी हैं सुनते।।
विष भी वहाँ निर्विष बने सब शोक टले हैं।
सब जात विरोधी वहाँ आपस में मिले हैं।।17।।



स्तूप बनें तीन लोक आदि के वहाँ।
जो सर्व सृष्टि रूप धरें शोभते वहाँ।।
बहु धूपघड़ों में सभी सुधूप खे रहे।
निज कर्म धूलि को उड़ा आनंद ले रहे।।18।।

इत्यादि विभव है अपूर्व कौन कह सके।
गणधर गुरु सुरगुरु भी नहिं पार पा सके।।
जो एक बार समोसरण में चले गये।
वे भव्य मोक्ष पथिकों की कोटी में आ गये।।19।।

प्रभु के समवसरण में सहस्राक्ष भक्ति से।
प्रभु नाम मंत्र सहस्रों से स्तुति करके।।
श्री पार्श्वनाथ प्रभु को कोटिशः नमन किया।
फिर श्रीविहार हेतु प्रभु से प्रार्थना किया।।20।।

हे नाथ! भव्य धान्य पाप अनावृष्टि से।
सूखें उन्हें सींचो सुधर्म सुधावृष्टि से।।
भगवंत! आप विजय की उद्योग सूचना।
ये धर्मचक्र है तैयार शोभता घना।।21।।

हे देव! आप मोह शत्रु पे विजय किया।
शिवमार्ग के उपदेश का अवसर ये आ गया।।
जिनवर स्वयं तैयार श्रीविहार के लिए।
बस इंद्र की ये प्रार्थना नियोग के लिए।।22।।

तत्क्षण समवसरण सभी विलीन हो गया।
इंद्रों ने प्रभु विहार का उत्सव महा किया।।
जय जय ध्वनी ऊँची उठी बाजे बजे घने।
संगीत गीत नृत्य करें देवगण घने।।23।।

आकाश में अधर सुवर्ण कमल रच दिए।
सुरभित कमल पे नाथ चरण धरत चल दिए।।
गंधोद वृष्टि, पुष्पवृष्टि मंद पवन है।
अतिशय विभूति आप के विहार समय है।।24।।

आरे हजार धर्मचक्र चम चमा रहा।
जिनराज आगे-आगे चले शोभता महा।।
संपूर्ण भव्यजन को मोक्षमार्ग दिखाये।
जो आ गये शरण प्रभू की सिद्धि वे पायें।।25।।

जो भव्य एक बार भी तुम अर्चना करें।
निश्चित वे कर्म प्रकृतियों की खण्डना करें।।
फिर वे कभी यमराज के चंगुल में ना पड़ें।
हो पूर्ण 'ज्ञानमती' मोक्ष महल में चढ़ें।।26।।

*–दोहा–*

चिन्तामणि श्री पार्श्वप्रभु, पंचकल्याणक ईश।
सर्वकल्याणक कल्पतरु, नमूँ नमूँ नत शीश।।27।।

ॐ ह्रीं अन्तरंग-बहिरंगलक्ष्मीसमन्वित श्रीपार्श्वनाथस्वामिने जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

*–शंभु छंद–*

अहिच्छत्र तीर्थ पर पार्श्वनाथ-को अतिशय केवलज्ञान हुआ।
प्रभु समवसरण की पूजा कर, मन में आनंद महान् हुआ।।
जो भव्य समवसृति रचना कर, प्रभु के गुणमणि को यजते हैं।
वे सकल 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।1।।

*।।इत्याशीर्वादः।।*

इति श्रीपार्श्वनाथसमवसरण विधानं पूर्णं।
वर्द्धतां जिनशासनम्।



# प्रशस्ति

श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, श्री अरहनाथ को नमन करूँ।
हस्तिनापुरी त्रय तीर्थंकर की, जन्मभूमि का स्तवन करूँ।।
श्री ऋषभदेव की जन्मभूमि, शाश्वत जो तीर्थ अयोध्या है।
उसको भी प्रणमूँ बार-बार, जो सुरनर मुनिगण वंद्या है।।1।।

वाराणसी नगरी में जन्में, श्री जिनसुपार्श्व श्री पार्श्वनाथ।
कुण्डलपुर जन्मभूमि वंदूं, महावीर प्रभू से जो सनाथ।।
अट्ठाइस सौ चौरासि वर्ष, पहले वाराणसि नगरी में।
श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लिया, सुरनर से पूज्य हुई जग में।।2।।

जहाँ कमठासुर उपसर्ग जीत, प्रभु केवलज्ञानी ईश हुए।
अहिच्छत्र तीर्थ जग पूज्य बना, भक्तों के मनरथ सिद्ध हुए।।
चिंतामणि चिंतित फलदाता, प्रभु भक्तों के वरदान हुए।।
धरणेन्द्रदेव-पद्मावति भी प्रभु, भक्ती कर जगमान्य हुए।।3।।

श्री वीरप्रभू के शासन में, श्री कुंदकुंद आचार्य हुए।
श्री मूलसंघ सरस्वतीगच्छ, गण बलात्कार में मान्य हुए।।
इस परम्परा में चरतिचक्र-वर्ती श्री प्रथमाचार्य हुए।
गुरु शांतिसागराचार्य वर्य, बीसवीं सदी के प्रथम हुए।।4।।

इन प्रथम शिष्य श्री वीरसागराचार्य चतुः संघ गुरू हुए।
ये पट्टाचार्य प्रथम मानें, गुरुवर मम दीक्षा गुरू हुए।।
गुरुवर प्रसाद जिनवर भक्ती, औ सरस्वती की भक्ती से।
मैंने विधान पूजन आदिक रच दिये अल्प ही बुद्धी से।।5।।

प्रभु पार्श्वनाथ का जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दी उत्सव।
वाराणसि जन्मभूमि से ही, प्रारंभ हुआ यह महिमोत्सव।।
अहिच्छत्र तीर्थ पर पार्श्वनाथ प्रभु, की प्रतिमा प्राचीन यहाँ।
इनके सहस्राब्दि महोत्सव का, अवसर यह अतिशय ख्यात यहाँ।।6।।

श्री पार्श्वनाथ के समवसरण मण्डल विधान की यह रचना।
प्रभु की बस भक्ती ही केवल, शब्दों में ही प्रभु की महिमा।।
वीराब्द पचीस शतक तेंतिस, आश्विन शुक्ला सप्तमी तिथी।
वर तीर्थ हस्तिनापुर उत्तम, इस विधान रचना की पूर्ती।।7।।

प्रभु समवसरण में आठ भूमि, त्रयकटनी की पूजा इसमें।
मानस्तंभों के बिंबों की, छ्यालिस गुण की पूजा इसमें।।
अष्टोत्तर सहस्रगुण पूजा, से यह विधान अतिशायी है।
पूजन विधान करने वालों, को यह अतिशय सुखदायी है।।8।।

संपूर्ण विश्व में प्रथम बार यहाँ[2] जम्बूद्वीप सुमेरु बना।
तेरहद्वीपों की अतिशायी स्वर्णिम रचना भी है प्रथमा।।
जब तक जिनधर्म रहे जग में, तब तक ये रचना अमर रहें।
मुझ गणिनी 'ज्ञानमती' विरचित, तब तक विधान भी अमर रहे।।9।।

*।। इति वर्धतां जिनशासनम्।।*

1. आश्विन शु. 7, दि. 18-10-2007। 2. हस्तिनापुर में।

# गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

**रचयित्री - प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

*–स्थापना –*

पूजन करो जी-
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं.......
पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

*–अष्टक –*

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।

**उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।**
**पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।**
**अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।**
**तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।**
**इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।4।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।**
**लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।**
**आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।5।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।**
**ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।**
**घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।6।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।



**कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।**
**तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।**
**धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।7।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।**
**तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।**
**तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।8।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाह

**पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।**
**अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।**
**युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।**
**तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।9।।**

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

*– शेरछंद –*

**हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।**
**तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।**
**उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।**
**वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।**

शांतये शांतिधारा.........।।

**स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।**
**बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।**
**कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।**
**उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।**

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....।।

# जयमाला

*–दोहा–*

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

*धुन-नागिन-मेरा मन डोले.....।*

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।

शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।1।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।। माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।2।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।3।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।4।।

तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।5।।



कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।6।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.......।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।7।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।8।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।9।।

*–दोहा–*

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात।।10।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।**

*–शंभुछंद–*

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें महापूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

# आरति श्री पार्श्वनाथ भगवान की

*तर्ज-करती हूँ तुम्हारी पूजा..............।*

करते हैं प्रभु की आरति, मन का दीप जलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।।

हे अश्वसेन के नन्दन, वामा माता के प्यारे।
तेईसवें तीर्थंकर पारस, प्रभु तुम जग से न्यारे।।
तेरी भक्ती गंगा में, जो स्नान करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।1।।

वाराणसि में जन्मे, निर्वाण शिखर जी से पाया।
इक लोहा भी प्रभु चरणों में, सोना बनने आया।।
सोना ही क्या वह लोहा, पारसनाथ बनेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।2।।

सुनते हैं जग में वैर सदा, दो तरफा चलता है।
पर पार्श्वनाथ का जीवन, इसे चुनौती करता है।।
इक तरफा बैरी ही कब तक, उपसर्ग करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।3।।

कमठासुर ने बहुतेक भवों में, आ उपसर्ग किया।
पारसप्रभु ने सब सहकर, केवलपद को प्राप्त किया।।
कैवल्य ज्योति से पापों का, अंधेर मिटेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।4।।

प्रभु तेरी आरति से मैं भी, यह शक्ति पा जाऊं।
''चन्दनामती'' तव गुणमणि की, माला यदि पा जाऊं।।
तब जग में नहिं शत्रू का, मुझ पर वार चलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।5।।



# *भजन*

**-आर्यिका चन्दनामती**

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
तीन लोक के सौ इन्द्रों ने, किया तुम्हें वंदन है।।
सौ-सौ बार नमन है-2
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सौ-सौ बार नमन है।।टेक.।।

तीन तीर्थ माने हैं जिनके, पंचकल्याण से पावन,
वाराणसि, अहिच्छत्र और सम्मेदशिखर मनभावन।
इनके दर्शन से भक्तों के, पावन होते मन हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु..........।।1।।

वर्तमान में पार्श्वनाथ का, अतिशय खूब बखाना,
अंतरिक्ष, शिरपुर, चंवलेश्वर, मक्सी, अडिन्दा जाना।
अतिशायी कचनेर में जाकर, करो प्रभू दर्शन है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.......।।2।।

कर्नाटक के बीजापुर में, सहस्रफणा पारस हैं,
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, चिन्तामणि पारस हैं।
भारत के अनेक नगरों में, पारस प्रभु मंदिर हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.........।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता, कहती हैं सब भक्तों को,
पारस प्रभु के अतिशय से, परिचित करवाओ सब को।
सभी ''चन्दनामती'' वर्ष भर, उत्सव करो सफल है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.........।।4।।

# सुखचिन्तामणि व्रत का स्वरूप

**उच्यते, सुखचिन्तामणौ चतुर्दशी चतुर्दशकं, एकादश्येकादशकं, अष्टम्यष्टकं, पंचमी पंचकं तृतीया त्रिकमेवमुपवासाः एकचत्वारिंशत्। न कृष्णपक्षशुक्लपक्षगतो नियमः, केवलां तिथिं नियम्य भवन्तीति उपवासाः। अस्य व्रतस्य पञ्चभावनाः भवन्ति, प्रत्येकभावनयामभिषेको भवति।**

**अर्थ—**सुखचिन्तामणि व्रत में चतुर्दशियों में चौदह उपवास, एकादशियों के ग्यारह उपवास, अष्टमियों के आठ, पंचमियों के पाँच उपवास, तृतीयाओं के तीन उपवास, इस प्रकार कुल 41 उपवास करना चाहिए। इस व्रत में कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष का कुछ भी नियम नहीं है, केवल तिथि का नियम है। उपवास के दिन व्रत की विधेय तिथि का होना आवश्यक है। इस व्रत की पाँच भावना होती हैं, प्रत्येक भावना में एक अभिषेक किया जाता है। अभिप्राय यह है कि चौदह चतुर्दशियों के व्रत के पश्चात् एक भावना, ग्यारह एकादशियों के व्रत के पश्चात् एक भावना, आठ अष्टमियों के व्रत के बाद एक भावना, पाँच पंचमियों के व्रत के पश्चात् एक भावना एवं तीन तृतीयाओं के व्रत के पश्चात् एक भावना करनी पड़ती है। प्रत्येक भावना के दिन भगवान का अभिषेक करना पड़ता है।

**विवेचन—**सुखचिंतामणि व्रत के लिए केवल तिथियों का विधान है। यह व्रत तृतीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी को किया जाता है। प्रथम इस व्रत का प्रारंभ चतुर्दशी से करते हैं, लगातार चौदह चतुर्दशी अर्थात् सात महीने की चतुर्दशियों में चतुर्दशीव्रत पूरा होता है। साथ ही चतुर्दशी व्रत के तीन उपवास हो जाने पर एकादशी व्रत प्रारंभ होता है। जिस एकादशी से व्रत आरंभ किया जाता है, उस दिन भगवान का अभिषेक करते हैं तथा व्रत की भावना भाते हैं। तीन चतुर्दशियों के व्रत के उपरांत एकादशी और चतुर्दशी दोनों व्रत अपनी-अपनी तिथि में साथ-साथ में किये जाते हैं।

तीन एकादशी व्रत हो जाने के पश्चात् अष्टमी व्रत प्रारंभ किया जाता है। जिस दिन अष्टमी व्रत प्रारंभ करते हैं, उस दिन भगवान का अभिषेक समारोहपूर्वक करते हैं। यह सदा स्मरण रखना होगा कि प्रत्येक व्रत के प्रारंभ में अभिषेक 108 कलशों से किया जाता है। तीन अष्टमी व्रत हो जाने के उपरांत पंचमी व्रत प्रारंभ करते हैं, इसके प्रारंभ करने की विधि पूर्ववत् ही है। चतुर्दशी, एकादशी, अष्टमी और पंचमी ये व्रत एक साथ चलते हैं। दो पंचमी व्रतों के हो जाने पर तृतीया व्रत



आरंभ होता है, इस दिन भी वृहद् अभिषेक, पूजन-पाठ आदि धार्मिक कृत्य किये जाते हैं। ये सभी व्रत तीन पक्ष तक अर्थात् तीन तृतीया व्रतों के संपूर्ण होने तक साथ-साथ चलते हैं। तृतीया के दिन ही इन व्रतों की समाप्ति होती है। इस दिन वृहद् अभिषेक समारोहपूर्वक करना चाहिए। उपवास के दिनों में **''ॐ ह्रीं सर्वदुरितविनाशनाय चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।'** इस मंत्र का जाप प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल करना चाहिए। सुखचिंतामणि व्रत निश्चित तिथि में ही सम्पन्न किया जाता है। यदि व्रत की तिथि आगे-पीछे के दिनों में होती है तो व्रत आगे-पीछे किया जाता है। यह व्रत चिंतामणिरत्न के समान सभी प्रकार के सुखों को देने वाला है। भावना के दिन चिंतामणि भगवान पार्श्वनाथ की पूजा विशेष रूप से की जाती है तथा **'ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकराय श्री पार्श्वनाथाय नमः'** इस मंत्र का जाप किया जाता है।

# रविव्रत की विधि एवं कथा

**आदित्यव्रते पार्श्वनाथार्कसंज्ञके आषाढमासे शुक्लपक्षे तत्प्रथमादित्यमारभ्य नवसु अर्कदिनेषु व्रतं कार्यं नववर्षं यावत्। प्रथमवर्षे नवोपवासः, द्वितीयवर्षे नवैकाशनाः, तृतीयवर्षे नवकाञ्जिकाः, चतुर्थवर्षे नवरूक्षाः, पञ्चमवर्षे नवनीरसाः, षष्ठवर्षे नवालवणाः, सप्तमवर्षे नवागोरसाः, अष्टमवर्षे नवोनोदराः, नवमवर्षे अलवणा ऊनोदराः नव। एवमेकाशीतिः कार्याः। व्रतदिने श्रीपार्श्वनाथस्याभिषेकं कार्ये पूजनं च। समाप्तावुद्यापनं च कार्यम्, ये भव्या इदं रविव्रतं विधिपूर्वकं कुर्वन्ति तेषां कण्ठे मुक्तिकामिनी कण्ठरत्नमाला पतिष्यति।**

**अर्थ**—रविव्रत में आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष में प्रथम रविवार पार्श्वनाथ संज्ञक होता है, इससे आरंभ कर नौ रविवार तक व्रत करना चाहिए। यह व्रत नौ वर्ष तक किया जाता है। प्रथम वर्ष में नौ रविवारों को उपवास, द्वितीय वर्ष में नौ रविवारों को एकाशन, तृतीय वर्ष में नव रविवारों को काञ्जी–छाछ या छाछ से बने महेरी आदि पदार्थ लेकर एकाशन, चतुर्थ वर्ष में नव रविवारों को बिना घी का रूक्ष भोजन, पंचम वर्ष में नौ रविवारों को नीरस भोजन, षष्ठ वर्ष में नौ रविवारों को बिना नमक का अलोना भोजन, सप्तम वर्ष में नौ रविवारों को बिना दूध, दही और घृत का भोजन, अष्टम वर्ष में नौ रविवारों को ऊनोदर एवं नवम वर्ष में नौ रविवारों को बिना नमक के नौ ऊनोदर किये जाते हैं। इस प्रकार 81 व्रत-दिन होते हैं। व्रत के दिन श्रीपार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक और पूजन किया जाता है। जो विधिपूर्वक रविव्रत का पालन करते हैं,उनके गले में मोक्षलक्ष्मी के गले का हार पड़ता है। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करना चाहिए।

**रविव्रत का फल**

**सुतं वन्ध्या समाप्नोति दरिद्रो लभते धनम्।**
**मूढः श्रुतमवाप्नोति रोगी मुञ्चति व्याधितः।।**

**अर्थ**—रविवार का व्रत करने से वन्ध्या स्त्री पुत्र प्राप्त करती है, दरिद्री व्यक्ति धन प्राप्त करता है, मूर्ख व्यक्ति शास्त्रज्ञान एवं रोगी व्यक्ति व्याधि से छुटकारा प्राप्त कर लेता है।

**कथा**—काशी देश की बनारस नगरी का राजा महीपाल अत्यंत प्रजावत्सल और न्यायी था। उसी नगर में मतिसागर नाम का एक सेठ और गुणसुन्दरी नाम की उसकी स्त्री थी। इस सेठ के पूर्व पुण्योदय से उत्तमोत्तम गुणवान तथा रूपवान सात पुत्र उत्पन्न हुए।



उनमें छः का तो विवाह हो गया था, केवल लघु पुत्र गुणधर कुँवारे थे, सो गुणधर किसी दिन वन में क्रीड़ा करते विचर रहे थे तो उनको गुणसागर मुनि के दर्शन हो गये। वहाँ मुनिराज का आगमन सुनकर और भी बहुत लोग वन्दनार्थ वन में आये थे, वह सब स्तुति वंदना करके यथास्थान बैठे। श्री मुनिराज उनको धर्मवृद्धि कहकर अहिंसादि धर्म का उपदेश करने लगे।

जब उपदेश हो चुका तब साहूकार की स्त्री गुणसुन्दरी बोली–स्वामी! मुझे कोई व्रत दीजिए। तब मुनिराज ने उसे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत का उपदेश दिया और सम्यक्त्व का स्वरूप समझाया और पीछे कहा-बेटी! तू आदित्यवार का व्रत कर, सुन, इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि आषाढ़ मास में प्रथम पक्ष में प्रथम रविवार से लेकर नव रविवारों तक यह व्रत करना चाहिए।

प्रत्येक रविवार के दिन उपवास करना या बिना नमक (मीठा) के अलोना भोजन एक बार (एकासना) करना, पार्श्वनाथ भगवान की पूजा अभिषेक करना। घर के सब आरंभ का त्यागकर विषय और कषाय भावों को दूर करना, ब्रह्मचर्य से रहना, रात्रि जागरण-भजनादि करना और 'ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः' इस मंत्र की 108 बार जाप करना।

इस प्रकार नव वर्ष तक यह व्रत करके पश्चात् उद्यापन करना। प्रथम वर्ष नव उपवास करना, दूसरे वर्ष नमक बिना भात और पानी पीना, तीसरे वर्ष नमक बिना दाल भात खाना, चौथे वर्ष बिना नमक की खिचड़ी खाना, पांचवे वर्ष बिना नमक की रोटी खाना, छठे वर्ष बिना नमक दही भात खाना, सातवें तथा आठवें वर्ष नमक बिना मूंग की दाल और रोटी खाना और नवमें वर्ष एक बार का परोसा हुआ (एकटाना) नमक बिना भोजन करना, फिर दूसरी बार नहीं लेना और थाली में जूठन भी नहीं छोड़ना।

नवधाभक्ति कर मुनिराज को भोजन कराना और नववर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करना। सो नव-नव उपकरण मंदिरों में चढ़ाना, नव शास्त्र लिखवाना, नव श्रावकों को भोजन कराना, नव-नव फल श्रावकों को बांटना, समवसरण का पाठ पढ़ना, पूजन विधान करना आदि।

इस प्रकार गुणसुंदरी व्रत लेकर घर आई और सब कथा घर के लोगों को कह सुनाई तो घरवालों ने सुनकर इस व्रत की बहुत निंदा की। इसलिए उसी दिन से उस घर में दरिद्रता का वास हो गया। सब लोग भूखों मरने लगे, तब

सेठ के सातों पुत्र सलाह करके परदेश को निकले। सो साकेत (अयोध्या) नगरी में जिनदत्त सेठ के घर जाकर नौकरी करने लगे और सेठ-सेठानी बनारस ही में रहे।

कुछ काल के पश्चात् बनारस में कोई अवधिज्ञानी मुनि पधारे, सो दरिद्रता से पीड़ित सेठ-सेठानी भी वंदना को गये और दीन भाव से पूछने लगे-हे नाथ! क्या कारण है कि हम लोग ऐसे रंक हो गये? तब मुनिराज ने कहा–तुमने मुनिप्रदत्त रविवारव्रत की निंदा की है इससे यह दशा हुई है।

यदि तुम पुनः श्रद्धा सहित इस व्रत को करो तो तुम्हारी खोई हुई सम्पत्ति तुम्हें फिर मिलेगी। सेठ-सेठानी ने मुनि को नमस्कार करके पुनः रविवार व्रत किया और श्रद्धा सहित पालन किया जिससे उनको फिर से धन-धान्यादि की अच्छी प्राप्ति होने लगी।

परन्तु इनके सातों पुत्र साकेतपुरी में कठिन मजदूरी करके पेट पालते थे तब एक दिन लघु भ्राता गुणधर वन में घास काटने को गया था, सो शीघ्रता से गट्ठा बांधकर घर चला आया और हंसिया (दरांत) वहीं भूल आया। घर आकर उसने भावज से भोजन माँगा। तब वह बोली–

लालजी! तुम हंसिया भूल आये हो, सो जल्दी जाकर ले आओ पीछे भोजन करना, अन्यथा हंसिया कोई ले जायेगा तो सब काम अटक जायेगा। बिना द्रव्य नया दांतड़ा कैसे आयेगा? यह सुनकर गुणधर तुरंत ही पुनः वन में गया सो देखा कि हंसिया पर बड़ा भारी साँप लिपट रहा है।

यह देखकर वह बहुत दुःखी हुआ कि दांतड़ा बिना लाए तो भोजन नहीं मिलेगा और दांतड़ा मिलना कठिन हो गया है तब वह विनीत भाव से सर्वज्ञ वीतराग प्रभु की स्तुति करने लगा सो उसके एकाग्रचित्त होकरस्तुति करने के कारण धरणेन्द्र का आसन हिला, उसने समझा कि अमुक स्थानों में पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के भक्त को कष्ट हो रहा है।

तब करुणा करके पद्मावती देवी को आज्ञा की कि तुम जाकर प्रभुभक्त गुणधर का दुःख निवारण करो। यह सुनकर पद्मावती देवी तुरंत वहाँ पहुँची और गुणधर से बोली–

हे पुत्र! तुम भय मत करो। यह सोने का दांतड़ा और रत्न का हार तथा रत्नमई पार्श्वनाथ प्रभु का बिंब भी ले जाओ, सो भक्तिभाव से पूजा करना, इससे तुम्हारा दुःख शोक दूर होगा।



गुणधर, देवी द्वारा प्रदत्त द्रव्य और जिनबिंब लेकर घर आया सो प्रथम तो उनके भाई ये देखकर डरे, कि कहीं यह चुराकर तो नहीं लाया है, क्योंकि ऐसा कौन सा पाप है जो भूखा नहीं करता है, परन्तु पीछे गणधर के मुख से सब वृत्तांत सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

इस प्रकार दिनों-दिन उनका कष्ट दूर होने लगा और थोड़े ही दिनों में वे बहुत धनी हो गये। पश्चात् उन्होंने एक बड़ा मंदिर बनवाया, प्रतिष्ठा कराई, चतुर्विध संघ को चारों प्रकार का यथायोग्य दान दिया और बड़ी प्रभावना की।

जब यह सब वार्ता राजा ने सुनी, तब उन्होंने गुणधर को बुलाकर सब वृत्तांत पूछा और अत्यन्त प्रसन्न हो अपनी परम सुन्दरी कन्या गुणधर को ब्याह दी तथा बहुत सा दान दहेज दिया। इस प्रकार बहुत वर्षों तक वे सातों भाई राज्यमान्य होकर सानंद वहीं रहे, पश्चात् माता-पिता का स्मरण करके अपने घर आये और माता-पिता से मिले। पश्चात् बहुत काल तक मनुष्योचित सुख भोगकर सन्यासपूर्वक मरणकर यथायोग्य स्वर्गादि गति को प्राप्त हुए और गुणधर उससे तीसरे भव में मोक्ष गये।

इस प्रकार व्रत के प्रभाव से मतिसागर सेठ का दरिद्र दूर हुआ और उत्तमोत्तम सुख भोगकर उत्तम-उत्तम गतियों को प्राप्त हुए। जो और भव्यजीव श्रद्धा सहित बारह वर्ष व्रतपूर्वक इस व्रत का पालन करेंगे,वे उत्तम गति पावेंगे।

**यह विधि रविव्रत फल लियो, मतिसागर गुणवान।**
**दुःख दरिद्र नशो सकल, अन्त लहो निरवान।।**

# मुकुटसप्तमी व्रत विधि एवं कथा

शीर्षमुकुट सप्तमी व्रत श्रावण सुदी सप्तमी को किया जाता है। इस दिन कन्याएँ या सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सौभाग्य की वृद्धि के लिए भगवान आदिनाथ पूजन, अभिषेक करती हैं तथा प्रोषधोपवास करती हुई धर्मध्यान से दिन व्यतीत करती हैं। इस व्रत में ॐ ह्रीं श्रीवृषभतीर्थंकराय नमः' इस मंत्र का या 'ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय नमः' इस मंत्र का जाप किया जाता है। रात को जागरण करना आवश्यक माना गया है? मुकुटसप्तमी व्रत में भगवान आदिनाथ और पार्श्वनाथ के नामों की एक हजार आठ जाप करनी चाहिए। इस व्रत में रात को वृहत्स्वयंभूस्तोत्र, संकटहरण विनती, दुःखहरण विनती, कल्याणमंदिर, भक्तामर आदि स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। अष्टमी के दिन अभिषेक, पूजन और सामायिक के पश्चात् एकाशन करना चाहिए। षष्टी से लेकर अष्टमी तक तीन दिनों का पूर्ण शीलव्रत पालन किया जाता है।

**कथा—** **पंच परमपद प्रणम करि, शारद मात नमाय।**
**मुकुटसप्तमी व्रत कथा, भाषा कहूँ बनाय।।**

जम्बूद्वीप के कुरुजांगल देश में हस्तिनापुर नगर है। वहाँ के राजा विजयसेन की रानी विजयावती से मुकुटशेखरी और विधिशेखरी नाम की दो कन्याएँ थीं। इन दोनों बहनों में परस्पर ऐसी प्रीति थी कि एक दूसरी के बिना क्षण भर भी नहीं रह सकती थी। निदान राजा ने ये दोनों कन्याएँ अयोध्या के राजपुत्र त्रिलोकमणि को ब्याह दी।

एक दिन बुद्धिसागर और सुबुद्धिसागर नाम के दो चारणऋषि आहार के निमित्त नगर में आये। सो राजा ने उन्हें विधिपूर्वक पड़गाहकर आहार दिया और धर्मोपदेश श्रवण करने के अनंतर राजा ने पूछा-हे नाथ! मेरी इन दोनों पुत्रियों में परस्पर इतना विशेष प्रेम होने का कारण क्या है?

तब श्री ऋषिराज बोले—इसी नगर में धनदत्त नामक एक सेठ था, उनके जिनवती नाम की एक कन्या थी और वहीं एक माली की वनमती कन्या भी थी सो इन दोनों कन्याओं ने मुनि के द्वारा धर्मोपदेश सुनकर मुकुटसप्तमी व्रत ग्रहण किया था। एक समय ये दोनों कन्याएँ उद्यान में खेल रही थीं (मनोरंजन कर रही थीं) कि इन्हें सर्प ने काट खाया सो नवकार मंत्र का आराधन करके देवी हुईं और वहाँ से चयकर तुम्हारी पुत्री हुई हैं। सो इनका यह स्नेह भवांतर से चला



आ रहा है। इस प्रकार भवांतर की कथा सुनकर दोनों कन्याओं ने प्रथम श्रावक के पंच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत इस प्रकार बारह व्रत लिए और पुनः मुकुटसप्तमी व्रत धारण किया। सो प्रतिवर्ष श्रावण सुदी सप्तमी को प्रोषध करतीं और 'ॐ ह्रीं श्री वृषभतीर्थंकराय नमः' इस मंत्र का जाप्य करतीं तथा अष्टद्रव्य से श्री जिनालय में जाकर भाव सहित जिनेन्द्र की पूजा करती थीं।

इस प्रकार यह व्रत उन्होंने सात वर्ष तक विधिपूर्वक किया पश्चात् विधिपूर्वक उद्यापन करके सात-सात उपकरण जिनालय में भेंट किये। इस प्रकार उन्होंने व्रत पूर्ण किया और अंत में समाधिमरण करके सोलहवें स्वर्ग में स्त्रीलिंग छेदकर इंद्र और प्रतीन्द्र हुईं। वहाँ पर देवोचित सुख भोगे और धर्मध्यान में विशेष समय बिताया।

पश्चात् वहाँ से चयकर ये दोनों इन्द्र-प्रतीन्द्र मनुष्य होकर कर्म काट कर मोक्ष जावेंगे। इस प्रकार सेठ जी तथा माली की कन्याओं ने व्रत (मुकुटसप्तमी) पालकर स्वर्गों के अपूर्व सुख भोगे। अब वहाँ से चयकर मनुष्य हो मोक्ष जावेंगे। धन्य है! जो और भव्य जीव, भाव सहित यह व्रत धारण करें, तो वे भी इसी प्रकार सुखों को प्राप्त होवेंगे।

**श्रेष्ठी अरु माली सुता, मुकुटसप्तमी व्रत धार।**
**भये इन्द्र प्रतिन्द्र द्वय, अरु हुई हैं भव पार।।**

# श्री पार्श्वनाथ व्रत

इस व्रत में 108 उपवास या एकाशन करना है। इसमें तिथि का कोई नियम नहीं है। अथवा प्रत्येक रविवार को भी यह व्रत कर सकते हैं।

व्रत के दिन भगवान पार्श्वनाथ की पूजा करके प्रथम समुच्चय जाप्य करना पुनः एक-एक मंत्र की जाप्य करना। 108 व्रतों में क्रम से एक-एक जाप्य करना है। यह मंत्र सर्व मनोरथों को सफल करने वाला है। धन की वृद्धि, पुत्र की प्राप्ति आदि जिस भावना को लेकर यह व्रत किया जावेगा, वही भावना पूर्ण होगी।

समुच्चय जाप्य–

**1. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं धरणेन्द्रपद्मावतीसेवित-चरणकमलाय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।**

अथवा

**2. ॐ ह्रीं अर्हं धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**

अथवा

**3. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।**

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगाष्टमहा-प्रातिहार्यलक्ष्मीसमन्विताय 'श्रीमान्' इति नाम विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरङ्ग-बहिरंगपरिग्रहविरहितदिगम्बर-मुद्रांकितमुनिगणस्वामिने 'निर्ग्रन्थराट्' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वज्ञादिगुणस्वरूपधनयुक्ताय 'स्वामी' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशसभारूपगणाधिपतये 'गणेश' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगत्स्वामिने 'विश्वनायक' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंस्वपुरुषार्थेन अर्हत्पदप्राप्ताय 'स्वयंभू' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषनामधर्मेण शोभिताय 'वृषभ' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितोपदेशेन समस्तजीवपोषणाय अनन्तगुण-धारकाय 'भर्ता' इति गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।8।।



ॐ ह्रीं अर्हं समस्तपदार्थस्वस्मिन् प्रतिबिंबीकरणाय 'विश्वात्मा' इति नाम-विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुनर्जन्मरहिताय 'अपुनर्भव' गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपदार्थावलोकिने 'सर्वदर्शी' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनस्वामिने 'जगन्नाथ' गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रनाय नमः।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मस्वरूपात्मने 'धर्मात्मा' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनहितकारिणे 'धर्मबान्धव' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मप्राणस्वरूपाय 'धर्ममूर्ति' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोत्कृष्टधर्मकारकाय 'महाधर्मकर्ता' इति नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमधर्मदात्रे 'धर्मप्रद' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टैश्वर्यसहिताय 'विभु' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शरसगंधवर्ण स्वरूपमूर्तगुणविरहिताय 'अमूर्त' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्कृष्टपुण्यस्वरूपाय 'अत्यन्त पुण्यात्मा' इति नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तविरहिताय 'अनन्त' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्यसहिताय 'अनन्तशक्तिमान्' इति नामधेयाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यजनशरणदानकुशलाय 'शरण्य' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं अखिललोकहितंकरस्वामिने 'विश्वलोकेश' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमकारुणिकगुणान्विताय 'दयामूर्ति' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं महत्पदप्रदानसमर्थमहाव्रतसहिताय 'महाव्रती' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वश्रेष्ठप्रशस्तवचनसहिताय 'वाग्मी' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं समवसरणसभायां चतुर्दिग्मुखप्रदर्शिताय 'चतुर्मुख' नामप्रसिद्धाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वकीयगुणवृद्धिंकराय 'ब्रह्मा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकर्मविप्रमुक्ताय 'निष्कर्मा' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वप्रकारेण पञ्चेन्द्रियमनोविजयिने 'निर्जितेन्द्रिय' गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामदेवमल्लविजयिने 'मारजित्' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसंसारमूलकारणमिथ्यात्वविजयिने 'जितमिथ्यात्व' नाम-विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं घातिकर्मविघातकाय 'कर्मघ्न' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युमहामल्लस्यान्तकरणकुशलाय 'यमान्तक' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वस्त्रधारकनिर्विकारनग्नमुद्रांकिताय 'दिगम्बर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानेन त्रिभुवनज्ञायकगुणान्विताय 'जगद्व्यापी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं अखिलभव्यजनहितकारिणे 'भव्यबंधु' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।38।।



ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यगौरवपदप्राप्ताय 'जगद्गुरु' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनमनोरथपूर्णकरणनिपुणाय 'कामद' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जयिमदनरिपुमर्दकाय 'कामहंता' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनजनातिप्रियसौंदर्यप्राप्ताय 'सुन्दर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनताल्हादनकराय 'आनन्ददायक' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुविजयिनामपि वर्याय 'जिनेन्द्र' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानुबंध्यादिकर्मविजयिस्वामिने 'जिनराट्' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं संपूर्णकेवलज्ञानापेक्षया सर्वत्र विश्वव्यापकाय 'विष्णु' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यपूज्यपरमपदे स्थिताय 'परमेष्ठी' इति नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनादिकालाद् ज्ञानस्वभावाय 'पुरातन' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानैकज्योतिर्मयाय 'ज्ञानज्योतिः' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमपावनस्वभावाय 'पूतात्मा' इति नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगत्प्रसिद्धहरिहरादिष्वपि श्रेष्ठाय 'महान्' इति नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं संसारिजन-इन्द्रियैरग्राह्याय 'सूक्ष्म' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्स्वामिने 'जगत्पति' नाम विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोदयीपरम-अहिंसामयी धर्मचक्रप्रवर्तकाय 'धर्मचक्रि' गुण-विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तशान्तस्वभावपरिणताय 'प्रशान्तात्मा' इति गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्माञ्जनलेपविरहिताय 'निर्लेप' गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यस्वभावापेक्षया कल– शरीरविरहिताय 'निष्कल' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युमहामल्लविजयिने 'अमर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धबुद्धस्वभाव-स्वात्मोपलब्धिस्वरूपाय 'सिद्ध' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिपूर्णकेवलज्ञानयुक्ताय 'बुद्ध' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्ख्यातिप्राप्तात्मने 'प्रसिद्धात्मा' इति गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंग-बहिरंगविभूतिधारकत्रिजगत्पूज्याय 'श्रीपति' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रसिद्धपुरुषाणामपि श्रेष्ठपदप्राप्ताय 'पुरुषोत्तम' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभाषामयीदिव्यध्वनिस्वामिने 'दिव्यभाषापति' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रकाशपुञ्जसुंदराय 'दिव्य' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वकीयशुद्धबुद्धनित्यनिरंजनस्वभावात् च्यवनविरहिताय 'अच्युत' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यैश्वर्यसमन्वितशतेन्द्रनम्रीभूतकरणसमर्थ-परमैश्वर्यविभूषिताय 'परमेश्वर' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंगबहिरंगतपश्चरणबलेन तपनशीलात्म-स्वभावाय 'महातपा' इति नामसहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।68।।



ॐ ह्रीं अर्हं कोटिसूर्यचन्द्रातिशायिप्रकाशसहिताय 'महातेजा' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तिमशुक्लध्यानपरिणतस्वभावाय 'महाध्यानी' इति गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यकर्मभावकर्मनोकर्मरूपाञ्जनविरहिताय 'निरञ्जन' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसामयीपरमधर्माम्नायकर्त्रे 'तीर्थकर्ता' इति नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं हेयोपादेयविचारविज्ञाय 'विचारज्ञ' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वपरभेदविज्ञानबलेन सर्वोत्तमज्ञानप्राप्ताय 'विवेकी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशसहस्रशीलगुणविभूषिताय 'शीलभूषण' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपरिमितमाहात्म्यसमन्विताय 'अनन्तमहिमा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभव्यजीवहितकरणसमर्थाय 'दक्ष' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरीरालंकरणकारणनानाभूषणविरहिताय 'निर्भूष' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुनिवारणहेतुनानाविधायुध-शस्त्रविरहिताय 'विगतायुध' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकज्ञायकाय 'सर्वज्ञ' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वचराचरजगदवलोकनकराय 'सर्वदृक्' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनहितैषिणे 'सार्व' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तसौम्यस्वभावाय 'सुसौम्यात्मा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुविजयिजिनानां मुख्याय 'जिनाग्रणी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपराजितादिचतुरशीतिलक्षमंत्रस्वरूपाय 'मंत्रमूर्ति' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदेवेषु श्रेष्ठमहापूजाप्राप्ताय 'महादेव' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्णिकायदेवानामुपरि श्रेष्ठपरमोत्तमदेव-पदप्राप्ताय 'देवदेव' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तस्वच्छपवित्रहृदयाय 'अतिनिर्मल' नामप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्यपूर्णीकृताय 'कृतकृत्य' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशमहादोषविरहिताय 'अतिनिर्दोष' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालकस्वरूपाय 'परंब्रह्मा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयगुणधारकाय 'महागुणी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य-परमौदारिकदेहसमन्विताय 'दिव्यदेह' विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयसौंदर्यगुणसमन्विताय 'महारूप' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वभावदृष्ट्या विनाशविरहिताय 'नित्य' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशक्तिमद्मृत्युमल्लविजयिने 'मृत्युंजय' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्यकरणसमर्थाय 'कृती' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपदप्रापणकारणसर्वयम-नियमसमन्विताय 'यमी' इति नाम-विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।98।।



ॐ ह्रीं अर्हं श्रेण्यारोहणसमर्थयतीनामीश्वराय 'यतीश्वर' नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्कर्मरूपजगत्सृष्टि-उपदेशकाय 'स्रष्टा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनभव्यजनस्तुतियोग्याय 'स्तुत्य' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंगकर्ममलबहिरंगशरीरादि-मलविरहितपवित्राय 'पूत' नाम-विशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विधदेवगणशतेन्द्रपूजिताय 'अमरार्चित' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं समस्तविद्यानां स्वामिने 'विद्येश' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोवचनकाययोगनिमित्तात्मप्रदेश-परिष्पंदनक्रियाविरहिताय 'निष्क्रिय' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशलक्षण-रत्नत्रय-दयामय-वस्तुस्वभावरूपधर्म-समन्विताय 'धर्मी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजातबालकवन्निर्विकाररूपधारकाय 'जातरूप' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनां सयोग्ययोगिकेवलिनामपि-श्रेष्ठतमाय भव्यभाक्तिकजनानां ईप्सितकेवलज्ञान-लक्ष्मीप्रदानकुशलाय 'विदांवर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।108।।